INCLUSIVE
NEWSROOMS
LGBTQIA+ मीडिया रेफ़रेंस गाइड

INCLUSIVE NEWSROOMS

குயர் சென்னை க்ரோனிக்கிள்ஸ்
Queer Chennai Chronicles

The NEWS Minute

queerbeat®

Supported by
Google News Initiative

इनक्लूसिव न्यूज़रूम्स

© क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स, द न्यूज़ मिनट और क्वीयरबीट

पहला संस्करण: जून 2023
प्रकाशन: क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स और द न्यूज़ मिनट
समर्थन: गूगल न्यूज़ इनिशिएटिव
ईमेल आईडी: news.inq@gmail.com
वेबसाइट: news-inq.com
कवर डिज़ाइन: वाई
पुस्तक लेआउट: बर्च इंडिया

इन्क्लूसिव न्यूज़रूम्स लीड्स:
द न्यूज़ मिनट:
रागमालिका कार्तिकेयन, वरिष्ठ लीड - श्रोता राजस्व और प्रयोग
इन्क्लूसिव न्यूज़रूम्स - प्रोजेक्ट लीड

क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स:
सी मौली, सह-संस्थापक - क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स
इन्क्लूसिव न्यूज़रूम्स - प्रोजेक्ट लीड

क्वीयरबीट:
अंकुर पालीवाल, संस्थापक - क्वीयरबीट
इन्क्लूसिव न्यूज़रूम्स - प्रोजेक्ट लीड

गिरीश, संपादक - क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स
इन्क्लूसिव न्यूज़रूम्स - क्रिएटिव लीड

सेंथिल, कार्यक्रम निदेशक - क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स
इन्क्लूसिव न्यूज़रूम्स - कोऑर्डिनेटर

विषय सूची

- 6 'क' 5
- खबरों में क्वीयर नज़रिया : द न्यूज़ मिनट का एक नोट 7
- भाषा को क्वीयर बनाना : क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स द्वारा एक नोट 9
- समावेशी मीडिया की और एक क़दम: क्वीयरबीट का नोट 11
- प्रस्तावना 12

1. सकारात्मक बदलाव के लिए बेहतर कहानियाँ कहनी होंगी 13
2. LGBTQIA+ शब्दों की शब्दावली 15

   भाग 1: सेक्स से संबंधित शब्द
   भाग 2: लिंग से संबंधित शब्द
   भाग 3: यौनिकता से संबंधित शब्द
   भाग 4: सामूहिक शब्द
   भाग 5: LGBTQIA+ समुदायों द्वारा उपयोग किए जाने वाले अन्य शब्द
   भाग 6: पारम्परिक/सांस्कृतिक शब्द

3. पत्रकारों के लिए मूल बातें 23
4. संपादकों के लिए मूल बातें 26
5. विचारात्मक लेखों का लेखन और कमीशनिंग 29
6. फ़ोटो और वीडियो 32
7. प्राइड और अन्य LGBTQIA+ आयोजन 36

8. समाचार और समसामयिक 39

9. स्वास्थ्य पत्रकारिता - क्वीयर व्यक्तियों के स्वास्थ्य के बारे में हानिकारक बयानबाज़ी को दूर करना 42

10. स्वास्थ्य 47

11. मानसिक स्वास्थ्य और आत्महत्या 50

12. अपराध 53

13. कानून और अदालतें 56

14. राजनीति 61

15. शिक्षा 67

16. विज्ञान क्षेत्र में क्वीयर समुदाय से घृणा और LGBTQIA+ व्यक्तियों के प्रतिनिधित्व की कमी 72

17. विज्ञान 73

18. मनोरंजन 75

19. ट्रांसजेंडर एथलीट, अनिश्चित विज्ञान और टेस्टोस्टेरोन का डायनासोर 77

20. खेल 83

21. व्यवसाय 85

22. आस्था 89

□ श्रेय 92

6 'क'

क्या है यह गाइड?

यह एक मीडिया रेफ़रेंस गाइड है उन पत्रकारों और मीडिया संस्थाओं के लिए जो LGBTQIA+ समुदायों, व्यक्तियों और मुद्दों के बारे में रिपोर्टिंग, लेखन या संपादन करते हैं। इस किताब में एक शब्दावली है जो बताती है किन शब्दों का प्रयोग करना उचित है और किनका नहीं। इस गाइड में विभिन्न बीट्स पर कुछ अध्याय भी हैं। साथ ही LGBTQIA+ व्यक्तियों, समुदायों और मुद्दों के बारे में रिपोर्टिंग करते समय, संपादन करते समय, विशेष लेख लिखते समय अथवा फ़ोटोग्राफ़ी या विडियोग्राफी करते समय आपको क्या करना चाहिए, इस बार में आसान भाषा में जानकारी है।

यह LGBTQIA+ मीडिया रेफरेंस गाइड द न्यूज़ मिनट और क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स द्वारा तैयार की गई है और गूगल न्यूज़ इनिशिएटिव ने इसे समर्थन दिया है। क्वीयरबीट ने इस गाइड का हिंदी में अनुवाद किया है।

हम यह **क्यों** कर रहे हैं ?

भारत में समाचार मीडिया में LGBTQIA+ व्यक्तियों का चित्रण अक्सर भ्रामक , अपमानजनक, अनभिज्ञ या ग़लत नज़रिए से किया जाता है। हालांकि, जब LGBTQIA+ लोग पत्रकारों को उनकी ग़लतियों के बारे में बताते हैं, तो सामान्य प्रतिक्रिया यह मिलती है कि उन्हें नहीं पता था कि उपयोग करने के लिए सही शब्द क्या हैं अथवा उन्हें यह एहसास नहीं था कि कुछ विवरण/चित्रण समस्याजनक भी हो सकते हैं।

हमने यह गाइड इसलिए बनाई है ताकि जो पत्रकार LGBTQIA+ समुदायों, व्यक्तियों और मुद्दों का प्रतिनिधित्व सही तरीक़े से करना चाहते हैं, उनके पास एक ऐसा संसाधन हो जो उनकी मदद कर सके।

यह गाइड **किन** व्यक्तियों के लिए लाभकारी है ?

कोई भी रिपोर्टर, लेखक, संपादक, फ़ोटो पत्रकार, वीडियो पत्रकार, या निर्माता, जो LGBTQIA+ समुदायों, व्यक्तियों, या मुद्दों पर कहानी लिखना/संपादन करना या चित्रण करना चाहते हैं वे इस गाइड का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह कोई अकादमिक शोध नहीं है बल्कि पत्रकारों के लिए एक व्यावहारिक गाइड है, और इसे इसी तरह ही लिखा गया है, बिना अल्पविराम कोई लंबे अनुच्छेद नहीं, और ज़्यादा से ज़्यादा सूचियाँ दी गई हैं।

आप इसका उपयोग **कब** कर सकते हैं?

मान लीजिए कि आप एक विरोध प्रदर्शन में हैं, और किसी क्वीयर व्यक्ति की तस्वीर खींचने की नैतिकता के बारे में विचार कर रहे हैं। आप स्वास्थ्य सेवा के बारे में एक ख़बर लिख रहे हैं पर आपको मालूम नहीं है कि संवेदनशील प्रश्न कैसे पूछें। आप एक अपराध की ख़बर का संपादन कर रहे हैं जहाँ एक क्वीयर व्यक्ति अपराधी है और आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि रिपोर्ट संवेदनशील हो, सनसनीखेज़ नहीं। हो सकता है कि आपको किसी स्वतंत्र पत्रकार से एक लेख के लिए आग्रह आया हो पर आप यह तय न कर पा रहें हो कि आपको इसे स्वीकार करना चाहिए या नहीं।

संक्षेप में, यह गाइड आपके काम और उसमें आने वाली दुविधाओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है। आप इसका उपयोग तब कर सकते हैं जब आपके पास LGBTQIA+ मुद्दों को कवर करने के बारे में कोई प्रश्न हो पर यह मालूम न हो कि किससे सलाह ली जाए।

इसके रचनाकारों की वैधता **क्या** है?

क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स (QCC) एक स्वतंत्र प्रकाशन एवं साहित्यिक मंच है। QCC की शुरुआत LGBTQIA+ लेखकों, अनुवादकों और रचनाकारों को प्रोत्साहित करने एवं मौजूदा साहित्यिक परिवेश और मीडिया रिपोर्टिंग को क्वीयर समावेशी बनाने के उद्देश्य से की गई थी। QCC भारत के पहले क्वीयर लिट्रेचर फेस्ट का आयोजक है, जो क्वीयर साहित्यकारों और क्वीयर समुदाय के 'साथी' या 'allies' को एक जगह लाता है। QCC विभिन्न मीडिया कम्पनियों और संस्थाओं के साथ रिपोर्टिंग के लिए समावेशी दिशानिर्देश बनाने, कार्यस्थल समावेशन रणनीतियां तैयार करने और अमल प्रक्रियाओं पर भी काम करता है।

द न्यूज़ मिनट पिछले सात सालों से देश में LGBTQIA+ मुद्दों पर संवेदनशील तरीके से रिपोर्टिंग करने में सबसे आगे रहा है। संगठन में एक उच्च संपादकीय पद पर एक क्वीयर व्यक्ति कार्यरत है, और इस संगठन ने LGBTQIA+ जीवनानुभवों और अधिकारों पर रिपोर्टिंग और संपादन के लिए सर्वोत्तम शैलियों को सावधानी से विकसित किया है। द न्यूज़ मिनट की संपादकीय टीम देश की सबसे विविध मीडिया टीमों में से एक है, और इनकी संपादकीय नीतियों में से एक है उन आवाज़ों को मंच देना जिन्हें समाज नज़रअंदाज़ करता है।

गूगल न्यूज़ इनिशीएटिव (GNI) प्रकाशकों और पत्रकारों के साथ मिलकर सतत, विविध और नवीन समाचार तंत्र बनाने का काम करता है। GNI मीडिया जगत की उन अग्रणी प्रतिभाओं के साथ साझेदारी करता है जो पत्रकारिता के सामने आने वाले सबसे गंभीर मुद्दों को सुलझा रहे हैं। हमारा एक ही मक़सद है: एक विविध, अभिनव और समावेशी समुदाय विकसित करना ताकि समाचार का भविष्य मज़बूत बने।

इस गाइड को लिखने में जिन लोगों ने योगदान दिया है उनमें से अधिकांश क्वीयर हैं, और कई पत्रकार भी हैं। हम भारत में LGBTQIA+ समुदायों की चिंताओं को समझते हैं, और हम यह भी जानते हैं कि न्यूज़रूम कैसे काम करते हैं और पत्रकारों को रोज़ाना किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

आप हमें कहाँ सम्पर्क कर सकते हैं?

ईमेल: news.inq@gmail.com

इंस्टाग्राम: @news.inq

खबरों में क्वीयर नज़रिया : द न्यूज़ मिनट का एक नोट

ऐसे समय में जब भारतीय अंग्रेज़ी समाचार उद्योग अत्यधिक केंद्रीकृत था और अधिकांश न्यूज़रूम दिल्ली या मुंबई से संचालित थे, द न्यूज़ मिनट (TNM) को दक्षिण भारत से दक्षिण भारत को कवर करने के मिशन के साथ लॉन्च किया गया था। TNM के संस्थापकों को लगा कि एक ऐसे मंच की ज़रूरत है जो दक्षिण भारत के पांच राज्यों - आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना - के लोगों से जुड़ा हो। पिछले नौ वर्षों में TNM एक नारीवादी समाचार संगठन के रूप में विकसित हुआ है जो जेंडर, यौनिकता और जाति पर संवेदनशील पत्रकारिता करता है। हम ऐसा करने में इसलिए सक्षम रहे हैं क्योंकि हम एक समावेशी न्यूज़रूम में विश्वास रखते हैं - एक ऐसा न्यूज़रूम जिसमें विविध सोच के साथ ही सत्ता से सच बोलने का जज़्बा हो। द न्यूज़ मिनट् के उच्च पदों पर दलित, मुस्लिम, ईसाई और क्वीयर व्यक्ति हैं जो संस्थापकों के साथ मिल कर स्वतंत्र और सशक्त मीडिया के मिशन पर काम कर रहे हैं।

2014 में हमारे लॉन्च के बाद से, द न्यूज़ मिनट LGBTQIA+ मुद्दों पर संवेदनशील कवरेज कर रहा है। 2016 में, हमने 'लेट्स टॉक LGBTQIA+' नामक एक श्रृंखला शुरू की जो क्वीयर भारतीयों की आवाज़ों और कहानियों पर केंद्रित थी। इस श्रृंखला ने जेंडर के प्रति संवेदनशील पत्रकारिता के लिए दिया जाने वाला 'लाडली अवार्ड' भी जीता। 2017 तक आते आते हमने अपनी टीम के लिए LGBTQIA+ मुद्दों पर रिपोर्टिंग के बारे में एक स्टाइल गाइड तैयार की ताकि न्यूज़ रूम में प्रवेश करने वाला हर नया व्यक्ति हमारे मूल्यों को समझे, और सही भाषा और दृष्टिकोण को अपनाए।

प्रस्तुत गाइड का विचार पहली बार 2021 में तब आया जब क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स (QCC) ने चेन्नई क्वीयर लिटफेस्ट आयोजित किया। यह आयोजन कोविड महामारी के कारण ऑनलाइन हुआ था, और TNM के रागामलिका कार्तिकेयन एक पैनल में थे जो कि क्वीयर मुद्दों पर मीडिया रिपोर्टिंग के बारे में चर्चा कर रहा था। उन्होंने LGBTQIA+ को कवर करने के TNM के दिशानिर्देशों के बारे में बात की। चर्चा में इस बात पर भी चिंता जताई गयी कि समाचार संगठनों में आम तौर पर क्वीयर लोगों को कवर करने के लिए कोई स्टाइल गाइड नहीं थी।

इस मुद्दे पर TNM और QCC ने साथ मिल कर काम करने की ठानी और अंग्रेज़ी और तमिल में गाइड तैयार करने के बारे में सोचा। इसमें शामिल हो सकने वाले विषयों को रेखांकित किया गया और यह निष्कर्ष निकला कि पहला कदम एक शब्दावली तैयार करना होगा।

उसी समय मद्रास उच्च न्यायालय एक समलैंगिक जोड़े के मामले की सुनवाई कर रहा था जो अपने परिवार वालों से सुरक्षा की मांग कर रहे थे। अदालत ने सुनवाई के दौरान LGBTQIA+ समुदाय की मदद के लिए कई प्रगतिशील आदेश जारी

किये - इनमें तमिलनाडु राज्य सरकार के लिए यह निर्देश भी शामिल था कि वो तमिल में उन गरिमापूर्ण शब्दों की एक सूची तैयार करे जिनका मीडिया उपयोग कर सके। हमने पहले ही ऐसी शब्दावली पर काम शुरू कर दिया था पर यह आदेश आते ही इस काम को और तेज़ कर दिया। हमने दूसरे सामुदायिक संगठनों और व्यक्तियों से सहयोग लिया और अंग्रेज़ी और तमिल में शब्दावली तैयार कर अदालत को भेजी। इस कोशिश का परिणाम यह हुआ कि तमिलनाडु सरकार ने राज्य राजपत्र में एक शब्दावली प्रकाशित की जिसका 90% हिस्सा वही है जो हम लोग –LGBTQIA+ समुदाय– लेकर आए हैं।

इसी बीच हमें गूगल न्यूज़ इनिशीएटिव (GNI) सहित और भी भागीदार मिले, और इसी वजह से हमारी महत्वाकांक्षाएँ और भी बढ़ गईं। अंग्रेज़ी और तमिल में एक मीडिया गाइड की योजना तो थी ही, पर अब कन्नड़, तेलुगु, मराठी, और हिंदी में भी काम शुरू हुआ। इसके अलावा, देश भर में तीन भाषाओं में प्रशिक्षण सत्र और क्वीयर जीवन की अच्छी पत्रकारिता के लिए फैलोशिप भी, अब हम वह सब कर रहे हैं जिस से एक बेहतर मीडिया तंत्र का निर्माण हो सके।

जब क्वीयर व्यक्ति पत्रकारों को उनके द्वारा LGBTQIA+ मुद्दों पर की गयी रिपोर्टिंग में ग़लतियों के बारे में बताते हैं, तो ज़्यादातर यही सुनने को मिलता है कि - "हमें नहीं पता था।" "हमें नहीं पता था कि सही भाषा क्या होनी चाहिए।" "हमें नहीं पता था कि इस ख़बर को और संवेदनशील कैसे बना सकते थे।" "हमने यह ग़लती जानबूझ कर नहीं की और हम सीखना चाहते हैं।"

तो यह रही वह गाइड जिसे आप अब इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसी गाइड जो आपको नया सीखने और पुराना ग़लत भुलाने में मदद करेगी। इस गाइड का उद्देश्य पत्रकारों और मीडिया संगठनों को LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों के लिए सही भाषा उपयोग करने के बारे में बताना है। इसमें अलग-अलग अध्याय पत्रकारों की अलग-अलग भूमिकाओं से सरोकार रखते हैं। सामान्य समाचार रिपोर्टिंग और संपादन से लेकर विशेष लेख लिखने तक, खेल, अपराध, मनोरंजन, व्यवसाय, राजनीति, शिक्षा आदि क्षेत्रों को कवर करते हुए गाइड में 20 से अधिक अध्याय हैं और बुलेटेड सूचियाँ भी हैं जिन्हें पत्रकार किसी ख़बर पर काम करते समय जल्दी और आसानी से देख सकते हैं।

भाषा को क्वीयर बनाना : क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स द्वारा एक नोट

क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स (QCC) एक स्वतंत्र प्रकाशन और साहित्यिक मंच है। QCC की शुरुआत 2017 में LGBTQIA+ लेखकों और अनुवादकों को उभारने और मौजूदा साहित्यिक स्थानों और मीडिया संस्थानों को समावेशी बनाने के उद्देश्य से की गई थी। इन वर्षों में, QCC ने अपनी स्वाभाविक रफ़्तार चलते हुए काफ़ी ऐसे क़दम उठाए जो इस दृष्टिकोण और मिशन को आगे बढ़ाते रहे। हमने एक स्वतंत्र प्रकाशन के रूप में शुरुआत की और बातचीत आगे बढ़ाने के लिए भारत के पहले क्वीयर साहित्य उत्सव - चेन्नई क्वीयर लिटफेस्ट - का 2018 में आयोजन किया।

हमने देखा है कि कई क्वीयर लोग मीडिया के साथ इसलिए बातचीत करते हैं ताकि हमारे समुदाय की राय, हक़ों की माँग और सोच आम जनता और सरकार तक पहुंच पाए। हालांकि कई LGBTQIA+ व्यक्ति यह नहीं जानते कि मीडिया कैसे काम करता है। कई बार हमारे कहे को मीडिया में ग़लत तरीके से पेश किया जाता है या हमारे अनुभवों को पूर्वनिर्धारित दिशा में ढालने के लिए तोड़ मरोड़ कर सीमित कर दिया जाता है। इसी वजह से समुदाय के काफ़ी लोगों ने मीडिया से बातचीत करना छोड़ दिया है क्योंकि पत्रकार और मीडिया संस्थान हमारे प्रयासों के बावजूद वही ग़लतियाँ दोहराते रहते हैं और ऐसी घटनाओं से हमें और अधिक पीड़ा होती है।

मीडिया में बड़े पैमाने पर LGBTQIA+ समुदाय और पहचानों के बारे में अज्ञानता है और कई सकारात्मक और नकारात्मक धारणाएँ हैं। कई बार हमारे बारे में केवल पुरानी, घिसी पिटी सोच ही समाचार के रूप में पेश की जाती हैं - और, जैसा कि अधिकांश क्वीयर व्यक्ति आपको बता देंगे ये धारणाएँ सच से बहुत दूर हैं। इससे हमारे समुदायों की विविधता नज़रंदाज होती है। जब पत्रकार हमें किसी ख़बर या लेख के लिए फ़ोन करते हैं, तो हमारे मन में हमेशा एक संदेह रहता है कि जो उन्हें लिखना है वो पहले ही लिख चुके हैं, और केवल अपने लेखों को और विश्वसनीय बनाने के लिए हमारे कथनों का उपयोग करना चाहते हैं।

इससे इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि पिछले कुछ वर्षों में क्वीयर जीवन के बारे में मीडिया रिपोर्टिंग में काफ़ी सकारात्मक बदलाव आया है। पर यह और भी बहुत बेहतर हो सकता है- विशेषकर तब जब पत्रकारों और मीडिया संस्थानों को एक संतुलन बनाना पड़ता है - संवेदनशील रिपोर्टिंग और उन व्यवसायिक जरूरतों के बीच जिसमें पाठकों और दर्शकों का ध्यान खींचना ज़रूरी है।

QCC के नेतृत्व में विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले क्वीयर व्यक्ति हैं - हम साहित्य, कला, विज्ञापन, टेक्नॉलजी और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों से आए हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि QCC टीम के प्रत्येक सदस्य के पास

ज़मीनी स्तर पर क्वीयर समुदायों के साथ काम करने का एक दशक से अधिक का अनुभव है। जब हमने 2018 में पहला क्वीयर साहित्य उत्सव डिज़ाइन किया, तो एक पैनल क्वीयर मुद्दों की मीडिया रिपोर्टिंग पर भी केंद्रित था। हमारा मानना है कि मीडिया क्वीयर जीवन को समाज में बड़े पैमाने पर परिभाषित करने और उसका वर्णन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्षों से QCC का ध्यान क्वीयर जीवन की कहानियों को उजागर करने पर रहा है जो सामाजिक संस्थाओं की रिपोर्टों और सनसनीखेज़ ख़बरों से परे हो और हमारे जीवन और व्यक्तित्व के बारे में ग़लत सूचनाओं से भरा न हो। 2021 के चेन्नई क्वीयर लिटफेस्ट के संस्करण में हमारे पास समाचार रिपोर्टिंग पर एक और पैनल था। इस पैनल ने अंतत: हमें मीडिया के साथ अपने काम को औपचारिक करने के लिए प्रेरित किया जो अब इस LGBTQIA+ समावेशी न्यूज़रूम मीडिया गाइड के रूप में आपके सामने प्रस्तुत है। यह हमारे लिए एक मौका भी था अपनी तमिल क्वीयर शब्दावली का विस्तार करने का जिसका एक रूप हमने अपने द्विभाषी वेबसाइट www.paalputhumai.com पर डाला हुआ था।

साल 2022 में मद्रास उच्च न्यायालय ने द न्यूज़ मिनट (TNM) और अन्य समुदायों और व्यक्तियों के साथ बनी QCC शब्दावली का एस सुषमा बनाम पुलिस कमिश्नर केस (सुषमा-सीमा केस) में हवाला दिया। सुनवाई के दौरान न्यायालय ने तमिलनाडु राज्य सरकार को इस शब्दावली का इस्तेमाल कर तमिल मीडिया के लिए LGBTQIA+ शब्दों की एक सूची जारी करने को कहा। राज्य सरकार ने इसका पालन करते हुए 2022 में एक शब्दावली का प्रकाशन राज्य राजपत्र में किया। इस सूची का लगभग 90% हिस्सा QCC-TNM की सामुदायिक शब्दावली से लिया गया था।

इस घटनाक्रम ने हमें LGBTQIA+ मीडिया गाइड पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया। यह QCC और TNM की अपनी स्वैच्छिक पहल थी - क्वीयर व्यक्तियों द्वारा की गयी ऐसी पहल जो QCC के ज़मीनी स्तर पर किए काम के ज्ञान और TNM के मीडिया अनुभव को एक साथ लाता है, एक ऐसे संसाधन के लिए जो भारत में संपूर्ण मीडिया तंत्र की मदद करेगा।

हमें यह मीडिया गाइड पेश करते हुए बहुत खुशी हो रही है। यह समावेशी दुनिया बनाने की हमारी यात्रा में एक मील का पत्थर है। इस गाइड के माध्यम से हम न्यूज़रूम में बदलाव लाने की उम्मीद करते हैं।

क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स की शुरुआत पूरे तमिलनाडु और पुडुचेरी से आए लोगों के साथ चेन्नई में हुई थी। जब हमने शुरुआत की तो हमारा ध्यान तमिल और अंग्रेज़ी साहित्य और मीडिया पर था। समय के साथ, तमिल में हमारा काम भारत और उसके बाहर रह रहे तमिल भाषी क्वीयर व्यक्तियों तक भी पहुंचा है। इस मीडिया गाइड के साथ हम अपनी पहुंच को चार अन्य भारतीय भाषाओं - कन्नड़, तेलुगु, मराठी और हिंदी- में बढ़ा रहे हैं।

और यह यात्रा जल्द ही और अधिक भाषाओं में जारी रहेगी।

मीडिया को समावेशी बनाने की एक पहल: क्वीयरबीट का नोट

सार्वजनिक मानसिकता को आकार देने में मीडिया, विशेषकर न्यूज़रूम, की भूमिका को कम नहीं आंका जा सकता। क्या कवर किया जाता है, किसकी कहानियाँ बताई जाती हैं, और उन्हें कैसे बताया जाता है, इससे जनता को यह समझने में मदद मिलती है कि क्या महत्वपूर्ण है और क्यों उन्हें इसकी परवाह करनी चाहिए। लेकिन ऐतिहासिक रूप से, अधिकांश भारतीय मीडिया ने कई हाशिए पर रहने वाले समुदायों की पहचान, कहानियों और मुद्दों को नजरअंदाज किया है, कम रिपोर्ट किया है और यहां तक कि गलत रिपोर्ट भी किया है। ऐसे ही समुदायों में से एक LGBTQIA+ समुदाय है।

मीडिया में LGBTQIA+ लोगों के कम प्रतिनिधित्व, गलत वर्णन और उनके बारे में अमानवीय भाषा ने समाज के नज़रिए को काफ़ी हद तक प्रभावित किया है। क्वीयर समुदाय के प्रति सामाजिक पूर्वाग्रहों को ठीक करने में मीडिया द्वारा ईमानदार प्रयासों की भी कमी रही है। इस सबने न केवल क्वीयर लोगों बल्कि बड़े स्तर पर समाज को भी नुकसान पहुंचाया है।

हमें इसे बदलना होगा और यह मीडिया गाइड इसी दिशा में एक प्रयास है। यह इनक्लूसिव न्यूज़रूम्स नामक एक बड़े प्रोजेक्ट का हिस्सा है जिसके अंतर्गत भारतीय मीडिया संगठनों को, चाहे वे किसी भी भाषा और क्षेत्र में काम करते हों, अपनी रिपोर्टिंग, संपादकीय नीतियों और कार्यस्थलों में LGBTQIA+ लोगों को शामिल करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। क्वीयरबीट और इनक्लूसिव न्यूज़रूम्स का उद्देश्य है रचनात्मक कहानियों द्वारा भारत में LGBTQIA+ समुदाय के बारे में सार्वजनिक सोच को सकारात्मक रूप से बदला जाए। हम द न्यूज़ मिनट और क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स के साथ इनक्लूसिव न्यूज़रूम्स का हिस्सा बनने के लिए उत्साहित है।

गाइड में हिंदी में LGBTQIA+ शब्दों की एक शब्दावली भी शामिल है, जिसे हमने हिंदी बोलने वाले या हिंदी के विशेषज्ञ क्वीयर लोगों के द्वारा दिए गए परामर्शों के आधार पर तैयार किया है। इसमें दिए गए विस्तृत अध्याय अपराध, शिक्षा, स्वास्थ्य और खेल जैसे विभिन्न पहलुओं को क्वीयर दृष्टिकोण से कवर करने के बारे में जानकारी देते हैं।

हमें उम्मीद है कि मीडिया न्यूज़रूम इस गाइड के साथ जुड़ेंगे और अपने कार्यस्थलों पर इस बारे में चर्चा करेंगे ताकि LGBTQIA+ समुदायों को सटीक रूप से कवर करना उनके कार्यालय सिधांतों का हिस्सा बन जाए। हम मिलकर ऐसी कहानियाँ बनाएँ जिनमें विविध पृष्ठभूमि के क्वीयर लोग स्वयं को देख सकें। ऐसी कहानियाँ जो समाज को LGBTQIA+ लोगों को समझने और उन्हें समान रूप से देखने में मदद करती हों।

यह भारतीय मीडिया तंत्र को LGBTQIA+ समावेशी बनाने की हमारी यात्रा की शुरुआत है। हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ चलें।

प्रस्तावना

शब्द मायने रखते हैं, पर उन्हें कौन बोल रहा है यह और भी ज़्यादा मायने रखता है।

हमें स्कूल में बच्चों कि एक अंग्रेज़ी कविता सिखाई गई थी - 'लाठी और पत्थर मेरी हड्डियाँ तोड़ सकते हैं, लेकिन शब्द मुझे कभी चोट नहीं पहुँचा सकते।' पर अब सोचने पर लगता है, इससे बड़ा झूठ नहीं हो सकता। यह कहावत, जो शायद किसी सिस जेंडर, उच्च वर्ग के श्वेत पुरुष ने लिखी होगी, शब्दों के किसी व्यक्ति के मानस पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव को बहुत कम आँकती है। उदाहरण के लिए, स्कूल में छात्रों द्वारा दूसरे बच्चों पर बदमाशी या बुलिंग अक्सर तानों और गाली-गलौज से शुरू होती है और कुछ मामलों में शारीरिक उत्पीड़न तक पहुँच जाती है।

यह बदमाशी, अलग अलग रूप में, खेल के मैदान से ले कर वास्तविक दुनिया तक फैली हुई है। यहाँ तक कि अच्छे इरादे रखने वाले संपादक और पत्रकार भी अक्सर ऐसी भाषा का उपयोग कर जाते हैं जो किसी क्वीयर व्यक्ति के लिए असंवेदनशील या अपमानजनक हो सकती है। यह किसी को चोट पहुंचाने की इच्छा से नहीं, बल्कि कई बार क्वीयर इंसान के जीवन के बारे में कम जागरूकता होने के कारण होता है।

ग़लत भाषा, जो किसी ऐसे व्यक्ति के लिए सामान्य हो सकती है जो भेदभाव के रूपक को नहीं समझता, जब आम बातचीत में प्रवेश करती है तो कमज़ोर वर्गों, विशेष रूप से बच्चों को बहुत क्षति पहुंचा सकती है। इसलिए यह गाइड बहुत ज़रूरी है। यह उन लोगों की मदद करेगी जो ईमानदार और सभ्य रिपोर्टिंग करना चाहते हैं और ऐसी भाषा का उपयोग करना चाहते हैं जो समाज के किसी भी सदस्य के जीवन को कम न आंके।

जब बात विशेष लेखों की आती है तो कौन उन्हें लिख रहा है और लेखक के ज्ञान और संवेदनशीलता की गहराई क्या है, इसके बारे में जानकारी होना ज़रूरी है। हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहाँ टेलीविज़न बड़े स्तर पर खोखली राय उगलता है। टीआरपी के लिए ज़रूरी मान ली गयी ऊँची, ध्रुवीए आवाज़ों के बीच किसी विशेषज्ञ के सहज ज्ञान को खामोश कर दिया जाता है। अख़बार और पत्रिकाओं के गंभीर और चिंतनशील लेखों को टीवी की तीखी बहस की नकल करने से बचना चाहिए और यह गाइड उसी दिशा में एक क़दम है। केवल एक विचार को बढ़ावा देने के बजाय हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि जो भी विचार हो उसे ईमानदारी से पेश किया जाए।

यह गाइड केवल भाषा के बारे में ही नहीं, एक रवैये के बारे में भी है। एक प्रतिबद्धता पारस्परिक सम्मान और गरिमा के लिए जो हमारे संविधान की मांग और समाज का हक है। मुझे आशा है कि इस गाइड का उपयोग न केवल ज़िम्मेदार पत्रकारिता को दर्शाएगा बल्कि यह एक प्रमाण भी होगा कि वक्ता, लेखक या संपादक समानता के उस सुनहरे धागे में विश्वास रखते हैं जो हम सभी को बांधता है।

सौरभ किरपाल
वक़ील, भारत का सर्वोच्च न्यायालय

सकारात्मक बदलाव के लिए बेहतर कहानियाँ कहनी होंगी

डॉ. अक्सा शेख

कहानियों में दुनिया बदलने की ताक़त होती है - चाहे वो बदलाव बेहतर भविष्य के लिए हो या बदतर के लिए। कहानियाँ दुर्व्यवहार और अन्याय को उजागर कर सकती हैं या फिर वे कट्टरता और अन्याय फैलाने वाले हाथों को और मज़बूत कर सकती हैं। जब LGBTQIA+ जैसे ग़लत समझे जाने वाले और वंचित समुदायों की बात आती है तो ऐतिहासिक रूप से कहानियों ने उन्हें हाशिए पर धकेलने में एक ख़ास भूमिका निभाई है, पर साथ ही साथ कुछ और कहानियों ने अन्याय, अधिकारों की लड़ाई और उनकी सफलताओं को भी उजागर किया है। हालाँकि कहानियाँ हर कोई सुनाता है, पर मीडिया की कहानियाँ अपनी पहुंच और विश्वसनीयता के कारण अधिक प्रभाव डालती है। इसी वजह से मीडिया के पास ज़्यादा ताक़त है पर साथ ही उस पर उतनी ही ज़्यादा ज़िम्मेदारी भी है।

सोशल मीडिया की वजह से मीडिया और कहानियों के बनाने और साझा करने के तरीक़ों में एक बड़ा परिवर्तन आया है। हम किस तरह से इन समाचारों और कहानियों का उपभोग करते हैं और इनमें चित्रित लोगों से जुड़ते हैं इसमें भी बदलाव आया है। सोशल मीडिया बहुत प्रभावी और शक्तिशाली माध्यम होने के साथ साथ ग़लत सूचना और दुष्प्रचार का स्रोत भी हो सकता है और यह दुष्प्रचार काफ़ी देर तक बना रह सकता है। चूंकि प्रकाशित मीडिया पर अभी भी लोगों का विश्वास है, इसलिए ऐसी किसी भी ग़लत सूचना की पहुंच और प्रभाव काफ़ी गहन होने की सम्भावना रहती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के आगमन ने भी मीडिया के लिए नयी चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं - झूठे समाचार, डीप फ़ेक्स (कृत्रिम छवियों और वीडीयो का इस्तेमाल) और प्रामाणिकता की कमी जैसे खतरे बड़े पैमाने पर मंडरा रहे हैं।

ग़ौरतलब है कि क्वीयर जीवन के बारे में बातचीत अब गुप्त और निजी स्थानों से निकल कर हमारे घरों में प्रवेश कर गई है, जैसा कि सुप्रीम कोर्ट में विवाह समानता की याचिकाओं पर विस्तार से हुई सुनवाई के दौरान हुआ। सुनवाई में क्वीयर समुदाय के प्रति नफ़रती आवाज़ों का शोर इस बात का सबूत है कि किसी भी विषय पर बातचीत हमेशा सकारात्मक और सुघड़ नहीं होती। ओटीटी शो से लेकर फिल्मों, अखबारों, पत्रिकाओं तक में ट्रांस और क्वीयर जिंदगियों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। पर क्वीयर मुद्दों पर सिर्फ़ ज़्यादा मात्रा में प्रकाशन हमेशा वांछित परिणाम नहीं देता, इसे प्रामाणिकता, संवेदनशीलता और समावेशीता की कसौटियों पर भी खरा उतरना होगा। ऐसा न होने पर इन कहानियों में ट्रांस और क्वीयर जीवन का औछा और रूढ़िवादि चित्रण होने की ज़्यादा संभावना है।

जैसे-जैसे युवा लोग मीडिया में प्रवेश कर रहे हैं, क्वीयर ख़बरों और लेखों का कवरेज बढ़ने की संभावना है क्योंकि युवा पीढ़ी में क्वीयर जीवन के प्रति अधिक स्वीकार्यता और रुचि दिख रही है। इनमें से कई लोग इस मुद्दे पर बात करने को लेकर

उत्साहित हैं, जो अब तक वर्जित बना हुआ था। पर क्वीयर मुद्दों पर सकारात्मक पत्रकारिता सीखने के लिए संसाधनों की कमी है। मीडिया और पत्रकारिता स्कूल ज़्यादातर क्वीयर मुद्दों पर रिपोर्टिंग करना नहीं सिखाते और अधिकांश मीडिया क्वीयर कवरेज को संक्षिप्त में प्रस्तुत करता है या प्राइड महीनों तक सीमित रखता है। परिणामस्वरूप ऐसी कहानियों को बढ़ावा देने के लिए एक सक्षम वातावरण नहीं बन पाया है।

ऐसे में यह मीडिया रेफरेंस गाइड एक उपयोगी संसाधन है जो पत्रकारों और न्यूज़रूम को क्वीयर विषयों को सकारात्मक ढंग से पेश करने में मदद कर सकता है। क्वीयर लोगों के योगदान से बनी यह बहुभाषी गाइड सरल, संवेदनशील और विश्वसनीय तरीके से लिखी गई है। यह समावेशी भी है और समुदाय की असली प्रतिनिधि भी।

अब बस ज़रूरत है इसमें दी गयी जानकारी को क्वीयर जीवन पर ख़बरें बनाते और उन्हें साझा करते समय शामिल करने की। हमें उम्मीद है कि ये प्रभावशाली क्वीयर कहानियाँ एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया का हमारा सपना सच करेंगी।

डॉ. अक्सा शेख एक ट्रांसजेंडर महिला डॉक्टर हैं तथा क्वीयर अधिकारों पर काम करती हैं

LGBTQIA+ शब्दावली

भाग 1:
लिंग से सम्बंधित शब्द

लिंग (Sex)

लिंग किसी भी व्यक्ति के बाहरी या आंतरिक शरीर के अंगों, हॉर्मोन्स, क्रोमोसोम (गुणसूत्रों) आदि के आधार पर उनकी जैविक संरचना को व्यक्त करता है।

लैंगिक विशेषताएँ (Sex Characteristics)

'लैंगिक विशेषताओं' का अर्थ किसी व्यक्ति की शारीरिक यौन/प्रजनन संबंधी विशेषताओं से है जो उनके लिंग पर आधारित होती हैं। इनमें जननांग (योनि एवं गर्भाशय या लिंग एवं अंडकोष आदि), सेक्स क्रोमोसोम्स (X,Y) के समूहों (XX, XY, XXY, XYY, XO, आदि), उनके शरीर में मौजूद प्रमुख सेक्स हार्मोन (एस्ट्रोजन, प्रोजेस्टेरोन, टेस्टोस्टेरोन आदि), अन्य यौन विशेषताएं (जैसे स्तन, चेहरे के बाल, गहरी आवाज़ आदि) शामिल हैं। लैंगिक विशेषताएँ व्यक्ति की जेंडर पहचान, अभिव्यक्ति, यौनिक आकर्षण या यौनिकता को प्रभावित कर सकती हैं लेकिन इसका कारण नहीं हैं।

इंटरसेक्स विविधताओं वाले व्यक्ति (People with Intersex Variations)

वें व्यक्ति जिनकी जन्मजात यौन विशेषताएं महिला या पुरुष के लिए निर्धारित चिकित्सीय और सामाजिक मानदंडों से अलग होती हैं उन्हे इंटेरसेक्स विविधता में गिना जाता है। इन विशेषताओं में बाहरी या आंतरिक प्रजनन अंग, गुणसूत्र और/या हॉर्मोन्स शामिल हो सकते हैं। ऐसे व्यक्ति आम तौर पर समाज में उपेक्षा, भेदभाव अथवा अन्य नुकसान या जोखिम का अनुभव करते हैं या कर सकते हैं।

> नोट: यह मान लेना गलत होगा कि ऐसे सभी व्यक्ति ट्रांसजेंडर होते हैं। इंटरसेक्स विविधताओं वाले व्यक्तियों में भी जेंडर, अभिव्यक्त जेंडर और यौनिकता के अनुभव प्रथक हो सकते हैं। किसी अन्य व्यक्ति की तरह, वें भी अपनी जेंडर पहचान, यौनिकता और यौनिक आकर्षण को स्वयं निर्धारित कर सकते हैं।

नोट: माता-पिता या अभिभावकों की सहमति से, डॉक्टरों द्वारा ऐसे कई बच्चों की सर्जरी कर दी जाती है जिससे उनका शरीर महिला या पुरुष के लिए बने चिकित्सीय और सामाजिक मानदंडों के अनुरूप ढल जाए। यह अनैतिक है और इसे पत्रकारिता द्वारा चुनौती दी जानी चाहिए। ऐसी जबरन और गैर-सहमति वाली सर्जरी के परिणामस्वरूप इंटरसेक्स विविधता वाले व्यक्ति को मानसिक आघात, शारीरिक अस्वस्थता और अन्य दूसरी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

भाग 2:
जेंडर से सम्बंधित शब्द

जेंडर (Gender)

जेंडर का अर्थ है, किसी भी व्यक्ति को जन्म के समय निर्धारित किये गए लिंग से जुड़े मानदंडों, व्यवहारों और भूमिकाओं के आधार पर समाज किस तरह देखता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जिसके लिए पुरुष लिंग निर्धारित किया गया है, उससे 'मर्द' बनने, एवं शक्तिशाली और मुखर होने की उम्मीद की जाती है। वहीं अगर किसी व्यक्ति के लिए महिला लिंग निर्धारित किया जाता है तो उस से सौम्य होने तथा पालन पोषण के गुण रखने की अपेक्षा की जाती है। जेंडर एक सामाजिक ढांचा है, और अलग-अलग समाज में प्रत्येक जेंडर से अपेक्षित व्यवहार भिन्न हो सकता है और समय के साथ बदलता भी रहता है।

जेंडर अस्मिता या जेंडर पहचान (Gender Identity)

जेंडर अस्मिता या जेंडर पहचान का अर्थ है कि कोई भी व्यक्ति अपने जेंडर को कैसे परिभाषित करता है। यह किसी व्यक्ति के गहन आंतरिक अनुभव पर निर्भर करता है। ज़रूरी नहीं कि यह अनुभूति जन्म के समय दिए गए लिंग और उस लिंग से जुड़ी सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप हो। जेंडर अस्मिता स्वनिर्धारित है — मतलब, केवल एक शख़्स ही अपनी जेंडर पहचान निर्धारित करने का अधिकार रखता है। जेंडर पहचान निर्धारित करने के लिए कोई 'मेडिकल टेस्ट' अनिवार्य नहीं है। उदाहरण के लिए, एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति ही यह निर्धारित करने के लिए सक्षम है कि वह पुरुष हैं या महिला।

अभिव्यक्त जेंडर (Gender Expression)

अभिव्यक्त जेंडर का अर्थ है कि कोई व्यक्ति अपने जेंडर को कैसे अभिव्यक्त या प्रस्तुत करता है। इसमें व्यवहार और बाहरी तत्व जैसे पोशाक, बाल, मेकअप, हाव-भाव और आवाज़ शामिल हो सकते हैं। किसी व्यक्ति का चुना हुआ नाम या/और सर्वनाम भी जेंडर को व्यक्त करने के सामान्य तरीके हैं। ज़रूरी नहीं कि अभिव्यक्त जेंडर सदा ही किसी की जेंडर पहचान के अनुरूप हो। उदाहरण के लिए, एक महिला पैंट और शर्ट पहन सकती है और उसके बाल छोटे हो सकते हैं- यह सब आम तौर पर समाज द्वारा 'पुरुष' जेंडर से जोड़ी गई अभिव्यक्तियां हैं।

एक अन्य उदाहरण, एक शख़्स जिनके लिए जन्म के समय पुरुष लिंग निर्धारित किया गया हो पर वो परिधान में साड़ी पहनते हों तो ज़रूरी नहीं की वो ट्रांसजेंडर महिला ही हों। वें अपने परिधान से अलग अपने आप को पुरुष, या नॉन-बाइनेरी या किसी अन्य जेंडर पहचान से जोड़ कर देख सकते हैं।

जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग (Gender Non-conforming Person)

वह लोग (वयस्क या बच्चे) जो पुरुष या महिला दोनों में से किसी की भी जेंडर पहचानों के रूढ़ नियमों का अनुसरण नहीं करते या फिर जिनकी अभिव्यक्ति प्रचलित जेंडर मानदंडों से भिन्न होती है, ऐसे व्यक्ति जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग कहलाते हैं।

कई बार कुछ व्यक्तियों को उनके अभिव्यक्त जेंडर की वजह से नॉन कौनफ़ोरमिंग माना जाता है, हालांकि वे स्वयं को इस रूप में नहीं देखते। अभिव्यक्त जेंडर और जेंडर के रूढ़ नियमों को न मानना सीधे तौर पर पुरुषत्व और स्त्रीत्व की व्यक्तिगत और सामाजिक धारणाओं से सरोकार रखता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति (Transgender Person)

एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति वह है जिनकी जेंडर पहचान या अभिव्यक्ति उनके जन्म के समय निर्धारित किए गए लिंग से अलग होती है। जन्म के समय उनका लिंग पुरुष या महिला या इंटरसेक्स क्यों न निर्धारित किया गया हो, कोई भी व्यक्ति ट्रांसजेंडर हो सकता है। एक व्यक्ति ट्रांसजेंडर हो सकता है चाहे वह जेंडर संगति प्रक्रियाओं जैसे हार्मोन थेरेपी या सर्जरी से गुज़रे हों या नहीं। यह तथ्य सुप्रीम कोर्ट के नालसा निर्णय (2014) और ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम में भी स्पष्ट तौर पर कहा गया है।

> नोट: 'ट्रांसजेंडरस' या 'एक ट्रांसजेंडर' शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिए न करे, यानी संज्ञा के रूप में। इस शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में करना चाहिए। संदर्भ के आधार पर सही उपयोग है; ट्रांसजेंडर व्यक्ति, ट्रांस व्यक्ति, ट्रांसजेंडर महिला, ट्रांस महिला, ट्रांसजेंडर पुरुष, ट्रांस पुरुष आदि।

ट्रांस महिला या ट्रांसजेंडर महिला (Trans Woman)

'ट्रांसजेंडर महिला' उस व्यक्ति को कहा जाता है जिनके लिए जन्म के समय पुरुष लिंग और जेंडर निर्धारित हुआ हो पर जिनकी जेंडर पहचान एक महिला की हो। 'ट्रांसजेंडर महिला' को 'ट्रांस महिला' (दो शब्द) के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है।

ट्रांस पुरुष या ट्रांसजेंडर पुरुष (Trans Man)

'ट्रांसजेंडर पुरुष' उस व्यक्ति को कहा जाता है जिनके लिए जन्म के समय स्त्री लिंग और जेंडर निर्धारित हुआ हो पर जिनकी जेंडर पहचान एक पुरुष की हो।'ट्रांसजेंडर मैन' को 'ट्रांस मैन' (दो शब्द) के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है।

नॉन बाइनरी (Non-Binary)

'नॉन बाइनरी' वो व्यक्ति हैं जिनके जेंडर अनुभव और अभिव्यक्ति स्त्री या पुरुष जैसी पारम्परिक जेंडर पहचानों से परे होते हैं या दोनो जेंडर का मिश्रण होते हैं। ख़ुद को महिला-पुरुष के खांचे से अलग मानने वाला व्यक्ति नॉन बाइनरी वर्ग में आ सकते हैं।

जेंडर डिस्फोरिया (Gender Dysphoria)

एक मानसिक अशांति जो किसी व्यक्ति को हो सकती है जब उनके जेंडर का एहसास जन्म के समय निर्धारित किए गए लिंग से जुड़े जेंडर के साथ मेल नहीं खाता। ऐसा ज़रूरी नहीं कि सभी ट्रांस व्यक्तियों को जेंडर डिस्फोरिया हो। कुछ व्यक्तियों को जेंडर डिस्फोरिया का अनुभव बचपन से ही होने लगता है, जबकि कुछ को बाद में, जैसे यौवन के दौरान, इसका अनुभव हो सकता हैं।

जेंडर असंगति (Gender Incongruence)

किसी व्यक्ति द्वारा महसूस किए गए जेंडर और जन्म के समय निर्धारित किए गए लिंग से जुड़े जेंडर के बीच एक प्रमुख और निरंतर चलने वाली असंगति।

जेंडर संगति प्रक्रिया (Gender Affirmative Procedures)

ऐसी प्रक्रियाएँ जो किसी व्यक्ति को अपने जेंडर के अनुसार ढलने में मदद करती हैं। इसमें सामाजिक (अपने जेंडर के अनुरूप कपड़े पहनना या बर्ताव करना), "उसी जेंडर के जैसे" जीने की कोशिश, चिकित्सीय (सर्जरी, हार्मोन, लेज़र थेरेपी), और कानूनी (कागजों में अपना नाम और जेंडर बदलना) जैसी प्रक्रियाएं शामिल हैं।

जेंडर संगति सर्जरी (Gender Affirmation Surgery)

यौन और प्रजनन अंगों की ऐसी सर्जरी जो किसी व्यक्ति को उनके जेंडर के अनुरूप शारीरिक बदलाव करने में या फिर जैसा वो आंतरिक तौर पर अनुभव करते हैं वैसा ही दिखने में मदद करती है। पहले इस प्रक्रिया को सेक्स रिअसाइनमेंट सर्जरी (SRS) कहा जाता रहा है पर अब इस शब्द का उपयोग न करने का सुझाव दिया जाता है।

मृत नाम (Dead Name)

वह नाम जो एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति को उनके परिवार द्वारा उनके जन्म के समय दिया गया तथा जिससे उनकी पुरानी पहचान थी, पर अब वो उस नाम का उपयोग नहीं करना चाहते। ऐसे नाम को मृत नाम या dead name कहा जाता है।

नोट: रिपोर्ट करते समय, किसी भी व्यक्ति का 'मृत नाम' न पूछें। यह कोई ज़रूरी जानकारी नहीं है जिसे समाज को मालूम होना चाहिए। ख़बर में किसी ट्रांसजेंडर व्यक्ति के मृत नाम का उल्लेख करना अपमानजनक है क्योंकि अधिकतर यह नाम उनके जन्म के समय निर्धारित किए गए लिंग और जेंडर को दर्शाता है जिससे वें वर्तमान में कोई वास्ता नहीं रखते। आप सभी प्रकाशित रिपोर्टों में, उसी नाम का उल्लेख करें जो आपको बताया गया है। इसी प्रकार, "फलां पुरुष एक महिला बन गया" या "फलां महिला एक पुरुष बन गई" जैसे विवरणों/वाक्यों के प्रयोग से बचना चाहिए। इसके बजाय ऊपर दी गई 'ट्रांस महिला' और 'ट्रांस पुरुष' की परिभाषाओं का प्रयोग किया जाना चाहिए।

जेंडर फ़्लूइड/जेंडर फ़्लूइडिटी (Genderfluid/Gender Fluidity)

'जेंडर फ़्लूइडिटी' एक व्यक्ति के किसी एक जेंडर से न बँधे होने के अनुभव को दर्शाता है। एक जेंडर फ़्लूइड व्यक्ति सभी जेंडर से, एकाधिक जेंडर से या दो जेंडर से अपनी पहचान का जुड़ाव महसूस कर सकता है। (यह भी देखें: नॉन बाइनरी)

सिस जेंडर (Cis Gender)

वह व्यक्ति जिनकी जेंडर पहचान जन्म के समय निर्धारित किए गए लिंग से जुड़े जेंडर से मेल खाती है और वें खुद को उसी जेंडर या लिंग से जोड़ कर देखते हैं।

भाग 3:
यौनिकता से सम्बंधित शब्द

यौनिकता (Sexuality)

किसी व्यक्ति की यौनिकता उनके दूसरों के साथ शारीरिक सम्बन्ध और शारीरिक अंतरंगता से जुड़े व्यवहार, इच्छाओं, पहचान और दृष्टिकोण को बताती है।

यौन आकर्षण (Sexual Orientation)

यौन आकर्षण से तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति शारीरिक, भावनात्मक, और/या रोमांटिक रूप से किन व्यक्ति (व्यक्तियों) और/या जेंडर की ओर आकर्षित होता है। उदाहरण के लिए, 'विषमलैंगिक आकर्षण' एक आदमी और एक औरत के बीच आकर्षण को दर्शाता है। 'समलैंगिकता' दो पुरुषों या दो महिलाओं के आपस में आकर्षण को बताती है।

नोट: 'यौन आकर्षण 'जेंडर पहचान' से भिन्न होता है।

उदाहरण: जिस प्रकार एक सिस जेंडर महिला विषमलैंगिक, समलैंगिक या बाइसेक्शूअल हो सकती है, एक ट्रांसजेंडर महिला भी विषमलैंगिक, समलैंगिक या किसी और प्रकार के यौन आकर्षण से खुद को जुड़ा पा सकती है।

विषमलैंगिकता/विषमलैंगिक (Heterosexuality/Heterosexual)

'विषमलैंगिकता' शब्द आमतौर पर पुरुषों और महिलाओं के बीच यौन आकर्षण को बताने के लिए प्रयोग किया जाता है। एक 'विषमलैंगिक पुरुष' वह आदमी होता है जो सिर्फ़ महिलाओं की तरफ आकर्षित हो। एक 'विषमलैंगिक महिला' वह स्त्री है जो सिर्फ़ पुरुषों की तरफ आकर्षित हो। अंग्रेजी भाषा में कभी-कभी इस व्यक्ति के लिए 'स्ट्रेट' शब्द का प्रयोग भी किया जाता हैं।

विषम रोमांटिक (Hetero Romantic)

'विषम रोमांटिक' का मतलब यौन आकर्षण से परे दूसरे जेंडर के किसी व्यक्ति से रोमांटिक या भावनात्मक आकर्षण महसूस होना है। यह आकर्षण सिस जेंडर या ट्रांसजेंडर व्यक्ति, सब में हो सकता है।

समलैंगिकता/समलैंगिक (Homosexuality/ Homosexual)

'समलैंगिकता' का अर्थ है अपने ही जेंडर के व्यक्ति के प्रति यौन आकर्षण होना। 'समलैंगिक पुरुष' या 'गे' वह पुरुष है जो अन्य पुरुषों के प्रति आकर्षित होता है; 'समलैंगिक महिला' या 'लेस्बियन' स्त्री वह है जो अन्य महिलाओं के प्रति आकर्षित होती है।

सम रोमांटिक (Homo Romantic)

'सम रोमांटिक' का मतलब यौन आकर्षण से परे अपने ही जेंडर के व्यक्ति के प्रति रोमांटिक/भावनात्मक आकर्षण होना है। यह आकर्षण सिस जेंडर या ट्रांसजेंडर, सब व्यक्तियों में हो सकता है।

द्वियौनिकता/द्वियौनिक (Bisexuality/Bisexual)

'द्वियौनिकता' का अर्थ अपने और अपने से अलग जेंडर पहचान वाले व्यक्तियों के प्रति आकर्षण होना। अतीत में, द्वियौनिकता को पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए आकर्षण के रूप में परिभाषित किया गया है, लेकिन जेंडर और जेंडर पहचान के बारे में जैसे जैसे हमारी समझ पुरुष/महिला बाइनरी से इतर विकसित हो रही है, द्वियौनिकता की परिभाषा भी बदल रही है। यह ज़रूरी नहीं कि एक व्यक्ति का सभी जेंडर के प्रति समान मात्रा में आकर्षण हो - असमान या आंशिक आकर्षण भी महवतपूर्ण हो सकता है। लोग अपने जीवनकाल में अलग-अलग तरीकों से और अलग अलग स्तरों पर इस आकर्षण का अनुभव कर सकते हैं।

बहुयौनिकता/ बहुयौनिक (Pansexualty/Pansexual)

'बहुयौनिकता' का तात्पर्य बिना जेंडर की परवाह किए हुए आकर्षण होना है। एक 'बहुयौनिक व्यक्ति' सभी जेंडर या कई जेंडर के व्यक्तियों के प्रति आकर्षण महसूस कर सकता है। यह ज़रूरी नहीं कि सभी जेंडर के प्रति उनका समान आकर्षण हो।

अयौनिक/ग़ैर रूमानी (Asexual/Aromantic)

'अयौनिक' का मतलब उस व्यक्ति से है जो किसी के प्रति यौन आकर्षण को महसूस नहीं करते हैं। इसमें वे व्यक्ति भी शामिल हो सकते हैं जो थोड़ा ही यौन आकर्षण अनुभव करते हैं पर सिर्फ़ कुछ ही स्थितियों में। उदाहरण के लिए: जब उन्होंने अपने साथी के साथ एक मजबूत भावनात्मक या रोमांटिक संबंध बना लिया हो। 'ग़ैर रूमानी' उस व्यक्ति को कहते हैं जो किसी के प्रति रोमांटिक आकर्षण महसूस न करता हो।

> नोट: एक व्यक्ति एक ही समय में अयौनिक/ग़ैर रूमानी दोनों हो सकते हैं; या वे केवल यौन आकर्षण महसूस कर सकते हैं, या केवल रोमांटिक आकर्षण। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अयौनिक है, लेकिन साथ ही साथ वह समान जेंडर के व्यक्तियों के लिए रोमांटिक आकर्षण महसूस करते हैं या इसके विपरीत वह यौन आकर्षण महसूस करते हैं पर रोमांटिक आकर्षण नहीं।

रोमांटिक आकर्षण या रुझान (Romantic Orientation)

यह एक व्यक्ति के रोमांटिक/भावनात्मक आकर्षण के बार में बताता है, जो उनके यौन आकर्षण से भिन्न हो सकता है। व्यक्ति 'सम रुमानी', 'विषम रूमानी', 'बहु रूमानी', या 'अरूमानी' आदि हो सकते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि रोमांटिक आकर्षण किसी व्यक्ति के यौन आकर्षण के अनुरूप हो।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो बहुयौनिक हैं अर्थात, वे सभी जेंडर के व्यक्तियों के प्रति यौन रूप से आकर्षित होते हैं, वो सम रूमानी हो सकते हैं, जिसका अर्थ है कि वे केवल अपने ही जेंडर के व्यक्तियों के साथ रोमांटिक संबंध रखना चाहते हैं।

भाग 4:
सामूहिक शब्द

क्वीयर (Queer)

'क्वीयर' शब्द का इस्तेमाल ऐसी विविध यौन विशिष्टताओं, जेंडर और यौनिकताओं को दर्शाने के लिए किया जाता है जो कि सिसजेंडर और/या विषमलैंगिक नहीं हैं। यह एक सुधारा गया शब्द है - पश्चिमी देशों में 'क्वीयर' शब्द को उन व्यक्तियों के लिए एक गाली के रूप में इस्तेमाल किया जाता था जो जेंडर और यौनिकता की सामाजिक धारणाओं के साथ मेल नहीं खाते थे। हालाँकि, एलजीबीटीक्यूआईए+ समुदाय अब इस शब्द का उपयोग गर्व प्रकट करने और स्वयं का वर्णन करने के लिए करता है।

> नोट: जहां तक संभव हो, जो पत्रकार क्वीयर नहीं हैं, उन्हें अपने काम में इस शब्द के प्रयोग से बचना चाहिए, जब तक की किसी क्वीयर व्यक्ति का परिचय देना या उनके कथन को पेश करना लक्ष्य न हो।

एल.जी.बी.टी.आइ.क्यु.ए+/ एल.जी.बी.टी.क्यु.आइ.ए+ (LGBTIQA+/LGBTQIA+)

एलजीबीटीआईक्यूए+ एक सामूहिक शब्द हैं जो लेस्बियन, गे, बाइसेक्शूअल, ट्रांसजेंडर, इंटरसेक्स, क्वीयर, अयौनिक, बहुलैंगिक और अन्य गैर-सिस जेंडर और गैर-विषमलैंगिक रुझान वाले व्यक्तियों को संदर्भित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी इसे छोटा कर के LGBT, या LGBTQ, या LGBTQ+ की तरह भी इस्तेमाल किया जाता है।

भाग 5:
LGBTQIA+ समूहों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कुछ और शब्द

अपनी जेंडर या यौनिक पहचान को ज़ाहिर करना (Coming out)

यह अपनी LGBTQIA+ पहचान को अपने और दूसरों के सामने प्रकट करने की प्रक्रिया है। यह कोई एक बार होने वाली प्रक्रिया नहीं। LGBTQIA+/क्वीयर व्यक्ति पहले ख़ुद अपनी पहचान को समझते हैं, और फिर वे इसे दूसरों के सामने ज़ाहिर करते हैं। पूरे जीवन में यह पहचान अलग-अलग लोगों के साथ अलग-अलग वक़्त पर ज़ाहिर होती है। LGBTQIA+ व्यक्ति के रूप में ख़ुद को प्रकट करने के लिए यौन अनुभवों का होना ज़रूरी नहीं है और न ही दूसरों को बताना ज़रूरी है। केवल अपने ख़ुद से ज़ाहिर होना काफ़ी है।

> नोट: यह एक बहस का विषय है कि LGBTQIA+ व्यक्तियों को 'ज़ाहिर होना' या ख़ुद के बारे में बार बार बताना पड़ता है क्योंकि सामाजिक धारणा यह है कि हर कोई सिस जेंडर और विषमलैंगिक है, या होना चाहिए। ख़बर में किसी व्यक्ति के ज़ाहिर होने का उल्लेख करते समय यह ध्यान रखें कि क्वीयर व्यक्तियों को ज़ाहिर होना ज़रूरी नहीं होना चाहिए था।

साथी (Ally)

एक विषमलैंगिक और/या सिस जेंडर व्यक्ति या संगठन जो एलजीबीटीआईक्यूए+ व्यक्तियों और समुदायों के अधिकारों का समर्थन करता है और समाज में अपने विशेषाधिकार का उपयोग उनके अधिकारों और प्रगति के लिए करता है ऐसे व्यक्ति को साथी या ally कहा जाता है।

> नोट: एक 'साथी' को क्वीयर समुदाय/समुदायों द्वारा ही उनके कार्यों के आधार पर पहचाना जाना चाहिए। स्वयं ही 'साथी' होने की घोषणा का कोई मतलब नहीं है अगर उस व्यक्ति के कार्यों और शब्दों से उसी समुदाय के लोगों को चोट पहुँचती हो। सिस जेंडर और विषमलैंगिक व्यक्तियों द्वारा मित्रता की स्व-घोषणा को रिपोर्ट करते समय, LGBTQIA+ समुदायों से पुष्टि करने का प्रयास करें कि क्या यह व्यक्ति वास्तव में एक सहयोगी के तौर पर देखा जाता है या नहीं।

स्वाभिमान मार्च /प्राइड यात्रा (Pride Walk/March)

स्वाभिमान मार्च जिसे 'क्वीयर प्राइड परेड', 'रेनबो प्राइड परेड' या 'LGBTQIA+ प्राइड परेड' भी कहते हैं, ऐसा आयोजन है जो एलजीबीटीआईक्यूए+/क्वीयर व्यक्तियों द्वारा अपनी दृश्यता बढ़ाने, अपनी पहचानों में स्वाभिमान जताने और समुदाय के अधिकारों की माँग उठाने के लिए किया जाता है। ऐसे आयोजन विरोध प्रदर्शन और सांस्कृतिक उल्लास का मिश्रण होते हैं।

विकृति चिकित्सा, यौन झुकाव, जेंडर पहचान और जेंडर अभिव्यक्ति - विक्रत प्रयास (Conversion Therapy, SOGIE-change efforts)

ऐसे अनैतिक, अवैध और अवैज्ञानिक प्रयास जिनके द्वारा यह दावा किया जाता है कि क्वीयर व्यक्ति को विषमलैंगिक, ट्रांसजेंडर को सिस जेंडर, या फिर जेंडर फ़्लूइड व्यक्ति को जेंडर समनुरूप व्यक्ति में परिवर्तित कर सकते हैं। इनमें से कुछ प्रक्रियाएँ अंधविश्वासों से उपजी हैं और कुछ धार्मिक मान्यताओं से। इन प्रयासों पर मद्रास उच्च न्यायालय ने रोक लगा दी है।

भाग 6:
पारम्परिक/सांस्कृतिक शब्द

हिजड़ा/किन्नर/तृतीयपंथी/मंगलामुखी व्यक्ति

इन शब्दों का उपयोग लंबे समय से उन सांस्कृतिक और पारम्परिक समुदायों के लिए किया जाता है जिनके सदस्य इंटरसेक्स विविधता वाले और ट्रांसजेंडर हो सकते हैं। इन्हें विषमलैंगिक समाज ने हमेशा हाशिए पर रखा है, पर विवाह और जन्म के कार्यों में इनकी उपस्थिति शुभ मानी जाती है। इन समुदायों के सदस्यों की जेंडर की अभिव्यक्ति ज़्यादातर महिला की होती है।

कोती/जनाना

यह शब्द उन व्यक्तियों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं जिनके जन्म के समय पुरुष लिंग और जेंडर निर्धारित किया गया हो पर जो हमेशा इस जेंडर को अभिव्यक्त नहीं करते। यह व्यक्ति जेंडर फ्लूइड, ट्रांस महिला और समलैंगिक या बाइसेक्शूअल होते हैं।

पंथी या गिरिया

वो सिस जेंडर पुरुष जो समलैंगिक या बाइसेक्शूअल होते हैं और जिनका सम्बंध कोती के साथ होता है।

पत्रकारों के लिए मूल बातें

इस अध्याय में बताया गया है कि LGBTQIA+ व्यक्तियों और/या समुदायों से संबंधित किसी ख़बर को रिपोर्ट करते समय पत्रकारों को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। पत्रकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी कहानियों से कमज़ोर समुदायों के खिलाफ भेदभाव या घृणा उत्पन्न न हो।

- **नाम और पहचान:** आमतौर पर *पत्रकारों* के पास किसी भी रिपोर्ट को तैयार करने के लिए बहुत कम समयावधि होती है, पर इसका यह मतलब नहीं कि इस वजह से आप जिनका इंटरव्यू कर रहें हैं उनके प्रति शिष्टता न दिखाएँ। एक रिपोर्टर के रूप में आपको पेशेवर होना चाहिए और अपने स्रोतों का भरोसा जीतना चाहिए। पत्रकारों को हमेशा सटीकता और निष्ठा के साथ ख़बर पेश करनी चाहिए और अपने स्रोतों की रक्षा करनी चाहिए। किसी LGBTQIA+ व्यक्ति का इंटरव्यू लेते समय भी यही नियम अपनाएँ।

  पत्रकारों के लिए यह अनिवार्य है कि वे किसी व्यक्ति का नाम और जेंडर पहचान पूछें और उसका उल्लेख करते समय, उसके बारे में लिखते समय, या उसके बारे में सार्वजनिक रूप से बोलते समय उनका सही उपयोग करें। इस मामले में अपनी तरफ़ से कुछ भी अनुमान न लगाएँ और हमेशा विनम्रता से पूछें:

  - **आपका नाम क्या है?** हो सकता है कि जो नाम आपको बताया जा रहा हो वो उस व्यक्ति का कानूनी नाम न हो, लेकिन पत्रकारों को उसी नाम का इस्तेमाल करना चाहिए जो वह व्यक्ति देता है।

    नोट: यदि कोई व्यक्ति गुमनाम रहना चाहता है, तो छद्मनाम का इस्तेमाल करें पर यह छद्मनाम का जेंडर उस व्यक्ति के जेंडर के अनुरूप ही हो।

  - **आप स्वयं को कैसे पहचानते हैं?** किसी व्यक्ति के जेंडर का अनुमान लगाने के बजाय, उनसे उनकी पहचान पूछना ज़्यादा अच्छा है। कभी-कभी लोग सर्वनामों का उपयोग करके भी पहचान बताते हैं - चाहे वो पुल्लिंग हो, स्त्रीलिंग हो या जेंडर नॉन बाइनेरी/ निष्पक्ष जेंडर। पुल्लिंग (He), स्त्रीलिंग (She), नॉन बाइनेरी (they) सर्वनामों का उपयोग किसी व्यक्ति द्वारा अपनी जेंडर पहचान दर्शाने के लिए किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति किसी भी सर्वनाम का उपयोग नहीं करना चाहता है, तो रिपोर्ट में उनके नाम पर बने रहें। हालाँकि हिंदी भाषा में किसी को सम्बोधित करने के लिए जेंडर युक्त सर्वनाम नहीं होते पर वाक्य में क्रिया द्वारा जेंडर का पता चलता है, जैसे "प्रवीण मुंबई गया" या "प्रवीण मुंबई गयी"। इसलिए जब भी आप रिपोर्ट लिखें तो व्यक्ति की व्याख्या उनके द्वारा बताए

गए जेंडर के अनुसार ही करें। जेंडर निष्पक्षता रखने के लिए सम्मानजनक सम्बोधन किया जा सकता है जैसे "प्रवीण मुंबई गए"।

- किसी व्यक्ति से उनके 'मृत नाम' के बारे में न पूछें (शब्दावली देखें) अथवा उनकी सहमति के बिना कहीं भी इसका इस्तेमाल न करें। 'मृत नाम' वह है जो एक व्यक्ति ने पूर्व में उपयोग किया था या जिस नाम से पहले उन्हें संबोधित किया जाता था। मृत नाम का प्रयोग अत्यधिक अपमानजनक और किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान को ख़ारिज करने वाला माना जाता है।

- **LGBTQIA+ पहचान किसी पाठक को लुभाने या ललचाने के लिए नहीं है:** किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान या यौन रुझान का उल्लेख केवल तभी किया जाना चाहिए जब वह ख़बर के लिए प्रासंगिक हो।

  - उदाहरण के लिए, यदि कोई चोरी की गई है और आरोपित व्यक्ति समलैंगिक है, तो समाचार में इसका खुलासा करने का कोई औचित्य नहीं है। हम आम तौर पर अपनी रिपोर्टिंग में एक विषमलैंगिक चोर की यौनिक पहचान के बारे में बात नहीं करते हैं, तो LGBTQIA+ व्यक्तियों के मामले में इस पर ध्यान क्यों दें?

- **LGBTQIA+ व्यक्ति अपने यौनिकता और/या जेंडर से कहीं अधिक हैं:** अगर आप किसी LGBTQIA+ विशेषज्ञ की बात रख रहे हैं और उनकी पहचान ख़बर के लिए प्रासंगिक है, उनसे पूछें कि वे कैसे सम्बोधित होना चाहेंगे।

  - उदाहरण के लिए, यदि नेहा एक लेखिका और समलैंगिक हैं, तो उन्हें इस प्रकार नामित किया जा सकता है:

    - नेहा, एक लेखिका; या,

    - नेहा, एक समलैंगिक लेखिका; या,

    - नेहा, एक समलैंगिक महिला जो एक लेखिका है; या,

    नेहा, एक लेखिका जो एक समलैंगिक महिला है।

  जब संदेह हो, तो अंतिम विकल्प चुनें।

- **नाबालिगों की पहचान को सुरक्षित रखें:** किसी ऐसे नाबालिग व्यक्ति के बारे में रिपोर्ट करते समय जो समलैंगिक, जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग, या ट्रांस जेंडर है, सुनिश्चित करें कि आप उनकी पहचान की उसी तरह रक्षा करते हैं जिस तरह आप किसी अन्य नाबालिग की पहचान की रक्षा करते हैं। प्रासंगिक भारतीय कानूनों का संदर्भ लें जैसे कि लैंगिक अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2012 (POCSO), किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015, आदि।

- **इस बारे में विचार करें कि आप अपनी ख़बर के लिए किस से बात करते हैं:** उदाहरण के लिए, यदि आप एक LGBTQIA+ व्यक्ति के बारे में लिख रहे हैं, जिनकी मृत्यु हो चुकी है, तो क्या आप उनके जैविक परिवार की राय को प्राथमिकता दे रहे हैं या फिर उनके चुने हुए परिवार/दोस्तों को जो मृत व्यक्ति को बेहतर जानते होंगे?

- **LGBTQIA+ समुदाय के भीतर जटिल अवरोधों को ध्यान में रखें:** एक LGBTQIA+ व्यक्ति अपनी जाति, धर्म, आर्थिक स्थिति आदि के कारण और अधिक वंचित हो सकता है। ख़बर के लिए आप जिन व्यक्तियों से बात कर रहे हैं

उनके व्यक्तिगत विशेषाधिकारों या बाधाओं के प्रति जागरूक होना महत्वपूर्ण है। इससे यह सुनिश्चित करने में आसानी होती है कि कौन से हितधारकों की आवाज़ को बुलंद किया जाए।

- उदाहरण के लिए, जब हम सेक्स वर्कर्स के बारे में लिखते हैं, तो उन लोगों से बात करना आवश्यक है जो इस पृष्ठभूमि से आते हैं और जो ऐसे लोगों से संबंधित हैं, न कि केवल उनसे जो विदेश में रहते हैं और सेक्स वर्कर्स पर शोध करते हैं। इस सिद्धांत का पालन न करना वर्ग और जाति के पूर्वाग्रह को दर्शाता है।

- **ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और समुदायों के बारे में रिपोर्टिंग:** ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के बारे में रिपोर्ट करते और लिखते समय, कृपया निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें:

  - 'ट्रांसजेंडर' शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में किया जाना चाहिए अर्थात, 'एक ट्रांसजेंडर' या 'ट्रांसजेंडर' शब्दों का प्रयोग न करें। संदर्भ के अनुसार हमेशा ट्रांसजेंडर व्यक्ति (व्यक्तियों), ट्रांस व्यक्ति (व्यक्तियों), ट्रांसजेंडर महिला, ट्रांस महिला, ट्रांसजेंडर पुरुष, ट्रांस पुरुष आदि शब्दों का उपयोग करें।

  - 'जन्म से लड़की', या 'जन्म से लड़के' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग न करें। 'जन्म के समय निर्धारित लिंग' वाक्य का उपयोग सही है।

    - उदाहरण के लिए: ' "रवि एक ट्रांसजेंडर आदमी है।'"

      यदि पाठकों को अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, तो कहें: "जन्म के समय रवि का लिंग और जेंडर स्त्री निर्धारित किया गया था और 20 साल की उम्र में उन्होंने जेंडर संगति प्रक्रिया शुरू की।"

      ऐसा न कहें: ' "रवि लड़की पैदा हुआ था।'"

  - किसी ट्रांसजेंडर व्यक्ति के शरीर और जननांगों के बारे में सवाल पूछने से बचें। यदि आपकी कहानी स्वास्थ्य के बारे में है, तो ऐसे प्रश्न करें जिससे ट्रांस व्यक्ति को बातचीत के संचालन का मौका मिले और वे ख़ुद तय कर पाएँ कि उन्हें कितनी बात साझा करनी है।

  - 'सेक्स चेंज' या 'सेक्सुअल रीअसाइनमेंट सर्जरी' जैसे शब्दों के इस्तेमाल से बचें। अगर आप सर्जिकल बदलाव की बात कर रहे हैं तो 'जेंडर संगति सर्जरी' का उपयोग करें। 'जेंडर संगति प्रक्रिया' का इस्तेमाल बाकी चिकित्सिय, सामाजिक और कानूनी बदलावों के लिए कर सकते हैं।

  - ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और समुदायों के बारे में ख़बर कवर करते समय, उनकी व्यक्तिगत यात्रा से परे जाना ज़रूरी है। सिर्फ़ सर्जरी और जेंडर संगति प्रक्रियाओं पर ही केंद्रित न रहें। यह विषय पाठकों या दर्शकों की जिज्ञासा तो जगाएँगे, पर ऐसी और भी कई मुश्किलें हैं जिनका ट्रांस समुदायों को सामना करना पड़ता है जैसे कि पुलिस की बर्बरता, भेदभाव, सार्वजनिक स्वास्थ्य या शिक्षा सेवाओं में बहिष्करण और काम और आवास की कमी। यह ऐसे मुद्दे हैं जिन पर पत्रकारों को ध्यान देना चाहिए।

संपादकों के लिए मूल बातें

इस अध्याय में हम बात करेंगे कि LGBTQIA+ व्यक्तियों और/या समुदायों के बारे में कहानी संपादित करते समय संपादकों (उप-संपादकों, तथ्य-जांचकर्ताओं और प्रूफ-रीडरस) को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। वह संपादक जो विशेष रूप से संपादिकय और विचारात्मक लेखों से सरोकार रखते हैं, वे "विचारात्मक लेखों का लेखन और कमीशनिंग' अध्याय को देख सकते हैं।

- **सुर्खियों में सनसनी से बढ़ कर गरिमा:** शीर्षक वह पहली चीज़ है जिसे पाठक या दर्शक देखते हैं - कभी-कभी केवल वही एक चीज़ है जो पढ़ी जाती है। बेहिसाब प्रतिस्पर्धा वाले मीडिया परिवेश में, एक संपादक को आमतौर पर यह सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है कि शीर्षक इतना दिलचस्प हो कि लोगों को लेख पढ़ने पर मजबूर कर दे। पर इसका मतलब यह नहीं कि हम असंवेदनशील और हानिकारक लेखन करें जो कि संपादकीय ज़िम्मेदारीयों का निरादर होगा। यदि एक सनसनीखेज़ शीर्षक और एक संवेदनशील शीर्षक के बीच चयन करना हो, तो हमेशा संवेदनशीलता को चुनें।
    - उदाहरण के लिए, एक चोरी की ख़बर में, यदि अभियुक्त एक समलैंगिक व्यक्ति है, लेकिन उसकी पहचान का अपराध से कोई लेना-देना नहीं है, तो शीर्षक में उसकी पहचान पर ध्यान केंद्रित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह कहानी के लिए महत्वपूर्ण नहीं है और पाठक में विलासी उत्तेजना जगाने के अलावा कुछ नहीं करता है।
- **नामों और पहचानों की दोबारा जांच करें:** मीडिया ने लंबे समय से, ख़बरों और लेखों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के 'मृत नाम' (शब्दावली देखें) का इस्तेमाल किया है, और उन्हें जिज्ञासा की वस्तुओं के रूप में दर्शाया है, जिसमें जेंडर संगति से 'पहले और बाद' की कहानियों को प्रमुखता दी गई। यह चलन असंवेदनशील और संपादकीय रूप से अनावश्यक है। यदि किसी रिपोर्टर या लेखक ने LGBTQIA+ व्यक्ति का वक्तव्य लिया है या उसका उल्लेख किया है, तो व्यक्ति के सही नाम और जेंडर पहचान के लिए उनसे दोबारा पूछ लें, और उसी जानकारी का उपयोग करें जो व्यक्ति द्वारा लगातार दी गई है। लेखक के सही इरादों के बावजूद आंतरिक पूर्वाग्रह और कुछ त्रुटियाँ किसी भी ख़बर में दिखाई दे सकते हैं; संपादक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे इन ग़लतियों की जाँच करें और उन्हें ठीक करें।
- सही संदर्भ में सही शब्दों का इस्तेमाल करने के लिए शब्दावली का प्रयोग करें: ऐसी स्थिति में जहाँ रिपोर्टर किसी ख़बर में LGBTQIA+ व्यक्ति या समुदाय के बारे में लिख रहे हैं, लेकिन उन्हें यह स्पष्ट नहीं है कि किन शब्दों का उपयोग करना है, तब सही तरीका यह होगा कि स्रोत से जांच की जाए कि उन्हें कैसे संबोधित किया जाना चाहिए। यदि किसी भी कारण से यह संभव नहीं है, या स्थिति के अनुसार आपको कुछ विचारों या सिद्धांतों का विस्तार करने की आवश्यकता

है, तो इस गाइड में मौजूद शब्दावली का उपयोग करें और इन शब्दों की परिभाषाओं को समझें। इस शब्दावली को उसी तरह प्रयोग करें जैसे आप किसी भी अन्य स्टाइल गाइड को करते हैं।

- उदाहरण के लिए, यदि किसी नाबालिग को उनकी जेंडर अभिव्यक्ति के कारण स्कूल में परेशान किया गया है, और वह बात करने में असमर्थ है, तो "ज़नाना" या "एक लड़की की तरह पेश आया" जैसे शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग न करें। इसके बजाय, यह कहें कि किसी स्रोत या सूत्रों के अनुसार, छात्र 'जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग है या वह जेंडर के पारम्परिक नियमों को नहीं मानते हैं।" अपने आप से उस छात्र की पहचान न बनाएँ क्योंकि आप नहीं जानते कि वे LGBTQIA+ पहचान रखते हैं या नहीं।

- **अपने स्रोत के वक्तव्य को परख लें:** विस्तृत लेखों और इंटर्व्यू में किसी स्रोत के वक्तव्य और बाइट उन्हें एक बार देखने के लिए भेजना ठीक रहता है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि उन्हें ग़लत तरीक़े से तो पेश नहीं किया गया है या कोई तथ्य बाहर तो नहीं हो गया है। LGBTQIA+ व्यक्तियों के साथ भी यह तरीक़ा अपनाएँ क्योंकि कई क्वीयर व्यक्तियों का मीडिया के साथ काफ़ी खराब अनुभव रहा है। हालाँकि कोई भी संपादक या मीडिया संगठन किसी स्रोत को पूरी ख़बर या लेख छपने से पहले नहीं भेजता है, पर उनके अपने वक्तव्य जाँचने के लिए भेजने में कोई दिक़्क़त नहीं होनी चाहिए। इससे स्रोत का आप पर विश्वास भी बनेगा।

- **LGBTQIA+ लोगों से संवेदनशीलता जांच करने के लिए कहें:** यदि आप एक जटिल ख़बर या लेख पर काम कर रहे हैं जिसके प्रसंग को आप समझ नहीं पा रहे क्योंकि आप उस विषय के विशेषज्ञ नहीं हैं, तो ऐसे व्यक्ति को खोजें जो इस बारे में ज़्यादा जानकारी रखते हैं। वह व्यक्ति आपके ख़ुद के संगठन में या बाहर हो सकते हैं और लेखन की सवेदनशीलता की जाँच कर सकते हैं। उन LGBTQIA+ कार्यकर्ताओं और पत्रकारों के साथ पेशेवर संबंध बनाएं जो आपके लेखन की संवेदनशीलता जाँच सकते हैं। हालांकि निष्पक्षता बनाए रखने के लिए सुनिश्चित कर लें कि वे व्यक्तिगत रूप से उस ख़बर या लेख का हिस्सा नहीं हैं।

- **सुरक्षा पहले:** कई मामलों में, एक LGBTQIA+ व्यक्ति गुमनामी चाहता है, क्योंकि उनकी पहचान प्रकट करने से उनके घर पर, कार्यस्थल पर, या सार्वजनिक रूप से उन्हें हिंसा और भेदभाव का सामना करना पड़ सकता है। सुनिश्चित करें कि ऐसे मामलों में उनकी पहचान पर्याप्त रूप से छिपी रहे। पत्रकारिता को किसी ऐसे व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए जो पहले से कमज़ोर स्थिति में है।

  - उदाहरण के लिए, यदि एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति ने अपने कार्यस्थल पर भ्रष्टाचार के बारे में किसी पत्रकार को बताया है और अगर ख़बर में उनकी जेंडर पहचान लिखी जाती है तो यह मालूम चल जाएगा कि यह जानकारी किसने दी है क्योंकि उनके संगठन में बहुत अधिक ट्रांस व्यक्ति नहीं होंगे। ऐसे में सुनिश्चित करें कि उनके नाम और अन्य पहचान संबंधी विवरणों के साथ उनकी जेंडर पहचान भी छिपी रहे।

  - मान लीजिए कि एक समलैंगिक पुरुष ने डेटिंग ऐप पर किसी के द्वारा ब्लैक्मेल किए जाने की सूचना दी है। उनके नाम का खुलासा करने से उनकी पहचान उनके परिवार के सामने प्रकट हो सकती है, अगर वो पहले से उनकी यौनिकता के बारे में नहीं जानते होंगे। ऐसे मामलों में भी, अपने स्रोतों की गुमनामी सुनिश्चित करें।

- **विचारों की विविधता सुनिश्चित करें:** एक संपादक के लिए यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि क्या कोई रिपोर्टर हर ख़बर में एक, दो कार्यकर्ताओं की ही राय लेता है। एक संपादक के रूप में, आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पत्रकार

विविध स्रोतों को विकसित करें। अधिकांश समुदायों और सामाजिक न्याय आंदोलनों की तरह LGBTQIA+ व्यक्ति भी अलग अलग पृष्ठभूमि से आते हैं जिसकी वजह से उनके विशेषाधिकार या भेदभाव का एहसास अलग होता है। जाति, वर्ग, भूगोल, जेंडर, शिक्षा, भाषा, सभी ऐसे कारक हैं जो LGBTQIA+ व्यक्ति को या तो विशेषाधिकार दे सकते हैं या और भी ज़्यादा बाधाएँ पेश कर सकते हैं। सुनिश्चित करें कि मीडिया में सिर्फ़ वही LGBTQIA+ आवाज़ें न सुनाई दें जिनको सबसे ज़्यादा विशेषाधिकार प्राप्त हों।

- **सामग्री चेतावनियाँ**: उन लेखों और वीडियो की शुरुआत में उपयुक्त चेतावनियाँ दें जिनमें हिंसा, हमले, उत्पीड़न का चित्रात्मक विवरण हो या क्वीयर लोगों से डरने और घृणा करने वाली टिप्पणियाँ हो, क्योंकि हो सकता हैं इनसे पाठक या दर्शक को भावनात्मक चोट पहुँचे।

विचारात्मक लेखों का लेखन और कमीशनिंग

यह अध्याय उन विशेष और विचारात्मक लेखों के बारे में है जो LGBTQIA+ पहचान और मुद्दों के संस्कृति, कला, कानून, राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, मानवाधिकार, आदि विषयों के साथ सम्बंध पर केंद्रित होते हैं।

पहली बात जो एक कमीशनिंग संपादक को विचार करनी चाहिए वह यह है कि फलां लेख कौन लिख रहा है? और क्या बात उन्हें इसे लिखने के योग्य बनाती है? उन्हें लेख लिखने के लिए नियुक्त करने से पहले, यह चीज़ें अवश्य जान लें:

- क्या वे क्वीयर-पहचान वाले व्यक्ति हैं?
- क्या वह उस विषय के विशेषज्ञ हैं?
- LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में लिखने में उनका अनुभव क्या है?
- मानवाधिकारों के बारे में लिखने में उनका अनुभव क्या है?

यदि वे क्वीयर-पहचान वाले हैं:

- उनकी सामुदायिक भागीदारी क्या है? ज़मीनी स्तर पर उनका क्या काम है?
- क्या वे इस विषय पर लिखने/बातचीत करने के लिए पेशेवर रूप से योग्य हैं? उदाहरण के लिए, यदि वे एक विशेषज्ञ के दृष्टिकोण से मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात कर रहे हैं, क्या वे मनोचिकित्सक/मनोवैज्ञानिक/ काउन्सलर/चिकित्सक हैं? यदि उनकी राय विवादास्पद लगती है, तो किसी और विश्वसनीय विशेषज्ञ स्रोत से राय लें
    - उदाहरण के लिए, यदि वे आत्म नुक़सान या किसी विवादास्पद थेरेपी को बढ़ावा दे रहे हैं तो इस पर किसी और की राय लें और जाने कि क्या इसे प्रकाशित करना समझदारी है?
- क्या वे जाति, वर्ग, जेंडर, यौनिकता, नस्ल, धर्म, भाषा, आदि के वर्चस्व के मामले में समस्याग्रस्त स्थिति अपना रहे हैं? सिर्फ इसलिए कि कोई व्यक्ति क्वीयर है इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें दूसरे तरीक़ों से विशेषाधिकर प्राप्त नहीं हैं या फिर वे समस्याग्रस्त/फासीवादी विचार नहीं रखते हैं।

- उदाहरण के लिए, यदि एक प्रभावशाली क्वीयर व्यक्ति बहुसंख्यकवादी हिंसा का समर्थन करता है तो उनकी क्वीयर पहचान उनके विचारों को चुनौती देने से परहेज़ करने का कारण नहीं है।
- दूसरा उदाहरण: यदि किसी विशेषाधिकार प्राप्त जाति का क्वीयर व्यक्ति किसी और क्वीयर व्यक्ति पर जातिवादी टिप्पणी करता है, तो जिस पर वह टिप्पणी हुई हो उनके द्वारा इस विषय पर लेख छापा जा सकता है।

- यह समझना ज़रूरी है कि एक क्वीयर व्यक्ति सभी क्वीयर समुदाय/व्यक्तियों का स्वघोषित प्रतिनिधि नहीं हो सकता। इसलिए जब आप विशेष लेख कमीशन और संपादित करें तो ऐसे दावों से सावधान रहें।
- LGBTQIA+ व्यक्ति अपने साथी क्वीयर व्यक्तियों या अन्य लोगों के प्रति भी कट्टर हो सकते हैं। ऐसे विचारों को मंच न दें।
    - उदाहरण के लिए, यदि एक सिस जेंडर समलैंगिक महिला एक लेख में ट्रांसजेंडर महिलाओं की समलैंगिक पहचान पर सवाल उठाना चाहती है तो यह कोई 'चर्चा' का विषय नहीं है और समस्याग्रस्त माना जाना चाहिए। किसी व्यक्ति का जेंडर और यौनिकता स्वयं निर्धारित है और उनके लिए कोई और यह निर्णय नहीं ले सकता चाहे वो कोई और क्वीयर व्यक्ति ही क्यों ना हों।

अगर लेखक क्वीयर नही हैं:

- क्या वे क्वीयर व्यक्तियों के अनुभवों पर कोई रुख अपना रहे हैं? यदि हाँ, तो लेख कमीशन न करें
- यदि वे किसी विषय के विशेषज्ञ हैं तो क्या वे उस विषय पर बात कर रहे हैं या ऐसे पहलू उठा रहे हैं जिन पर क्वीयर व्यक्ति बेहतर बता सकते है?
    - उदाहरण के लिए, यदि कोई वकील विवाह समानता के बारे में लिख रहा है, तो क्या वे कानून, संवैधानिक परिभाषाओं आदि पर फ़ोकस कर रहे हैं या क्वीयर लोगों के जीवन के बारे में धारणाएँ बना रहे हैं? पहली स्थिति मान्य है, दूसरी नहीं।
- यदि वे विषय विशेषज्ञ हैं, लेकिन कोई ऐसा रुख अपना रहे हैं जो विवादास्पद या समस्याग्रस्त प्रतीत होता है तो किसी विश्वसनीय सामुदायिक स्रोत से दूसरी राय लें।
    - उदाहरण के लिए, यदि कोई मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर वैज्ञानिक भाषा के शब्दजाल के पीछे क्वीयर प्रकृति के 'कारणों' पर टिप्पणी कर रहे हैं तो सुनिश्चित करें कि आप किसी LGBTQIA+ मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से इस बारे में राय लें।
- क्या वे ऐसे व्यक्ति हैं जो नियमित रूप से क्वीयर व्यक्तियों के लिए बना मंच घेरते हैं? उनकी पूर्व साख और सार्वजनिक सोशल मीडिया गतिविधि की जाँच करें। यदि वे स्वयं को क्वीयर व्यक्तियों की कहानियों का केंद्र बनाते हैं तो यह एक ख़तरे का संकेत है। यह पहचान हरण के बराबर है और ज़िम्मेदार मीडिया को इसे जगह नहीं देनी चाहिए।
- ऐसे लेखों को स्वीकार न करें जो LGBTQIA+ समुदाय के अंदर किसी एक पहचान के प्रति कट्टर हों या उसे अपमानित करें जबकि दूसरे का समर्थन करें।

- उदाहरण के लिए, नारीवाद पर कोई विशेषज्ञ सिस जेंडर समलैंगिक महिलाओं के समर्थन में लेख लिख सकती है जो ट्रांस महिलाओं के बारे में ग़लत सूचना देता है। ऐसी नारीवादियों को टीईआरएफ - ट्रांस एक्सक्लूजनरी रेडिकल फेमिनिस्ट के नाम से जाना जाता है। यह एक समस्याग्रस्त रुख है और ऐसे विचारों को अस्वीकार कर देना ही बेहतर है।

- यदि कोई व्यक्ति दावा करता है कि वह समलैंगिक समुदायों/व्यक्तियों के लिए काम करता है और एक लेख लिखना चाहता है जो सीधे तौर पर उसे या उसके संगठन (एनजीओ) को विश्वसनीयता प्रदान कर सकता है, तो पहले उसकी पृष्ठभूमि की जाँच कर लें।

  - उदाहरण के लिए, यदि एक एनजीओ चलाने वाला सिस जेंडर व्यक्ति कहता है कि वे क्वीयर लोगों के लिए एक हेल्पलाइन चला रहे हैं, तो उस शहर/राज्य के समुदाय के सदस्यों से बात कर पता करें कि क्या वह हेल्पलाइन वास्तव में काम की है या फिर सिर्फ़ धन प्राप्त करने का ज़रिया मात्र है।

कुछ और बातें

- LGBTQIA+ समुदायों पर लिखे जाने वाले लेखों पर वही मानक लागू करें जो आप सिस जेंडर महिलाओं के मुद्दों पर किसी विशेष लेख के लिए अपनाते हैं,

  - उदाहरण के लिए, यदि आप 'MeToo' में आरोपी किसी व्यक्ति को मंच नहीं देंगे, तो किसी ऐसे व्यक्ति को भी न दें जो क्वीयर समुदाय के प्रति नफ़रत फैलाता हो।

- जब किसी व्यक्ति द्वारा की गई टिप्पणियों या बयानों पर एक राय बनाते हुए लेख लिखा जा रहा है तो सुनिश्चित करें कि यह लेख विचाराधीन कथन को ग़लत ढंग से प्रस्तुत नहीं करता हो, जैसे कि आक्रोश पैदा करने के लिए उस कथन का सिर्फ़ एक हिस्सा ही उठाया जा रहा हो। LGBTQIA+ मुद्दों पर भी नियमित संपादकीय मानकों को लागू करें।

- यदि किसी LGBTQIA+ व्यक्ति ने निजी तौर पर कोई बयान दिया है जिसका कोई सार्वजनिक रिकॉर्ड नहीं है और उस वाकये पर कोई लेखन उस व्यक्ति की छुपी हुई पहचान को उजागर करता है तो उसे स्वीकार करने से पहले अपने विवेक का उपयोग करें।

- यदि किसी लेख से LGBTQIA+ व्यक्तियों/समुदायों को नुकसान होने की संभावना है, तो उसे अस्वीकार कर दें।

फ़ोटो और वीडियो

यह अध्याय LGBTQIA+ व्यक्तियों के फ़ोटो और वीडियो लेने और प्रकाशित करने, LGBTQIA+ व्यक्तियों और उनके मुद्दों के बारे में ख़बर या लेख के लिए प्रतिनिधि छवि या रेखा चित्र का उपयोग करने, और फ़ोटो का अनुशीर्षक देने से संबंधित है।

फ़ोटो पत्रकारिता पाठकों या दर्शकों को किसी भी विषय के करीब लाने का बहुत शक्तिशाली ज़रिया है क्योंकि इसके द्वारा पत्रकार या मीडिया असंख्य भावनाओं को जगा सकते हैं। ख़बर के सार को विशुद्ध रूप से व्यक्त करना और तस्वीर में दिख रहे व्यक्तियों को गरिमापूर्ण तरीके से पेश करना बहुत महत्वपूर्ण है। जब LGBTQIA+ व्यक्तियों और संबंधित घटनाओं की तस्वीरें लेने की बात आती है, तो पत्रकारों को कई बार उनकी पहचान को छुपाने के लिए सावधानी और कुशलता से काम करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि ऐसा न करने पर उनकी सुरक्षा दांव पर लग सकती है।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों/समूहों की फ़ोटोग्राफ़ी/वीडियोग्राफी करने से पहले उनको पूरी जानकारी दे कर सहमति लेना ज़रूरी है। आप यह बात उन्हें समझाएँ कि उस विषय पर आप कौन सा मीडिया इकट्ठा करने की उम्मीद करते हैं, इसका उपयोग कैसे किया जाएगा, ख़बर या लेख का व्यापक विषय क्या होगा, और इसे कहाँ प्रकाशित किया जाएगा। अपने स्रोत के साथ बात करने के लिए कुछ समय निकालें और सुनिश्चित करें कि वे सहज हैं, और कैमरे पर आने के लिए सहमत हैं। इसके अलावा, प्रदर्शित होने के साथ आने वाले संभावित जोखिमों के बारे में बताएँ, जैसे कि उनका फ़ोटो या वीडियो हर जगह वायरल हो जाना, बिना चाहे लोगों के उनके साथ जुड़ने के अनुरोध आना, सोशल मीडिया या वास्तविक जीवन में अवांछित प्रसिद्धि या आलोचना का विषय होना। इसके अलावा, तस्वीरों से LGBTQIA+ व्यक्तियों की जेंडर और यौनिक पहचान ज़ाहिर होने का वास्तविक जोखिम रहता है — उन लोगों के सामने भी जिनको बताने का उनका इरादा नहीं था।
    - उदाहरण के लिए, हो सकता है कि किसी व्यक्ति ने अपनी पहचान लोगों के एक समूह को बताई हो, जैसे उनके मित्र, लेकिन अपने परिवार या सहकर्मियों को नहीं। अगर आप उनकी LGBTQIA+ आयोजन में भाग लेने की तस्वीर प्रकाशित करते हैं, तो यह उस व्यक्ति को मुश्किल में डाल सकता है।
- प्राइड मार्च, सम्मेलन, नाटक, पार्टी, या किसी और LGBTQIA+ व्यक्तियों के आयोजनो की तस्वीरें या वीडियोग्राफी करते समय, या फिर LGBTQIA+ व्यक्तियों के जीवन और मुद्दों के बारे में विशेष कहानियों के लिए फ़ोटो और वीडियो लेते समय, कार्यक्रम के आयोजकों से फ़ोटोग्राफी नीति के बारे में जान लें। यह भी पूछें कि क्या उनके पास उन लोगों की पहचान करने के लिए कोई तरीका है जिन्होंने फ़ोटो और वीडियो में आने की सहमति दी है और जिन्होंने नहीं दी है। एक

तरीका जिस से आयोजक ऐसा कर सकते हैं वह यह है कि कोई स्टिकर या रिबन उन लोगों को पहनने को दे सकते हैं जो फ़ोटो खिंचवाने की सहमति देते हैं।

- प्रतिनिधि छवियों का चयन करते समय कहानी के संदर्भ को समझें। प्राइड मार्च के ऐसे फाइल फ़ोटो का उपयोग करने से बचें जिनसे LGBTQIA+ व्यक्तियों को किसी और ख़बर या लेख में प्रतिनिधियों के रूप में पहचाना जा सकता है। एक तो उस व्यक्ति ने उस विशिष्ट संदर्भ के अलावा अपनी तस्वीर का उपयोग करने के लिए सहमति नहीं दी है। दूसरे, यह व्यक्ति के लिए पेशेवर या व्यक्तिगत मुश्किल पैदा कर सकता है। आप ऐसे फ़ोटो/दृश्यों का उपयोग कर सकते हैं जहाँ चेहरे/पहचान दिखाई नहीं दे रहे हैं।
    - उदाहरण के लिए, यदि कोई कहानी उन चुनौतियों के बारे में है जो LGBTQIA+ व्यक्ति स्वास्थ्य सेवा तक पहुँचने में अनुभव करते हैं, तो उस संदर्भ को दर्शाने वाली तस्वीर का उपयोग करें। यह एक क्वीयर व्यक्ति की तस्वीर हो सकती है जो स्वास्थ्य सेवा का उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। उनकी मर्ज़ी के अनुसार यहाँ उनका चेहरा या अन्य आसानी से पहचाने जाने वाली चीज़ें दिखाई या छुपाई जा सकती हैं। यदि आपके पास उस प्रकार का चित्र नहीं है, तो एक रेखाचित्र का उपयोग करके देखें। लेकिन कृपया किसी अलग संदर्भ में लिए गए इंद्रधनुषी झंडे या क्वीयर व्यक्तियों के फ़ोटो/विज़ुअल का इस्तेमाल न करें।
- कैमरे पर अपने LGBTQIA+ स्रोत को उसी शिष्टता और गरिमा के साथ क़ैद करें जो आप गैर-LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए करते हैं। उनसे अपेक्षा न करें और न ही उन्हें कहें कि वो खुद को किसी खास तरीके से पेश करें। ऐसा करने का मतलब है कि आप उन्हें अपनी पहचान की अदायगी के लिए कह रहें हैं और यह सब LGBTQIA+ व्यक्तियों को एक विशेष प्रारूप में बाँधने जैसा है। सुनिश्चित करें कि ये मानक प्रतिनिधित्वात्मक छवियों पर भी लागू होते हों।
    - उदाहरण के लिए, सूट पहने LGBTQIA+ पेशेवर से आप उनके शरीर पर बने टैटू या पीयरसिंग (छेदन) दिखाने के लिए न कहें, अगर वे स्वेच्छा से ऐसा नहीं करते हैं/नहीं करना चाहते हैं।
- ट्रांसजेंडर और/या नॉन-बाइनरी व्यक्तियों के फ़ोटो/वीडियो प्रदर्शित करते समय, जेंडर संगति प्रक्रिया से पहले और बाद के फ़ोटो का उपयोग न करें, जब तक कि वो ख़ुद उस तरह से प्रस्तुत करने को न कहें।
- LGBTQIA+ लोगों को निराशाजनक, उदास या हिंसक तरीके से तब तक न दिखाएं जब तक कि तस्वीर में दिखाया गया व्यवहार सीधे आपकी कहानी से संबंधित न हो।
- ऐसी फ़ोटो चुनने का प्रयास करें जिससे समुदाय की विविधता दिखाई दे जैसे कि धर्म, उम्र, जेंडर, वर्ग, शारीरिक डील-डौल और शारीरिक या मानसिक असमर्थता जैसी विवधताएँ।
- यदि किसी व्यक्ति की LGBTQIA+ पहचान कहानी के लिए प्रासंगिक है और इन विवरणों को शामिल करना जनहित में है, तो ऐसा संवेदनशीलता और सम्मान के साथ करें। उनकी जेंडर पहचान पूछें, और जानें कि उनका फ़ोटोग्राफ या वीडियो लेने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। मशहूर हस्तियों के मामले में, अगर यह जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है, तो प्रबंधकों या प्रचारकों तक पहुँचने का प्रयास करें।
    - उदाहरण के लिए, आपको एक इंटरसेक्स विवधता वाले व्यक्ति की तस्वीर लेनी है जो बिना सहमति के की गई सर्जरी के कारण स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं। किसी भी तरह से उनकी गरिमा से समझौता करने वाली तस्वीर

लेने के बजाय, आप एक ऐसी तस्वीर ले सकते हैं जो उनकी अन्य रुचियों को दर्शाती हो - जैसे किताब पढ़ते हुए, खेलते हुए, या किसी से बात करते हुए आदि।

- सुनिश्चित करें कि तस्वीरों/दृश्यों का उपयोग केवल उसी मंच (अख़बार, पत्रिका, चैनल या वेबसाइट) पर किया जाए जिसके लिए संबंधित व्यक्ति ने सहमति दी है।
    - उदाहरण के लिए, आप संगठन A के लिए काम करते हैं, और आपने संगठन A के एक लेख के लिए व्यक्ति X का फ़ोटो खींचा है। फिर संगठन B उस लेख को प्रकाशित करने का निर्णय लेता है। जब संगठन B इस तरह के पुन: प्रकाशन के लिए संगठन A से संपर्क करता है, तो सुनिश्चित करें कि आपने उस व्यक्ति की सहमति भी प्राप्त कर ली है।
- एक प्रतिनिधि फ़ोटो के रूप में इंद्रधनुष/इंद्रधनुष ध्वज का इस्तेमाल करना 'सुरक्षित' विकल्प है, लेकिन यह भी बहुत पुराना हो गया है। एक इंद्रधनुष वाली फ़ोटो का उपयोग करने से पहले, अपने आप से पूछें - यदि आप सिस जेंडर-विषमलैंगिक लोगों के बारे में वही ख़बर या लेख लिखते, तो आप किस तरह की फ़ोटो का उपयोग करते? एक इंद्रधनुष/प्राइड ध्वज उस कहानी के लिए कैसे प्रासंगिक है जो इंद्रधनुष/प्राइड ध्वज के बारे में नहीं है? इस से अच्छा कहानी के मूल में जाएं और फिर विचार करें कि इसे कैसे चित्रित किया जाना चाहिए।
    - उदाहरण के लिए, यदि आप जेंडर संगति देखभाल पर कोई लेख लिख रहे हैं, तो अपने आप से पूछें कि क्या प्राइड ध्वज स्वास्थ्य सेवा के लिए प्रासंगिक है? कुछ ट्रांस लोगों के लिए, जेंडर संगति स्वास्थ्य देखभाल उनके दैनिक जीवन का एक हिस्सा है। इसे 'अस्पष्टता' के नज़रिये से देखने के बजाय, 'रोज़मर्रा' के नज़रिये से देखने का प्रयास करें। यदि एस्ट्राडियोल, टेस्टोस्टेरोन शॉट्स, और सर्जरी के निशान रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा हैं, तो आप उन्हें कैसे चित्रित कर सकते हैं कि वह सनसनीखेज़ न लगें? यदि आप शिक्षा पर एक लेख पर काम कर रहे हैं, तो दिखाएं कि कैसे LGBTQIA+ लोग कक्षाओं में जाते हैं, स्कूल पहुंचते हैं, होमवर्क पूरा करते हैं (और साथ ही उनकी पहचान की भी रक्षा करें)।

इमेज 1

इमेज 2

- ऑल्ट टेक्स्ट या वैकल्पिक टेक्स्ट किसी फ़ोटो में जोड़ी गयी वह जानकारी है जो यह बताती है कि उसमें क्या दर्शाया गया है। इसका उद्देश्य लोगों को सुलभ अनुभव प्रदान करना है, विशेष रूप से दृष्टि- बाधित लोगों को। प्रतिनिधि छवियों के लिए ऑल्ट टेक्स्ट में छवि का वर्णन करें। अगर इमेज में इंसान है, तो उस व्यक्ति की पहचान पर फ़ोकस न करें।

- उदाहरण के लिए, इमेज 1 का ऑल्ट टेक्स्ट कह सकता है, "चेन्नई रेनबो प्राइड परेड में इकट्ठा हुए फ़ोटो जर्नलिस्ट्स की एक तस्वीर, इवेंट में प्रतिभागियों को कवर करते हुए। वे सभी कैमरे पकड़े हुए हैं, और केंद्र में एक व्यक्ति का फ़ोटो ले रहे हैं।" केवल यह न कहें, "चेन्नई रेनबो प्राइड परेड में LGBTQIA+ व्यक्तियों को कवर करने वाले फ़ोटो पत्रकारों की एक तस्वीर।"

- छवि 2 के लिए ऑल्ट टेक्स्ट हो सकता है, "इंद्रधनुषी झंडों और पोस्टर के साथ चेन्नई रेनबो प्राइड परेड में चलती हुई एक बड़ी भीड़", यह नहीं "चेन्नई रेनबो प्राइड परेड में लेस्बीयन, गे और ट्रांसजेंडर इकट्ठा हुए"। (LGBTQIA+ शब्दों के सही उपयोग के लिए शब्दावली देखें)

- किसी वीडियो का उपशीर्षक देते समय, उस भाषा से उपयुक्त शब्दों का उपयोग करें जिसमें आप उपशीर्षक दे रहे हैं। यदि ऐसे शब्द या पहचान हैं जो सांस्कृतिक हैं और आप जिस भाषा में उपशीर्षक दे रहे हैं, उससे मिलने वाले शब्द नहीं हैं, तो मूल भाषा के शब्द को बनाए रखें। इसी तरह, जब आप किसी वीडियो के लिए वॉइस-ओवर प्रदान करते हैं, तो स्पीकर की नकल न करें बल्कि संदेश पर ध्यान दें।

  - उदाहरण के लिए, यदि आप जिस व्यक्ति के लिए वॉइस-ओवर प्रदान कर रहे हैं, वह हकलाने/तुतलाने वाला है, तो केवल मूल वक्ता से मेल खाने के लिए वॉइस-ओवर मैसेजिंग में हकलाने/तुतलाने की नकल न करें।

प्राइड और अन्य LGBTQIA+ आयोजन

यह अध्याय प्राइड मार्च, प्राइड माह/क्वीयर हिस्ट्री माह, और LGBTQIA+ व्यक्तियों के बाकी आयोजनों की रिपोर्टिंग के बारे में है।

- एक '**प्राइड इवेंट**' ऐसा कार्यक्रम है जिसका विषय LGBTQIA+ के जीवन, मुद्दों, साहित्य, फिल्मों आदि पर होता है। ज़रूरी नहीं कि इस आयोजन को प्राइड महीने (जून) या क्वीयर हिस्ट्री मंथ के दौरान ही किया जाए। प्राइड के कार्यक्रम ऐसे सांस्कृतिक मंच और सामुदायिक स्थान हैं जो क्वीयर समूहों और व्यक्तियों को एक साथ लाते हैं और उन समूहों, और संगठनों द्वारा आयोजित किए जाते हैं जो LGBTQIA+ व्यक्तियों के अधिकारों के लिए काम करते हैं। यदि आप एक प्राइड आयोजन कवर करने वाले रिपोर्टर हैं, तो यहाँ एक बुनियादी चेकलिस्ट दी गई है जिसे आप देख सकते हैं :
    - आयोजकों से पूछें कि क्या उनके पास मीडिया के लिए कोई प्रेस नोट है। इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि आयोजकों की पृष्ठभूमि क्या है और आयोजन का लक्ष्य क्या है।
    - अधिकांश प्राइड आयोजनों के पीछे एक सोच, एक कहानी होती है। आयोजन के समय पर्याप्त जानकारी प्राप्त करें ताकि आपको एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण मिल सके। उदाहरण के लिए, आयोजकों से इसी तरह के पिछले आयोजनों के बारे में पूछें, उस वक़्त वक्ता कौन थे, उन आयोजनों से क्या हासिल हुआ, इस साल का एजेंडा क्या है, आदि।
    - आपकी ख़बर के साथ उपयोग की जा सकने वाली तस्वीरों के लिए आयोजकों से संपर्क करें। यदि आप आयोजन की तस्वीर खींच रहे हैं, तो पूछें कि क्या यह जानने का कोई तरीका है कि किन लोगों ने मीडिया के उपयोग के लिए फ़ोटो खिंचवाने की सहमति दी है। अगर कोई आयोजन सावर्जनिक है तब भी ध्यान रखें कि लोगों के फ़ोटो प्रकाशित होने से उनके घर या काम की जगह पर उनकी LGBTQIA+ पहचान ज़ाहिर होने का ख़तरा रहता है जो उनके लिए मुश्किल पैदा कर सकता है।
    - आयोजन के विषय पर फ़ोकस करें न कि सिर्फ़ उसके 'क्वीयर रूप' पर। उदाहरण के लिए, यदि आयोजन सिनेमा से संबंधित है, तो LGBTQIA+ के दृष्टिकोण से फ़िल्मों पर ध्यान दें।
    - प्राइड के कार्यक्रम अक्सर LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए एकमात्र सुरक्षित स्थान होते हैं। अगर कोई मीडिया को अपना कथन न देना चाहे या आप से बात करने से इनकार करता है, तो उनके फैसले का सम्मान करें।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों या समूहों द्वारा न्याय के लिए अपनी मांगों को रखने, नीतियों, अदालती फैसलों आदि का विरोध करने के लिए आयोजित किसी प्रदर्शन को कवर करते समय, प्रदर्शनकारियों की मांगों, दृष्टिकोणों और उनके आंदोलन के पीछे के कारणों पर ध्यान दें। प्रदर्शनकारियों के निजी जीवन पर फ़ोकस न रखें।
    - जब नीतियों और अदालती निर्णयों के ख़िलाफ़ विरोध हो तो उन्हें एक सम्पूर्ण रूप से देखने की कोशिश करें। LGBTQIA+ समुदायों के विविध व्यक्तियों से बात करें कि उक्त नीति या निर्णय क्यों और कैसे उनके जीवन को प्रभावित करेंगे।
    - सार्वजनिक स्थानों पर विरोध और प्रदर्शनों को कवर करते समय, LGBTQIA+ व्यक्तियों की गोपनीयता का ध्यान रखें और उनकी तस्वीरें लेने से पहले उनकी सहमति लें। (अधिक विवरण के लिए, 'फ़ोटो और वीडियो' अध्याय देखें)
- प्राइड मार्च को कवर करते समय उनके पीछे की प्रेरणा को समझें। भौगोलिक या कानूनी संदर्भ के आधार पर, प्राइड एक विरोध, एक उत्सव या दोनों हो सकता है।
    - एक प्राइड मार्च के कई आयोजक हो सकते हैं। उनसे पूछें कि इस वर्ष के मार्च का विषय क्या है और उनसे उनके कथनों के साथ एक प्रेस नोट जारी करने के लिए कहें।
    - LGBTQIA+ समुदाय बहुत विविध है और लोगों की कई परस्पर पहचानें हो सकती हैं। अलग-अलग पहचान वाले LGBTQIA+ लोगों से बात करें ताकि यह समझ लगे कि उनके लिए प्राइड का क्या मतलब है और उन्होंने इस आयोजन में हिस्सा क्यों लिया।
    - प्राइड को कवर करते समय, ऐसे हेडलाइंस, ख़बर या लेख लिखने से बचें जो केवल आयोजन की भव्यता या उत्सव के पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा या उनके बारे में प्रदर्शनों, त्योहारों, या सांस्कृतिक कार्यक्रमों को कवर करते समय, कार्यक्रम को वैसे ही देखें जैसे कि आप ऐसे किसी अन्य कार्यक्रम को देखते हैं। उत्सव आयोजित करने के पीछे के कारण को समझने के लिए आयोजकों और विविध प्रतिभागियों से बात करें।
    - यह न मानें कि उस आयोजन में सभी वक्ता, लेखक, कलाकार और तकनीशियन LGBTQIA+ व्यक्ति हैं।
    - क्वीयर वक्ताओं, लेखकों और कलाकारों को उनकी इसी पहचान तक सीमित न रखें। उस क्षेत्र में उनके कार्यों, जीवन और उपलब्धियों के बारे में जानें।
- **रोज़गार मेले या जॉब फ़ेयर:** LGBTQIA+ लोगों को अक्सर काम और कार्यस्थलों पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए आयोजित रोज़गार मेलों या जॉब फ़ेयर में उन्हें आसानी से या कम क्षमता होने पर भी नौकरी मिल जाती है। विभिन्न सामुदायिक संगठन, गैर सरकारी संस्थाएँ, मानव संसाधन कम्पनियाँ और कॉरपोरेट्स द्वारा विविध प्रतिभा को आकर्षित करने के लिए LGBTQIA+ रोज़गार मेले आयोजित किए जाते हैं।

- जॉब फेयर को कवर करते समय, विभिन्न नौकरी चाहने वालों से बात करें और आयोजन के बारे में उनके दृष्टिकोण और कार्यस्थल से उनकी अपेक्षाओं को समझें।

- जॉब फेयर में आए विभिन्न कम्पनियों और संस्थाओं के लोगों से बात करके यह समझें कि क्या उनकी कर्मचारियों के लिए बनी नीतियों और लाभकारी फ़ैसलों में LGBTQIA+ व्यक्ति के बारे में भी सोचा गया है?

- जहाँ तक संभव हो, इस बात पर प्रकाश डालें कि इस तरह के आयोजनों के दौरान विशेष पदों को भरने के लिए कम्पनियाँ और संस्थाएँ किस तरह के पेशेवर खोज रही हैं, ताकि काम की तलाश कर रहे LGBTQIA+ व्यक्ति इन तक पहुंच सकें।

- आयोजन से पहले जॉब फेयर के बारे में समाचार कवरेज भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे अधिक LGBTQIA+ व्यक्तियों तक यह जानकारी पहुंचने में मदद मिलेगी।

- **पारम्परिक कार्यक्रम और त्यौहार:** इनमें धार्मिक और समुदाय-आधारित अनुष्ठान शामिल हैं जैसे तमिलनाडु में कूवागम और कुलासेकरापट्टिनम त्यौहार, कर्नाटक में जोगप्पा त्यौहार आदि। हालाँकि इन सांस्कृतिक त्योहारों में काफ़ी ट्रांस जेंडर और जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग व्यक्ति भाग लेते हैं, विषमलैंगिक या स्ट्रेट लोग भी यहाँ आते हैं।

  - इनमें से कई त्यौहार क्वीयर पहचान पर केंद्रित हैं पर यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह स्थान हमेशा LGBTQIA+ तीर्थयात्रियों का स्वागत नहीं करते हैं। उन विभिन्न बाधाओं पर ध्यान दें जिनका सामना ऐसे त्योहारों का हिस्सा बनने में LGBTQIA+ लोगों को करना पड़ता है।

  - त्योहारों में LGBTQIA+ लोगों की ख़बरें कवर करते समय उनकी निजी ज़िंदगी पर ध्यान न दें और उनकी मर्यादाओं का सम्मान करें।

- **मुख्य धारा की घटनाओं में LGBTQIA+ प्रतिनिधित्व:** बड़े पैमाने पर समाज की ज़रूरतों को पूरा करने वाली घटनाओं को कवर करते समय, याद रखें कि LGBTQIA+ व्यक्ति भी समाज का हिस्सा हैं, जैसे कि अन्य हाशिए पर रहने वाले लोग हैं। उदाहरण के लिए, कुछ नीतिगत निर्णयों के विरोध के एक राष्ट्रव्यापी प्रदर्शन में शायद LGBTQIA+ आवाज़ें भी शामिल हों।

  - यदि इन आयोजनों में प्रदर्शनकर्ता के रूप में LGBTQIA+ व्यक्तियों की भागीदारी है, तो केवल उनकी पहचान पर ध्यान देने के बजाय उनके कार्य पर भी ध्यान दें।

  - आयोजन में LGBTQIA+ व्यक्तियों को कलाकारों और/या दर्शकों के सदस्यों के रूप में शामिल करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में आयोजकों से बात करें।

समाचार और समसामयिकी

इस अध्याय में सामान्य समाचारों में इस्तेमाल होने वाली भाषा, और LGBTQIA+ व्यक्तियों, समुदायों, या मुद्दों के बारे में सामान्य रिपोर्टिंग करते हुए आने वाली चुनौतियों और अपेक्षित व्यवहार को शामिल किया गया है।

- LGBTQIA+ व्यक्ति देश की बड़ी आबादी का हिस्सा हैं, और ऐसे मुद्दे जो बड़े पैमाने पर लोगों को प्रभावित करते हैं, वो ज़ाहिर है LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों को भी प्रभावित करेंगे। सामान्य समाचारों को कवर करते समय इसे ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। यह भी देखें कि कोई घटना LGBTQIA+ व्यक्तियों को कैसे प्रभावित करती है, और अपनी रिपोर्टिंग में उनकी चिंताओं को शामिल करें।
    - उदाहरण के लिए, यदि किसी शहर में बाढ़ आ गई है, तो देखें कि कैसे LGBTQIA+ व्यक्ति सामान्य और विशिष्ट तरीकों से प्रभावित होते हैं। क्या बाढ़ पीड़ितों के लिए बने आश्रयों या कैम्पों में ट्रांस जेंडर और जेंडर फ़्लूइड लोगों के लिए शौचालय हैं? जब पुनर्वास योजनाओं की बात आती है तो क्या क्वीयर लोगों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है? साथ ही, LGBTQIA+ व्यक्तियों की क्षमता और नेतृत्व करने की ताक़त को न भूलें — वे बचाव और राहत प्रयासों में कैसे शामिल हैं? वे जिन समुदायों का हिस्सा हैं, उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए वे कैसे संगठित हो रहे हैं?
- रिपोर्टिंग करते समय यह याद रखना ज़रूरी है कि हाशिए पर रह रहे अल्पसंख्यक समुदाय सरकारों की नीतियों से अधिक प्रभावित होते हैं। LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदाय के नेताओं से बात करें ताकि वे जिन मुद्दों का सामना कर रहे हैं उन्हें आप समझ सकें और उन्हें उजागर कर सकें।
    - उदाहरण के लिए, नोटबंदी जैसी नीति देश को बड़े पैमाने पर प्रभावित करती है पर हाशिए पर रहने वाले व्यक्ति विशिष्ट तरीकों से पीड़ित होते हैं, क्योंकि उनकी पहचान के कारण उन्हें वित्तीय प्रणालियों से वंचित रखा जाता है। पत्रकारों को पूछना चाहिए कि ऐसे लोग, उदाहरण के लिए ट्रांस समुदाय, ऐसी स्थिति से कैसे निपट रहे हैं।
- LGBTQIA+ मुद्दों पर रिपोर्टिंग करते समय पत्रकारों को सिर्फ़ ख़बर फैलाने के लिए पुराने, दक़ियानूसी और सनसनीखेज़ वर्णनों से बचना चाहिए क्योंकि यह हानिकारक हो सकते हैं। पत्रकारों को उन कानूनी और सामाजिक जोखिमों से भी

अवगत होना चाहिए जो LGBTQIA+ व्यक्तियों को झेलने पड़ते हैं। जिन लोगों से आप जानकारी ले रहे हैं या जिनका इंटर्व्यू कर रहे हैं उनको उत्पीड़न और अत्याचार से बचाने के लिए ज़रूरी कदम उठाएँ।

- उदाहरण के लिए, किसी प्रसिद्ध LGBTQIA+ व्यक्ति की मृत्यु की रिपोर्ट करते समय निराधार बातों पर यक़ीन कर के मृत्यु के कारण का अनुमान लगाने से बचें। हालाँकि यह नियम सभी मशहूर हस्तियों और सनसनीखेज़ अपराधों पर लागू होता है, क्वीयर व्यक्तियों को अक्सर कामुक फंतासी नज़रिए से देखा जाता है जिस के बारे में पत्रकारों को सचेत रहना चाहिए।

- एक अन्य उदाहरण: यदि आप समलैंगिक पुरुषों से डेटिंग ऐप्स पर जबरन वसूली या धोखाधड़ी के मामलों के बारे में लिख रहे हैं तो उनकी डेटिंग व्यवहार और ऐसे ऐप्स का उपयोग करने के कारणों के बारे में कोई नैतिक धारणा न बनाएं। यदि यह पहलू आपके लेख के लिए ज़रूरी है, तो सिर्फ़ एक या दो व्यक्तियों से बात करने के बजाय कई समलैंगिक लोगों से बात करें जो डेटिंग ऐपस का इस्तेमाल करते हैं और विविध दृष्टिकोणों को शामिल करने का प्रयास करें।

- एक अन्य उदाहरण: यदि आप एक ऐसी सरकारी नीति के विरोध को कवर कर रहे हैं जो व्यापक जनसंख्या को प्रभावित करती है, तो प्रदर्शनकारियों के बीच LGBTQIA+ व्यक्तियों का होना आम बात है। उनकी मर्जी के बिना अपनी रिपोर्ट में उनकी पहचान को ज़ाहिर न करें।

- हेट क्राइम या LGBTQIA+ व्यक्तियों के विरुद्ध भेदभाव और शारीरिक हमले की रिपोर्टिंग करते समय, पत्रकारों को घटना के लिए सही विशेषणों और वर्णनों का उपयोग करना चाहिए, जिससे यह स्पष्ट हो जाए कि जो हुआ है वह ग़लत है। हेट क्राइम या भेदभाव की घटनाओं में 'दोनों पक्षों' का विचार डालने की कोशिश न करें - ठीक वैसे ही जैसे आप हत्या, यौन उत्पीड़न, या चोरी की घटना में 'दोनों पक्ष' नहीं रखते हैं।

  - उदाहरण के लिए, अगर किसी अजनबी ने सार्वजनिक स्थल पर किसी LGBTQIA+ व्यक्ति पर उसकी जेंडर अभिव्यक्ति के कारण हमला किया है, तो हमला क्यों हुआ, इसका औचित्य प्रकाशित न करें। हमले का ही वर्णन करें, और यदि संभव हो तो पीड़ित की प्रतिक्रिया प्राप्त करें। यह मत कहें, "हमलावर पीड़ित के कपड़ों और मेकअप से उकसा गया था।" इसके अतिरिक्त, आप LGBTQIA+ समुदाय के नेताओं का इंटर्व्यू कर सकते हैं जो ऐसे हमलों की निंदा करें और इन से समुदायों पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों पर रोशनी डालें।

- समाचार रिपोर्ट में LGBTQIA+ व्यक्तियों का कथन लेते समय, उनकी पहचान और अनुभवों का सम्मान करें। इसका अर्थ है उनके सही जेंडर पहचान और नामों का उपयोग करना, और ऐसी भाषा से बचना जो यह संकेत दे कि उनकी पहचान असामान्य या विकृत है।

  - उदाहरण के लिए, यदि आप एक जेंडर नॉन बाइनेरी व्यक्ति का इंटर्व्यू करते हैं जो बिज़नेस के विशेषज्ञ है, तो उनके सही नाम और पहचान देने के अलावा उनकी विशेषज्ञता पर ध्यान दें। आपको अनावश्यक रूप से उनकी पहचान पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है।

- यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि LGBTQIA+ समूह एक जैसे व्यक्तियों का गुट नहीं हैं और उनके अनुभव और दृष्टिकोण काफ़ी भिन्न हो सकते हैं। पत्रकारों को अपनी रिपोर्टिंग में अलग अलग आवाज़ों को शामिल करने का प्रयास करना चाहिए, जिसमें विभिन्न आयु, जाति, वर्ग, जेंडर और अन्य सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग शामिल हों।

- उदाहरण के लिए, यदि आप शिक्षा नीति के बारे में रिपोर्ट कर रहे हैं, तो LGBTQIA+ छात्रों की तलाश करें, जो अपनी क्वीयर पहचान और जाति के कारण हाशिए पर हैं। उनके अनुभव एक विशेषाधिकार प्राप्त जाति के क्वीयर व्यक्ति से, या एक उम्रदराज़ क्वीयर व्यक्ति जो अभी छात्र नहीं हैं से, भिन्न होंगे।

स्वास्थ्य पत्रकारिता - क्वीयर व्यक्तियों के स्वास्थ्य के बारे में हानिकारक बयानबाज़ी को दूर करना

अज़ीफ़ा फातिमा

सार्वजनिक सोच और लोकप्रिय मीडिया में क्वीयर पहचानों और व्यक्तियों के शारीरिक स्वास्थ्य को लेकर भय और उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रति नैतिकता से ओत प्रोत धारणाएं आम बात है। पत्रकारों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे ऐसी रिपोर्ट प्रस्तुत करें जो भयभीत करने और सनसनीखेज़ विवरण देने के बजाय सहानुभूति और निष्पक्षता से समस्याओं को उजागर करे।

LGBTQIA+ व्यक्तियों को, समाज के किसी भी अन्य वर्ग की तरह, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ होती हैं। कई बार वो डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्य सेवा कार्यकर्ताओं से अपनी विशेष ज़रूरतों की वजह से मिलते हैं या राय लेते हैं। क्वीयर पहचान, विशेष रूप से ट्रांसजेंडर पहचान, को लेकर ज़्यादातर लोक धारणाएँ पुराने और ख़ारिज हो चुके चिकित्सा मॉडल और ग़लत विज्ञान पर आधारित है। एक पत्रकार के रूप में यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये धारणाएँ कहाँ से आती हैं ताकि आप समाज को सच्ची और संवेदनशील जानकारी पेश कर सकें।

जब कोई ख़बर ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए जेंडर संगति सर्जरी या अन्य किन्हीं और चिकित्सा प्रक्रियाओं, या क्वीयर व्यक्तियों के लिए एचआईवी/एड्स देखभाल से संबंधित होती है, तो सोशल मीडिया या सनसनीखेज़ मीडिया से ग़लत और भ्रामक जानकारी को इस्तेमाल करने के बजाय किसी योग्य और क्वीयर मामलों में निपुण चिकित्सा विशेषज्ञ से इसके बारे में पूछें। चिकित्सा क्षेत्र में कई LGBTQIA+ व्यक्ति हैं, और वे इन मुद्दों पर बेहतर और अधिक महीन पहलू प्रस्तुत कर सकते हैं। जहाँ संभव हो उनकी आवाज़ को उजागर करना महत्वपूर्ण है।

ध्यान रखने योग्य कुछ अतिरिक्त बातें यहाँ दी गई हैं:

एचआईवी/एड्स रिपोर्टिंग

एचआईवी/एड्स पर रिपोर्टिंग करते समय दो महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखना होगा। पहला यह कि हम 1980 के उस दशक से बहुत दूर आ चुके हैं जब एचआईवी/एड्स की पहचान हुई और कई विवादास्पद, भेदभावपूर्ण नीतियाँ और सामाजिक व्यवहार सामने आए। आज एक एचआईवी पॉज़िटिव व्यक्ति स्वस्थ जीवन जी सकता है।

वर्ष 2012 में, अमरीका के यूनाइटेड स्टेट्स फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (USFDA) ने एमट्रिसिटाबाइन और टेनोफोविर डिसप्रॉक्सिल फ्यूमरेट के जोड़ को प्री-एक्सपोज़र प्रोफिलैक्सिस (PrEP) दवा के रूप में उपयोग करने के लिए मंज़ूरी दी थी। इसके चार साल बाद, 2016 में ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (DCGI) ने इसे भारत में PrEP के रूप में इस्तेमाल करने की मंज़ूरी दे दी। PrEP एचआईवी इन्फ़ेक्शन होने के जोखिम को कम करने के लिए एक एंटीरेट्रोवायरल दवा है। अन्य सुरक्षा तरीक़ों को अपनाने के साथ, PrEP का नियमित सेवन ज़्यादा जोखिम वाले समूहों में एचआईवी के खतरे को काफी हद तक कम करने में कारगर सिद्ध हुआ है। इसके अलावा, जो लोग एचआईवी पॉज़िटिव हो जाते हैं और निर्धारित एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी लेते हैं, उनमें वायरल लोड का स्तर बहुत कम हो सकता है और सेक्स के माध्यम से एचआईवी का संक्रमण नहीं होता। इसलिए, यह बीमारी उतनी भयावह नहीं रह गयी है जितनी चार दशक पहले थी।

एचआईवी/एड्स कार्यकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शब्दावली अक्सर अत्यधिक समस्याग्रस्त होती है। जहाँ भी संभव हो, प्रभावित LGBTQIA+ व्यक्तियों की बात सुनें और उनके चुने शब्द इस्तेमाल करें।

ध्यान देने योग्य दूसरी बात 'MSM' शब्द संक्षेप का उपयोग है, जिसका अर्थ है 'पुरुषों के साथ यौन संबंध रखने वाले पुरुष (Men having Sex with Men)'। 1980 के दशक में, जब अमेरिका ने एचआईवी/एड्स के मामलों की रिपोर्ट करना शुरू किया, तो इसे 'गे- रिलेटेड इम्यून डेफ़िछीएनसी (समलैंगिक पुरुष-संबंधित इम्यूनिटी अभाव)' कहा गया, क्योंकि चिकित्सा समुदाय को लगा कि यह केवल समलैंगिक पुरुषों को प्रभावित करता है। बाद में पता चला कि महिलाएं और विषमलैंगिक संबंध रखने वाले व्यक्ति भी इस वायरस से संक्रमित हो सकते हैं, और यह गर्भावस्था में बच्चों में भी फैल सकता है।

'पुरुषों के साथ यौन संबंध रखने वाले पुरुष', यह शब्द तक़रीबन 1988 से अस्तित्व में है, जबकि संक्षिप्त नाम 'MSM' 1994 में ही उपयोग में आया। चिकित्सा समुदाय का मानना है कि इस संक्षिप्त नाम का उपयोग किसी व्यक्ति के यौन झुकाव को यौन गतिविधि से अलग करने के लिए किया जाता है पर समुदाय के कई सदस्य इसे अमानवीय और अपमानजनक कहते हैं।

आज तक भी, एचआईवी रोकथाम में शामिल कार्यकर्ता और अधिकारी समलैंगिक, बाइसेक्शूअल व्यक्तियों और कई मामलों में ट्रांस व्यक्तियों के लिए भी 'MSM' शब्द का उपयोग करते आए हैं। आम समझ यह है कि केवल ये लोग ही एक विशेष यौन गतिविधि में संलग्न हैं। इस तरह की ग़लत जानकारी को सुधारना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक क्वीयर व्यक्ति की यौन गतिविधि पर केंद्रित है एवं उनकी मानवीयता का हनन करती है। ऐसी सोच को बढ़ाने के बजाय इस बात पर ध्यान दें कि इन व्यक्तियों की ज़रूरतें क्या हैं और वे उन्हें अपने बारे में कही जाने वाली कहानियों में कैसे व्यक्त करना चाहते हैं।

हमें उन व्यक्तियों की पहचान के महत्व को भी ध्यान में रखना चाहिए जिनके बारे में हम रिपोर्ट करते हैं, खासकर जब एचआईवी/एड्स पर रिपोर्टिंग की बात आती है। भारत में, एचआईवी रोगी की सहमति के बिना उसकी पहचान का खुलासा करना प्रतिबंधित है।

ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस और एक्वायर्ड इम्यून डेफिशिएंसी सिंड्रोम (रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 2017

इस अधिनियम के अनुसार, किसी व्यक्ति की एचआईवी स्थिति का खुलासा रोगी को पूरी जानकारी दे कर ली गयी सहमति के बिना कोई नहीं कर सकता, स्वास्थ्यकर्मी भी नहीं। कानून स्पष्ट रूप से कहता है कि "चिकित्सक या काउन्सलर को छोड़कर कोई भी स्वास्थ्य कार्यकर्ता किसी व्यक्ति की एचआईवी पॉज़िटिव स्थिति का खुलासा उस व्यक्ति के पार्ट्नर को नहीं करेगा।" केवल कुछ परिस्थितियों में ही यह किया जा सकता है, जो हैं:

- यदि एचआईवी पॉज़िटिव व्यक्ति के साथी को रोगी से एचआईवी फैलने का ख़तरा हो
- यदि रोगी को अपने साथी को सूचित करने के लिए काउन्सलिंग दी गयी हो
- यदि स्वास्थ्य सेवा कार्यकर्ता को यकीन है कि मरीज़ अपने साथी को सूचित नहीं करेगा
- यदि रोगी को सूचित किया गया है कि यह जानकारी दी जा रही है

इसलिए, यदि हम, पत्रकार के रूप में, अपनी रिपोर्टिंग के दौरान उनकी एचआईवी स्थिति का खुलासा करते हैं तो यह एक अपराध है।

मानसिक स्वास्थ्य के बारे में रिपोर्टिंग

जब मानसिक स्वास्थ्य पर रिपोर्टिंग की बात आती है तो बहुत से लोग आत्महत्या पर रिपोर्टिंग करने के दिशानिर्देशों तक ही सोच पाते हैं। पर मानसिक स्वास्थ्य रिपोर्टिंग LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा झेले गए सामाजिक दमन और उसके परिणामों को भी कवर करती है।

जब LGBTQIA+ व्यक्तियों से संबंधित मानसिक स्वास्थ्य को कवर करने की बात आती है तो दो मुख्य पहलू होते हैं: क्वीयर लोगों के वास्तविक मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे, और दूसरा, कैसे क्वीयर प्रकृति को एक मानसिक बीमारी के रूप में देखा जाता है और क्वीयर लोगों का 'इलाज' करने की कोशिश की जाती है।

एक और महत्वपूर्ण नियम है जिसे हमें रिपोर्टिंग/संपादन के दौरान ध्यान में रखना चाहिए - सभी पहचानें स्वयंनिर्धारित हैं और उनमें से कोई भी किसी भी तरह से मानसिक बीमारी से संबंधित नहीं है। किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान, अभिव्यक्ति या यौनिकता निर्धारित करने के लिए कोई परीक्षण नहीं हैं। हमें किसी व्यक्ति की बताई गई पहचान का हमेशा सम्मान करना चाहिए और उस पर विश्वास करना चाहिए। यदि कोई, चाहे वह विशेषज्ञ हो, डॉक्टर हो, या मनोवैज्ञानिक हो, दावा करता है कि कोई व्यक्ति 'बचपन के आघात' के कारण क्वीयर है या कोई व्यक्ति 'यौन शोषण' के कारण समलैंगिक है, या वह समलैंगिकता का 'इलाज' करने का दावा करता है, तो हमें उसकी बात पर यक़ीन नहीं करना चाहिए क्योंकि यह सम्भव नहीं है।

पॉप संस्कृति और मीडिया अक्सर उन डॉक्टरों को जगह देते हैं जो ग़लत दावा करते हैं कि क्वीयर प्रकृति 'सिर्फ एक व्यक्ति के दिमाग में होती है'। ऐसी कई फिल्में और किरदार हैं जो LGBTQIA+ लोगों की ग़लत छवि दिखाते हैं, और फिर यही जनता की राय बन जाती है।

क्वीयर प्रकृति का मानसिक विकारों की श्रेणी से निकाला जाना

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) मानसिक विकार को इस प्रकार परिभाषित करता है: "मानसिक विकार का मतलब है किसी चिकित्सक द्वारा व्यक्ति के बोध, भावनात्मक नियंत्रण या व्यवहार में महत्वपूर्ण गड़बड़ी पाए जाना।" अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन (APA) मानसिक बीमारी को "भावना, सोच या व्यवहार (या इनके संयोजन) में परिवर्तन से जुड़े स्वास्थ्य विकार" के रूप में परिभाषित करता है।

APA मानसिक विकारों के बारे में एक गाइड, मूल्याँकन और सांख्यिकीय मैनुअल (DSM), प्रकाशित करता है जिसे दुनिया के कई हिस्सों में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा उपयोग किया जाता है। काफ़ी विवरणों, लक्षणों और अन्य मानदंडों के आधार पर यह पुस्तिका कई मानसिक विकारों का वर्गीकरण और मूल्याँकन करती है। 1952 से - जब DSM-I छपी थी - इसमें समलैंगिकता को एक 'मानसिक बीमारी' के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। DSM-I ने समलैंगिक होने को एक "सोशियोपैथिक व्यक्तित्व विकार" के रूप में वर्णित किया था। इस तर्क का आधार यह था कि कोई भी संभोग जिस से प्रजनन नहीं होता वह 'अप्राकृतिक' है।

1960 के दशक के बाद से, LGBTQIA+ कार्यकर्ताओं ने APA के इस वर्गीकरण का विरोध करना शुरू किया और सेमिनार और सम्मेलनों में भाग लेने लगे। 1972 में हुए APA सम्मेलन में एक समलैंगिक मनोचिकित्सक, डॉ. जॉन फ्रायर, पहली बार LGBTQIA+ मुद्दों पर एक पैनल चर्चा में दिखाई दिए। अपनी पहचान छिपाने के लिए मास्क पहने और आवाज़ बदलने वाले माइक्रोफोन का उपयोग करते हुए, डॉ. फ्रायर ने खुद को "डॉ. हेनरी एनोनिमस" के रूप में प्रस्तुत किया, और ज़ोर दिया कि समलैंगिक होना कोई बीमारी नहीं है।

1973 में, APA ने सम्मेलन के सभी सदस्यों से इस मुद्दे पर मतदान करने के लिए कहा कि क्या समलैंगिकता को DSM से हटा दिया जाना चाहिए या बरकरार रखा जाना चाहिए; 5,854 मनोचिकित्सकों ने इसे हटाने के लिए और 3,810 ने इसे बरकरार रखने के लिए मतदान किया। इस तरह समलैंगिकता को 'मानसिक बीमारी' की श्रेणी से बाहर कर दिया गया। हालाँकि, 1987 तक DSM में इसका उल्लेख 'यौन आकर्षण विघ्न' के रूप में किया जाता रहा।

1990 में WHO ने अंतर्राष्ट्रीय रोगों के वर्गीकरण (ICD) से समलैंगिकता को हटाया और काफ़ी देर बाद, 2019 में WHO ने 'ट्रांसजेंडर' को "मानसिक विकार" के रूप में परिभाषित करना बंद कर दिया। इसके संशोधित संस्करण, ICD-11 में, "जेंडर पहचान विकार" को "जेंडर असंगति" में बदल दिया गया।

आत्महत्या पर रिपोर्टिंग

भारत में आत्महत्या की रोकथाम एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या है। WHO के अनुसार, विश्व स्तर पर हर साल लगभग 8,00,000 आत्महत्याएँ होती हैं, और दुनियाभर में आत्महत्याओं से होने वाली मौतों में से 36.6% भारत में होती हैं। आत्महत्या एक जटिल मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समस्या है जिसका कोई एक विशेष कारक नहीं होता। मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, वित्तीय बोझ, गरीबी, मानसिक आघात, दुर्व्यवहार, बेरोजगारी, भेदभाव, भावनात्मक विपत्ति, जीवन में कोई और संकट, पुरानी शारीरिक बीमारियां, समर्थन की कमी, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच की कमी आदि कई कारणों से हो सकती हैं।

विश्व स्तर के शोध से पता चलता है कि किशोर वर्ग विशेष रूप से आत्महत्या के ख़तरे में रहता है - विशेषकर समलैंगिक, बाइसेक्शूअल और ट्रांसजेंडर युवा। स्कूलों में दूसरे छात्रों द्वारा किए जाने वाले उत्पीड़न के अध्ययन से पता चलता है कि भेदभाव, धमकियों, और अलग थलग पड़ जाने के कारण LGBTQIA+ युवाओं में आत्मघाती व्यवहार अधिक हो सकता है। दस देशों के अध्ययनों से पता चला है कि LGBTQIA+ युवाओं में अपने विषमलैंगिक साथियों की तुलना में आत्महत्या का जोखिम अधिक होता है।

LGBTQIA+ व्यक्तियों के बीच वास्तविक आत्महत्या दर का पता नहीं है क्योंकि मृत्यु रिकॉर्ड में यौन आकर्षण और जेंडर पहचान की सूचना नहीं दी जाती। शोध में पाया गया है कि क्वीयर व्यक्तियों में आत्महत्या के जोखिम का ज़्यादातर कारण वह तनाव है जो उन्हें तब होता है जब समाज उन्हें हीन समझता है या नफ़रत की भावना से देखता है।

मीडिया आत्महत्या की रोकथाम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि इसका व्यक्तियों और समुदायों के दृष्टिकोण, विश्वास और मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, आत्महत्या का उचित मीडिया चित्रण आत्महत्या को रोकने के लिए प्रभावी रणनीतियों में से एक है। आत्महत्याओं की सकारात्मक और ज़िम्मेदार रिपोर्टिंग किसी विचलित व्यक्ति को मदद मांगने के लिए बढ़ावा देती है और आत्महत्या की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ाती है। साथ ही, गैर-ज़िम्मेदाराना रिपोर्टिंग के परिणामस्वरूप लोग आत्मघाती व्यवहार का अनुसरण कर सकते हैं। कई बार विचलित व्यक्ति अपनी स्थिति का मिलान आत्महत्या की ख़बर/रिपोर्ट में दर्शाए गए इंसान के साथ करते हैं और उनके आत्मघाती व्यवहार की 'नकल' करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य देखरेख अधिनियम, 2017 में कहा गया है कि आत्महत्या का प्रयास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को गंभीर तनाव में माना जाएगा और उस पर भारतीय दंड संहिता (IPC) 1860 की धारा 309 (जो आत्महत्या के प्रयास को अपराध मानता है) के तहत मुकदमा नहीं चलाया जाएगा। केंद्र या राज्य सरकार का कर्तव्य है कि वह ऐसे व्यक्ति को देखभाल, उपचार और पुनर्वास प्रदान करे जिसने गंभीर तनाव में आत्महत्या का प्रयास किया था, जिस से उसके दोबारा ऐसा करने का जोखिम कम किया जा सके।

भारत में LGBTQIA+ व्यक्तियों की आत्महत्याओं पर रिपोर्टिंग के विश्लेषण से पता चला कि अधिकांश ख़बरों के शीर्षक में जेंडर (93.3%), आत्महत्या का कारण (73.3%), और जीवन की घटनाओं (60.7%) पर चर्चा की गई। अधिकांश रिपोर्टों में व्यक्ति का नाम, उम्र, जेंडर, व्यवसाय, आत्महत्या का तरीका, आत्महत्या का स्थान और जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया गया। तक़रीबन 23% रिपोर्टों में आत्महत्या के विस्तृत चरणों का वर्णन किया गया था, जबकि क्रमश: 20% और 28.2% समाचार रिपोर्टों में आत्महत्या समझौते और सुसाइड नोट का उल्लेख किया गया था। बहुत कम समाचार रिपोर्टों (<20%) में सहायता सेवाओं के बारे में जानकारी थी। आत्महत्याओं पर रिपोर्टिंग के लिए WHO के मीडिया दिशानिर्देशों के पालन के मामले में, स्थानीय भाषा की ख़बरों का प्रदर्शन अंग्रेज़ी भाषा की रिपोर्टों की तुलना में काफी खराब रहा। किसी भी स्थानीय भाषा की रिपोर्ट में आत्महत्या से संबंधित आंकड़ों, आत्महत्या की रोकथाम, या सहायता सेवाओं के संपर्क सूत्रों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

स्वास्थ्य

यह अध्याय LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों के लिए स्वास्थ्य देखभाल के बारे में रिपोर्ट करने और लिखने से संबंधित है, जिसमें जेंडर संगति प्रक्रिया, एचआईवी/एड्स जैसे विषय भी शामिल हैं।

जब LGBTQIA+ व्यक्तियों से जुड़े स्वास्थ्य समाचारों की बात आती है, तो बड़ी संख्या में लेख केवल जेंडर संगति सर्जरी पर केंद्रित होते हैं - ज्यादातर वो सर्जरी जो ग़लत तरीक़े से हुई हो। हालाँकि सर्जरी के बारे में लिखना और बातचीत करना ज़रूरी है, पर हम यह भी देखें कि इसके अलावा स्वास्थ्य क्षेत्र में क्वीयर लोगों के पास किस तरह की सुविधाएँ हैं, नीतियाँ किस तरह से तैयार और लागू हो रही हैं और इन सब में समुदाय के सदस्यों की ज़रूरतों की क्या स्थिति है। यह भी ज़रूरी है कि हम उस भाषा का उपयोग करें जिसमें संबंधित व्यक्ति सहज हो। यहाँ कुछ बातें दी गयी हैं जो हमें LGBTQIA+ समुदायों से संबंधित स्वास्थ्य के मुद्दों को रिपोर्ट/संपादित करते समय ध्यान में रखनी चाहिए:

- जिस व्यक्ति से आप बात कर रहे हैं, उसे पीड़ित के रूप में न मानें या ऐसा न मानें कि उन्हें उस विषय की जानकारी नहीं हैं, जिसके बारे में वे बात कर रहे हैं। पत्रकारों को याद रखना चाहिए कि व्यक्ति का ख़ुद का जिया हुआ अनुभव महत्वपूर्ण है, और कई LGBTQIA+ व्यक्ति अपनी स्वास्थ्य परिस्थितियों के बारे में जानने में बहुत समय और ऊर्जा खर्च करते हैं क्योंकि अधिकांश डॉक्टरों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के पास क्वीयर लोगों के शारीरिक और मानसिक समस्याओं के बारे में बहुत कम ज्ञान या अनुभव होता है।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच पाने की उनकी क्षमता पर रिपोर्ट करते समय, पत्रकार को ऐसी जानकारी मिल सकती है जिसके बारे में उन्हें पहले पता नहीं था; आपके कुछ सवाल हो सकते हैं कि विषय के बारे में कैसे लिखें। ऐसी स्थितियों में, लिखने से पहले विषय को समझने के लिए समय निकालें और अपने स्रोतों और विशेषज्ञों से जानकारी मांगें। यह भी ज़रूरी है कि आपके सवाल सम्मानजनक तरीके से और बिना किसी की निजता में दखल दिए बिना पूछे जाएँ।

    - यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रश्न मौजूदा कहानी से संबंधित होने चाहिए, न कि उस जिज्ञासा पर आधारित जो आम जनता LGBTQIA+ व्यक्तियों के शरीर या उनके व्यक्तिगत संबंधों के बारे में रखती है। कभी भी ऐसे दखलंदाज़ी वाले सवाल न पूछें, जो आप किसी और से नहीं पूछना चाहेंगे।

- उदाहरण के लिए, अपने स्रोत से उनके जननांगों के बारे में प्रश्न न पूछें। यदि कोई प्रश्न किसी सिस जेंडर महिला से पूछे जाने पर बहुत असंवेदनशील या दखलंदाज़ी वाला लगता है, तो यह LGBTQIA+ व्यक्ति के लिए भी बहुत असंवेदनशील या दखलंदाज़ी वाला है।

- उन सीमाओं से अवगत रहें जिनके भीतर आप उन से मिल रहे हैं। अपने स्रोत से पहले ही पूछ लें कि क्या कुछ ऐसे विषय हैं जिनके बारे में वे बात नहीं करना चाहते, और इन सीमाओं का सम्मान करें। अगर वो बात करना बंद कर दे या स्पष्ट रूप से बात नहीं करना चाहे, तो ज़बरदस्ती न करें। अपने अनुभव साझा करने वाले व्यक्ति को बातचीत की दिशा निर्धारित करने दें।

  - उदाहरण के लिए, यदि आप किसी ट्रांस व्यक्ति से ग़लत सर्जरी या खराब स्वास्थ्य सेवा के अनुभव के बारे में बात कर रहे हैं, तो ऐसे सवाल पूछें जिनका जवाब सिर्फ़ हाँ या ना में न हो बल्कि वह अपने हिसाब से जवाब दे पाएँ और बातचीत की दिशा निर्धारित कर सके। अगर वे सर्जरी के बाद पेश आने वाली कठिनाई के विवरण में नहीं जाना चाहते हैं, तो अधिक दबाव न डालें। उन्हें चुनने दें कि क्या बात करनी है और क्या नहीं।

- जब किसी के निजी जानकारी लिखने की बात आती है तो उन से सहमति मांगें।

  - उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति पत्रकार के साथ एक अंतरंग चिकित्सा परीक्षा के अपने अनुभव को साझा कर सकते हैं ताकि पत्रकार स्थिति को समझ पाए, लेकिन हो सकता है कि वह इसे उतने विस्तार से प्रकाशित न करना चाहे। प्रकाशन से पहले हमेशा उनके बारे में आप क्या लिख रहे हैं उन्हें बताएँ।

- किसी व्यक्ति के शरीर या जननांगों से संबंधित किसी स्वास्थ्य समस्या पर रिपोर्ट करते समय उन अंगों की अति स्पष्ट (ग्राफ़िक) फ़ोटो प्रकाशित न करें। (अधिक जानकारी के लिए 'फ़ोटो और वीडियो' अध्याय देखें)

- चिकित्सकीय दुर्व्यवहार या दुर्व्यवहार की किसी घटना की बारे में पूछते समय, यह ज़रूरी है कि आप सटीक विवरण की अपनी ज़रूरत के चलते उस व्यक्ति की मानसिक स्थिति न बिगाड़ दें। जहाँ तक संभव हो केवल उस जानकारी के बारे में पूछें जिसे बताते समय वह विचलित न हों। आपसे बात करते समय उन्हें अपने शब्दों के बारे में सोचने के लिए समय और स्थान दें। यदि चिकित्सा प्रक्रिया/सर्जरी/स्वास्थ्य स्थिति का सटीक विवरण कहानी में कोई ख़ास मायने नहीं रखता, तो उसे साझा करने पर ज़ोर न दें।

- किसी व्यक्ति को कभी ग़लत जेंडर से संबोधित न करें। जबकि यह नियम हर जगह लागू होता है, पर विशेष रूप से स्वास्थ्य संबंधी कहानियों की रिपोर्ट करते समय इसे याद रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

  - उदाहरण के लिए, जेंडर संगति प्रक्रिया से गुज़रने वाले एक ट्रांस पुरुष के बारे में रिपोर्ट करते समय, यह न कहें, "वह एक ट्रांस पुरुष बनने के लिए सर्जरी करवा रही है।"

    - नोट: अगर कोई व्यक्ति अपनी पहचान एक ट्रांस व्यक्ति के रूप में करते हैं तो उन्हें वैसे ही सम्बोधित किया जाना चाहिए, चाहे वे कितने भी मेडिकल या सर्जिकल हस्तक्षेप से गुज़रे हों, या न भी गुज़रे हों। सर्वोच्च न्यायालय ने 2014 में अपने NALSA बनाम भारत संघ के फैसले में, व्यक्तियों को अपने जेंडर पहचान को स्वयं निर्धारित करने का अधिकार दिया है। यह न कहें, "व्यक्ति X जल्द ही एक ट्रांस पुरुष बन जाएगा," या "व्यक्ति Y एक ट्रांस महिला बनने वाली है।" क्योंकि वह बिना सर्जरी के भी ट्रांस पुरुष या ट्रांस महिला ही हैं।

- याद रखें कि जेंडर संगति सर्जरी चिकित्सा तंत्र का सिर्फ एक हिस्सा है। स्वास्थ्य संबंधी ख़बरों को रिपोर्ट करते समय सिर्फ़ इसी पर ध्यान न दें।

- किसी भी स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों, ख़ास तौर पर अवांछित/ग़लत तरीक़े से की गयी सर्जरी या चिकित्सा उपचार के कारण होने वाली मौतों, पर रिपोर्ट करते समय समुदाय के सदस्यों और परिवार/दोस्तों के साथ बात करना महत्वपूर्ण है। सिर्फ़ डॉक्टर और चिकित्सा कार्यकर्ताओं के कथन लेने तक सीमित न रहें। यदि आवश्यक हो, तो ऐसे डॉक्टर और चिकित्सा कार्यकर्ता खोजें जो स्वयं LGBTQIA+ समुदाय से हों और उनके विचार लें। हालांकि डॉक्टर मेडिकल के मुद्दे को बेहतर तरीके से समझा सकते हैं, पर वह लोग जिनके साथ उक्त व्यक्ति रहते थे यह जानते होंगे कि वास्तव में क्या हुआ था, और चिकित्सय हस्तक्षेप से पहले की उनकी दुनिया कैसी थी।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में बात करने के लिए विशेषज्ञों का चयन करते समय, आप समुदाय के सदस्यों से पूछ सकते हैं कि विश्वसनीय विशेषज्ञ कौन है। जैसे कि, कोई भी स्वास्थ्य कार्यकर्ता विशेषज्ञ होने का दावा कर सकता है या विशेषज्ञ हो सकता है, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे समुदाय से जुड़े हों। इसलिए आपको ज़मीनी तौर पर काम करने वाले विशेषज्ञों की पहचान करनी चाहिए, जिसके लिए समुदाय के सदस्यों से पूछा जा सकता है।

    - उदाहरण के लिए, एक समलैंगिक व्यक्ति जिसे उसके अपने समुदाय में विशेषज्ञ माना जाता है, ट्रांस समुदाय के बारे में समस्याग्रस्त विचार रख सकता है।

    - एक और उदाहरण है - ऐसे डॉक्टर को ढूंढना आसान है जो जेंडर संगति सर्जरी करने में विशेषज्ञ होने का दावा करता हो, लेकिन समुदाय के सदस्य कई कारणों से उस विशेष डॉक्टर को पसंद नहीं करते हों। विशेषज्ञता होने के अलावा, डॉक्टर को समुदाय के सदस्यों के संपर्क में भी होना चाहिए।

- यौन संपर्क से फैलने वाली बीमारियों, जैसे एचआईवी, मंकीपॉक्स, आदि के बारे में रिपोर्ट करते समय LGBTQIA+ व्यक्तियों को कलंकित करने से बचें। एचआईवी के बारे में रिपोर्ट करते समय विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए क्योंकि इस वायरल बीमारी से संबंधित बहुत सा चिकित्सा इतिहास समलैंगिक समुदाय को दोष देता रहा है।

- समुदाय के सदस्यों द्वारा पसंद की जाने वाली भाषा का प्रयोग करें और व्यक्तियों के चिकित्साकरण से बचें। क्योंकि इसमें भी इस्तेमाल किए गए बहुत से शब्द एचआईवी/एड्स के इतिहास से उपजे हैं। (एचआईवी/एड्स के इतिहास और समलैंगिक व्यक्तियों के चिकित्साकरण के बारे में जानने के लिए 'स्वास्थ्य पत्रकारिता - क्वीयर व्यक्तियों के स्वास्थ्य के बारे में हानिकारक बयानबाज़ी को दूर करना' अध्याय देखें)

मानसिक स्वास्थ्य और आत्महत्या

यह अध्याय मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों और बीमारियों, आत्महत्या, और मानसिक स्वास्थ्य की उन अपेक्षाओं के बारे में है जो कि ट्रांस और इंटरसेक्स विविधता वाले व्यक्तियों से जेंडर संगति प्रक्रियाओं से पहले की जाती है।

- आत्महत्या की घटनाओं पर रिपोर्ट करते समय इसे किसी एक विशेष कारण तक सीमित न करें। इसके बजाय, आप इसका विस्तार कर यह देख सकते हैं कि समाज LGBTQIA+ व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करता है, और इसने उन्हें वर्षों से कैसे परेशान किया है। अधिकांश आत्महत्याएँ केवल एक वजह से नहीं होती हैं, इसलिए पत्रकारों को किसी व्यक्ति के निर्णय के पीछे के विभिन्न कारणों पर गौर करना चाहिए। आपको पूछना चाहिए कि व्यवस्था और समाज में क्या बदला जा सकता है ताकि ऐसी मौतों से बचा जा सके, और LGBTQIA+ व्यक्तियों के जीवन में तनाव को खत्म किया जाए।
    - उदाहरण के लिए, यह न कहें, "एक ट्रांस महिला 'X' ने अपने प्रेमी द्वारा धोखा दिए जाने के बाद आत्महत्या कर ली," या, "क्वीयर व्यक्ति साथी या परिवार के साथ लड़ाई के बाद मृत पाया गया।" यह आत्महत्या के कारण को उनकी मृत्यु से ठीक पहले उनके जीवन में घटी एक घटना तक सीमित कर देता है। हालांकि यह घटना उन्हें वह निर्णय लेने के लिए उतेजित कर सकती है, पर अक्सर कई कारण होते हैं - जिनमें भेदभाव, परिवार के समर्थन की कमी, उत्पीड़न आदि शामिल हैं - जो उनके दिमाग में काफ़ी समय से तनाव पैदा कर रहे होंगे।

- ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण परिभाषाओं और स्वास्थ्य चिकित्सकों के बीच ग़लत समझ के कारण क्वीयर प्रकृति और मानसिक बीमारी के बीच निरंतर भ्रम बना हुआ है। इसी आधार पर LGBTQIA+ व्यक्तियों को अक्सर 'विकृति प्रक्रिया' के ज़रिए परेशान किया जाता है। यह एक हानिकारक और अज्ञानतापूर्ण प्रयास है जो प्रार्थना, जादू टोना, बुनियादी ज़रूरतों से व्यक्ति को वंचित करने, बिजली के झटके, काउन्सलिंग, हिंसा, और कुछ मामलों में यौन हिंसा तक के इस्तेमाल से किसी व्यक्ति की क्वीयर प्रकृति को 'दबाने' के लिए किया जाता है।

  'विकृति प्रक्रिया' से संबंधित समाचारों को कवर करते समय यह समझना उचित होगा कि कैसे दशकों से LGBTQIA+ व्यक्तियों के शरीर और दिमाग का चिकित्साकरण किया गया है। चिकित्साकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा गैर-चिकित्सीय समस्याओं को चिकित्सा समस्याओं के रूप में परिभाषित किया जाता है और उनका इलाज किया जाता है। 'विकृति प्रक्रिया', हालांकि किसी व्यक्ति की क्वीयर प्रकृति का 'इलाज' करने के उद्देश्य से है, पर यह सिर्फ़ उन्हें गम्भीर

भावनात्मक और मानसिक तनाव देती है। इसलिए, किसी व्यक्ति के जीवन में ऐसे अनुभवों के बारे में बात करते समय सावधान और संवेदनशील रहना महत्वपूर्ण है।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों के बीच मानसिक अस्वस्थता को लेकर किसी भी आंकड़े या डेटा का इस्तेमाल करते समय याद रखें कि इस समस्या के पीछे के कारण जटिल हैं, जैसे समाज द्वारा ग़लत समझा जाना, हिंसा, उनकी पहचान मिटाने का प्रयास, पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला आघात, और अन्य भेदभाव जो इस मुद्दे में योगदान करते हैं। इसलिए केवल यह समझ लेना ठीक नहीं होगा कि मानसिक समस्या व्यक्तिगत मुद्दा है। जहाँ मानसिक स्वास्थ्य प्रणाली और LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है, वहीं अन्य कारणों और उन्हें कम करने के तरीकों के बारे में सोचना भी ज़रूरी है।

- रिपोर्टिंग के दौरान, यदि आपको किसी मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता से बात करनी है, तो दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। सबसे पहले, ऐसे सभी कार्यकर्ता कानूनी रूप से अपने मरीज़ों के बारे में निजी जानकारी साँझा न करने के लिए बाध्य हैं, इसलिए यदि आप कुछ विवरण प्राप्त नहीं कर पाए, तो इसका मतलब है कि वे गोपनीय है। फिर से विचार करें कि क्या यह जानकारी आपकी ख़बर के लिए सच में ज़रूरी है? दूसरे, कार्यकर्ता द्वारा साझा किए गए किसी भी जानकारी को संबंधित व्यक्ति की सहमति के साथ ही लिखा या प्रकाशित किया जाना चाहिए। यदि आप किन्हीं विभिन्न कारणों से उनकी अनुमति प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं, तो आपको इसे नहीं लिखना चाहिए।

आत्महत्या को कैसे कवर करें:

- आत्महत्या की रिपोर्टिंग के समय उसके रोकथाम पर ध्यान दें।

- ख़बर को उसी तरह रिपोर्ट करें जैसे आप किसी अन्य गैर-क्वीयर व्यक्ति की आत्महत्या की ख़बर को करते हैं, बिना उसे सनसनीखेज़ बनाए।

- ऐसी भाषा का उपयोग न करें जो आत्महत्या को सनसनीखेज़ बनाती हो, सामान्य वाक्या बनाती हो या ज़रूरत से ज़्यादा सहज दिखाती हो। आत्महत्या की रिपोर्टिंग में 'आत्महत्या महामारी', 'सफल आत्महत्या', या 'राजनीतिक आत्महत्या' जैसे वाक्यांश उपयोग न करें।

- आत्महत्या के साथ जुड़े लांछन या कलंक को बढ़ाने से बचें। आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को दोषी न ठहराएँ, इससे उस परिवार को दुख पहुंचता है जिन्होंने अपने प्रियजन को खो दिया है साथ ही यह आत्महत्या को जुर्म का जामा देकर मरने वाले व्यक्ति को ज़िम्मेदार ठहराता है।

- ख़बर/रिपोर्ट की 'योग्यता का मूल्यांकन' उसके लोगों पर पड़ने वाले नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव के हिसाब से करें

- विचार करें कि आत्महत्या की रिपोर्ट का लोगों पर कैसा प्रभाव पड़ेगा, ख़ास तौर पर उस व्यक्ति के जैविक परिवार के सदस्यों, उसके द्वारा चुने हुए परिवार, दोस्तों और बाकी LGBTQIA+ समुदाय के सदस्यों पर या फिर ऐसे व्यक्ति पर जिन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया और बच गए हों।

- मृत व्यक्ति या आत्महत्या का प्रयास करने वाले व्यक्ति का नाम, फ़ोटो, सुसाइड नोट (यदि कोई हो), चैट, यौनिक और जेंडर पहचान, या कोई अन्य व्यक्तिगत विवरण बिना उसके जन्मजात परिवार, चुने हुए परिवार और जिस व्यक्ति ने आत्महत्या का प्रयास किया है उसकी सहमति के बिना प्रकट न करें।

- आत्मघाती सोच पर काबू पाने के बारे में व्यक्तिगत कहानियों को रिपोर्ट करें जिससे सकारात्मक सोच बढ़ेगी और दूसरों को मदद माँगने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

- प्रत्येक आत्महत्या की कहानी/रिपोर्ट में यह ज़रूरी है कि आप ऐसे संसाधनों के बारे में जानकारी दें जहाँ से किसी तनावग्रस्त व्यक्ति को सहायता मिल सकती है और यह भी ज़ोर दें कि हम सब को ऐसे हालात में मदद माँगनी चाहिए। आत्महत्या की कहानी/रिपोर्ट के आरंभ या अंत में जानकारी को प्रमुखता से रखा जाना चाहिए। सहायता सेवाओं में आत्महत्या रोकथाम केंद्र, अस्पतालों में आपातकालीन विभाग, 24/7 संकट हेल्पलाइन, स्वयं सहायता समूह, मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता और पुनर्वास केंद्र शामिल हो सकते हैं। नंबर और वेबसाइट की सटीक जानकारी उपलब्ध करवाएं। ऐसा ना हो कि नंबर अथवा वेबसाइट चालू स्थिति में ना हो और आपातकालीन स्थिति में समस्या और भी विकट हो जाये। अधिक से अधिक नंबर या वेबसाइट की जानकारी दें।

- LGBTQIA+ व्यक्ति की आत्महत्या से शोक संतप्त परिवार के सदस्य, चुने हुए परिवार या दोस्तों में विशेष रूप से शोक की अवधि के दौरान आत्म-नुकसान या आत्महत्या का ख़तरा बढ़ सकता है। ऐसे व्यक्तियों का इंटर्व्यू करते समय अत्यधिक सावधान और संवेदनशील रहें। अगर वे बात करने में सक्षम नहीं हैं तो इंटर्व्यू में देरी करने पर विचार करें।

- किसी LGBTQIA+ सेलेब्रिटी द्वारा आत्महत्या का रोमानीकरण या महिमामंडन न करें। यह किसी तनावग्रस्त व्यक्ति को आत्मघाती व्यवहार की नक़ल करने को उकसा सकता है।

- आत्महत्या का जटिल विवरण - विधि, स्थान, आदि - प्रदान न करें या उनका सुसाइड नोट प्रकाशित न करें। किसी व्यक्ति की आत्महत्या के लिए सरल कारण या स्पष्टीकरण नहीं दिया जाना चाहिए।

अपराध

यह अध्याय LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों के खिलाफ अपराधों और LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा किए गए अपराधों के बारे में रिपोर्टिंग, लेखन और संपादन से संबंधित है।

- क्राइम रिपोर्टिंग के बारे में याद रखने वाली पहली बात यह है कि अक्सर पुलिस सूचना का प्राथमिक स्रोत होती है और क्योंकि वो समाज का ही हिस्सा हैं तो पुलिसकर्मी भी पक्षपात, पूर्वाग्रह और अज्ञानता का शिकार हो सकते हैं। हालाँकि क्योंकि उनके पास पद की ताक़त हैं तो ऐसे पूर्वाग्रहों का नतीजा अक्सर हाशिए पर रह रहे समुदायों के लिए भयंकर हो सकता है।

- क्राइम रिपोर्टिंग के दौरान आप LGBTQIA+ व्यक्ति को पीड़ित या कथित अपराधी के रूप में मिल सकते हैं। अगर कोई LGBTQIA+ व्यक्ति किसी अपराध का शिकार है, तो निम्नलिखित बातों को याद रखें:

    - उन्हें हिंसा का शिकार बनाने में उनकी पहचान की क्या भूमिका हो सकती है?

    - सिर्फ इसलिए कि पीड़ित एक LGBTQIA+ व्यक्ति है, इसका मतलब यह नहीं है कि बलात्कार, एक बलात्कार नहीं है - भले ही कानून इसे अलग दृष्टि से देखता हो।

    - पीड़ित की पहचान के बजाय अपराध पर ध्यान दें, जब तक कि उनकी पहचान मामले के लिए प्रासंगिक न हो।

    - अगर पीड़ित पर उनकी पहचान की वजह से हिंसा की गई है, तो यह देखें कि सम्बंधित अधिकारी या पुलिस किस प्रकार और कितनी ज़िम्मेदारी से कार्रवाई कर रहे हैं।

    - एफ.आई.आर के आधार पर रिपोर्टिंग करते हुए यह ध्यान दें कि ऐसी रिपोर्ट में व्यक्ति के 'मृत नाम' का उपयोग किया हो सकता है और उनके जेंडर का ग़लत वर्णन भी हो सकता है। ऐसे में वो नाम और जेंडर चुने जिस से पीड़ित पहचाना जाना चाहते हैं और अगर वो अब ज़िंदा नहीं हैं, तो जिस पहचान के साथ उन्होंने जीवन जिया।

        - उदाहरण के लिए, एक ट्रांस महिला की मां ने कथित तौर पर अपनी बेटी पर शारीरिक हिंसा करवाई जिस से उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के 'मृत नाम' का इस्तेमाल किया और उन्हें जन्म के समय निर्धारित लिंग और जेंडर के आधार पर संदर्भित किया। पीड़िता की जेंडर पहचान स्पष्ट रूप से उनके खिलाफ हिंसा का

कारण थी, तो मामले की रिपोर्ट करते समय आप सिर्फ़ उनके द्वारा चुने गए नाम और एक महिला के रूप में उनकी जेंडर पहचान का उल्लेख कर सकते हैं। अभियुक्त के "अपने बेटे के महिला बनने पर निराशा" लिखने के बजाय आप कह सकते हैं कि "आरोपी अपने बच्चे की जेंडर पहचान से परेशान थी।"

- यदि कोई ऐसा मामला है जिसमें LGBTQIA+ व्यक्तियों को उनकी पहचान के कारण ब्लैक्मेल किया जा रहा है, तो यह ज़रूरी है कि आपकी रिपोर्टिंग में उनकी पहचान ज़ाहिर न हो क्योंकि इससे उनके परिवार और कार्यस्थल पर मुश्किल हो सकती है। उनकी पहचान को सुरक्षित रखते हुए, ख़बर में अन्य जानकारी/कथन जोड़ें ताकि वो अधिक विश्वसनीय बन पाए।

- कभी-कभी, ऐसे मामले हो सकते हैं जिनमें LGBTQIA+ व्यक्तियों को पुलिस, परिवार आदि द्वारा परेशान किया जा रहा हो। ऐसे मामलों में, विचार करें कि क्या आपकी रिपोर्ट उनकी मदद करेगी या उन्हें अधिक मुश्किल में डाल देगी। यदि मुश्किलें बढ़ सकती हैं तो यह ख़बर न चलाएँ या फिर तब तक रुकें जब तक कि व्यक्ति सुरक्षित न हो जाए।

- LGBTQIA+ व्यक्ति अपनी पहचान के कारण यौन हिंसा का शिकार होते हैं। भारतीय कानून या तो LGBTQIA+ व्यक्तियों के खिलाफ यौन हिंसा के कुछ रूपों को अपराध नहीं मानता या फिर कम गंभीरता से देखता है, परंतु एक पत्रकार के लिए ऐसा करने का कोई कारण नहीं होना चाहिए।

  - उदाहरण के लिए, चेन्नई में एक शैक्षणिक संस्थान में व्यापक यौन उत्पीड़न और हिंसा के मामले में कुछ शिकायतकर्ता सिस जेंडर पुरुष थे पर भारतीय दंड संहिता (IPC) सिस जेंडर पुरुषों के यौन उत्पीड़न के मामलों में कोई सहायता नहीं देती। बलात्कार के मामले में IPC की धारा 377 के तहत मामला दर्ज किया जा सकता है (2017 में सुप्रीम कोर्ट ने आपसी सहमति से किए गए सम्भोग को अपराध की इस धारा से हटा दिया था), पर यौन उत्पीड़न और छेड़छाड़ होने पर कानून इसे अपराध नहीं मानता। भारत में अधिकांश यौन हिंसा कानून केवल सिस जेंडर महिलाओं की रक्षा करते हैं। एक पत्रकार के रूप में यह महत्वपूर्ण है कि जब आप क़ानूनी सवालों को उठाएँ तो दो विभिन्न समूहों (इस मामले में सिस जेंडर महिलाएं और यौन हिंसा के शिकार पुरुष) की ज़रूरतों को समझें जो कि परस्पर विरोधी भी हो सकती हैं।

  - नोट: IPC की धारा 376 कहती है कि एक सिस जेंडर महिला से बलात्कार की सज़ा सात साल से आजीवन कारावास तक जा सकती है और कुछ मामलों में मौत की सज़ा भी हो सकती है। वहीं ट्रांसजेंडर व्यक्तियों (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019, के अंतर्गत, एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति के साथ बलात्कार की सज़ा केवल छह महीने से दो साल है।

- अगर LGBTQIA+ व्यक्ति एक कथित अपराधी है, तो निम्नलिखित को याद रखें:

  - जब किसी LGBTQIA+ व्यक्ति को किसी मामले में आरोपी घोषित किया जाता है या गिरफ्तार किया जाता है, तो रिपोर्ट करते समय ख़ुद से पूछें कि क्या उनकी जेंडर पहचान और यौनिक रुझान मामले के लिए प्रासंगिक हैं। यदि नहीं, तो रिपोर्ट में उनका उल्लेख करना या उन पर ध्यान देना ज़रूरी नहीं है भले ही पुलिस ने एफ़.आई.आर में या मामले के बारे में जानकारी साझा करते समय इनका उल्लेख किया हो।

- उदाहरण: यदि एक कथित चेन स्नैचर क्वीयर है, तो उनकी क्वीयर पहचान वर्तमान मामले के लिए प्रासंगिक नहीं है और इसलिए किसी ख़बर में उल्लेख करना अनावश्यक है।

- अगर किसी व्यक्ति पर अपने ही जेंडर के नाबालिग के खिलाफ यौन हिंसा करने का आरोप है, तो हो सकता है कि पुलिस या आप इस मामले में यौनिकता को प्रासंगिक मान बैठें। ऐसे अपराधों को अक्सर "समलैंगिक संबंध/समलैंगिक यौन संबंध बनाने का प्रयास" जैसे शब्दों का उपयोग करके रिपोर्ट किया जाता है। हालांकि इस तरह से रिपोर्ट न करने के दो कारण हैं:

  - यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम, 2012 के तहत, नाबालिग के साथ सभी यौन संपर्क अपराध है। समलैंगिक यौन संबंध/समलैंगिक संबंध जैसे शब्द यह संदेश दे सकते हैं कि यह सहमति के साथ हुआ सम्बंध था जो कि ग़लत है, क्योंकि कानून के तहत, एक बच्चा सहमति देने में असमर्थ है।

  - पीड़ित के लिंग और जेंडर के आधार पर उस पर उत्पीड़न करने वाले व्यक्ति की यौनिकता के बारे में अनुमान नहीं लगाया जा सकता। ऐसा इसलिए क्योंकि कोई व्यक्ति एक नाबालिग़ का विभिन्न कारणों से उत्पीड़न कर सकता है, इसमें अवसर और आसानी से क़ाबू पा लेने सहित कई और कारण हो सकते हैं। समलैंगिकता को बाल यौन शोषण के साथ जोड़ कर देखने का एक लम्बा इतिहास रहा है जिसने LGBTQIA+ समाज और व्यक्तियों को काफ़ी नुकसान पहुंचाया है। यह महत्वपूर्ण है कि अपराध की रिपोर्ट करते समय इस तरह की रूढ़िवादी सोच पर ध्यान न दिया जाए।

- यदि व्यक्ति पर किसी समान जेंडर वयस्क के यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया गया है, तो यहाँ उपयोग की जाने वाली भाषा यौन हमले या हमले की हो सकती है, हालांकि लागू की गई IPC धारा 377 जैसी कुछ हो सकती है। [नोट: सुप्रीम कोर्ट ने IPC की धारा 377 के तहत आपसी सहमति से हुए यौन संबंध को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया है पर यौन हमले के मामलों में अभी भी कानून का उपयोग किया जा सकता है।]

- इसी तरह, जब आरोपी और पीड़ित दोनों एक ही लिंग के हैं, तो "व्यक्ति X को समलैंगिक संबंध बनाने के लिए मजबूर किया" जैसे वाक्यांशों के इस्तेमाल करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप इसके बजाय "व्यक्ति X के यौन उत्पीड़न का प्रयास" वाक्यांश का उपयोग कर सकते हैं।

- अगर एक LGBTQIA+ व्यक्ति आरोपी/अपराधी है, तो रिपोर्ट करते समय उचित प्रक्रिया और गरिमा के उनके अधिकारों को याद रखना महत्वपूर्ण है। (यह हर अभियुक्त के संबंध में याद रखना महत्वपूर्ण है, सिर्फ़ LGBTQIA+ व्यक्ति के ही नहीं)

- सेक्स वर्क करने वाले किसी व्यक्ति के बारे में रिपोर्ट करते समय नैतिक शब्दावली का सहारा लेने से बचें। पुलिस/एनजीओ को ऐसी भाषा का प्रयोग करने के लिए जाना जाता है जैसे "उन्हें सेक्स वर्क से छुड़ाया और उन्हें अन्य नौकरियां दी" आदि। लोग कई कारणों से सेक्स वर्क करते हैं, और जिसे एक तरफ़ से "बचाव" के रूप में देखा जा सकता है दूसरी तरफ़ से यह उत्पीड़न/हिंसा/बाधा की तरह लग सकता है। ऐसी स्थितियों में नैतिकता से भरी हुई भाषा के बजाय निष्पक्ष भाषा का प्रयोग करें।

कानून और अदालतें

इस अध्याय में अदालती निर्णय, बहस, याचिकाएँ, जनहित याचिकाएँ और बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाएँ (Habeas Corpus) शामिल हैं। इसके अलावा महत्वपूर्ण निर्णयों, प्रस्तावों और सम्मेलनों की सूची भी है जिनके बारे में पत्रकारों को पता होना चाहिए।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों से संबंधित किसी मामले में उठाए गए किसी भी अदालती निर्णय या कानूनी तर्क पर रिपोर्ट करते समय, सही भाषा का उपयोग करना ज़रूरी है। भाषा एक ऐसा शक्तिशाली उपकरण है जिसके ज़रिए समाज में ताकत/शक्ति के असंतुलनों को स्थापित और सुदृढ़ किया जाता है। इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि मीडिया न्यायपालिका द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा के साथ तार्किक रूप से जुड़े, क्योंकि क़ानूनी भाषा LGBTQIA+ व्यक्तियों के अधिकारों और सम्मान की प्राप्ति में निर्णायक भूमिका निभाती है। किसी आधिकारिक अदालती दस्तावेज़ को सीधे इस्तेमाल करते समय भी निम्नलिखित बातों को याद रखें:
    - यदि किसी अदालती निर्णय में पुराने या समस्याग्रस्त शब्द शामिल हैं, तो उन्हें अपनी रिपोर्ट में सकारात्मक शब्दों से बदल दें।
        - उदाहरण के लिए, यदि एक आधिकारिक अदालती दस्तावेज़ कहता है, "याचिकाकर्ता एक लड़के के रूप में पैदा हुआ था...और सेक्स रिअसाइनमेंट सर्जरी से गुज़रा," तो आप सीधे दस्तावेज़ को इस्तेमाल करने के बजाय इस वाक्य को सही कर सकते हैं: "याचिकाकर्ता के लिए जन्म के समय पुरुष लिंग व जेंडर निर्धारित किया गया था और उसने जेंडर संगति सर्जरी करवाई।" (सही परिभाषा के लिए शब्दावली देखें)
    - यदि ट्रांसजेंडर शब्द का उपयोग संज्ञा के रूप में किया जाता है, तो उसके साथ "व्यक्ति/व्यक्तिओं" या "समुदाय", जैसा उपयुक्त हो, जोड़ें।
        - उदाहरण के लिए, यदि किसी निर्णय में कहा गया है कि "ट्रांसजेंडरों को आरक्षण प्रदान करने के लिए कुछ निर्देश जारी किए गए थे," तो उसे सही करें, "ट्रांसजेंडर [व्यक्तियों] को आरक्षण प्रदान करने के लिए कुछ निर्देश जारी किए गए थे।"
    - ऐसे शब्दों या वाक्यों को सीधे इस्तेमाल न करें जो किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान को अमान्य करते हैं।

- उदाहरण के लिए, यदि दस्तावेज़ कहता है कि "याचिकाकर्ता ट्रांसजेंडर होने का दावा कर रहा है" तो ऐसे उपयोग को दोहराने से बचें जब तक कि मामले सीधे तौर पर उनकी जेंडर पहचान में किसी कथित अस्पष्टता से संबंधित नहीं है। इस तरह के वाक्यांश यह संकेत दे सकते हैं कि वह व्यक्ति अपनी LGBTQIA+ पहचान के बारे में झूठ बोल रहे हैं। इस तरह की भाषा के हानिकारक परिणाम हो सकते हैं।

- कोई आधिकारिक अदालती दस्तावेज़ किसी व्यक्ति के मृत नाम का उल्लेख करते हों या फिर जेंडर को ग़लत लिखें, पर आप अपनी रिपोर्ट में ऐसा न करें। चाहे वह अपना नाम सरकारी दस्तावेज़ों में बदल पाएँ हों या नहीं लेकिन आपको उस व्यक्ति के चुने हुए नाम का ही इस्तेमाल करना चाहिए। यदि आप उनसे संपर्क करने में सक्षम हैं, तो संबंधित व्यक्ति से सीधे पूछना बेहतर होगा कि उनका नाम और जेंडर पहचान क्या है। दूसरा विकल्प है कि उनके वकील या करीबी लोगों से बात करें। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि LGBTQIA+ व्यक्तियों के जन्मजात परिवार के सदस्य अक्सर सहायक नहीं होते हैं, और इसलिए ज़्यादातर वह इस तरह की जानकारी के लिए अच्छे स्रोत नहीं होते। यदि आपने अपनी रिपोर्ट में किसी व्यक्ति के मृत नाम का उपयोग किया है, तो कृपया ग़लती को सुधारें और संबंधित व्यक्ति को माफी जारी करें।

- ऐसे ऐतिहासिक फ़ैसलों या अन्य न्यायिक प्रक्रियाओं को कवर करते समय जो LGBTQIA+ समुदायों के बड़े वर्ग को प्रभावित करते हों, फ़ैसले के सभी पहलुओं की समीक्षा करें। LGBTQIA+ समुदाय की विविध आवाज़ों को शामिल करें न कि सिर्फ़ सबसे आसानी से उपलब्ध क्वीयर कार्यकर्ताओं की राय लें।

  - उदाहरण के लिए, NALSA बनाम भारत संघ का फैसला ऐतिहासिक है क्योंकि यह मानता है कि भारत के संविधान के तहत दिए गए मौलिक अधिकार ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए भी हैं। पर इस फ़ैसले की यह आलोचना भी की गयी कि इसने हिजड़ा, कोती, अरावनी, इंटरसेक्स जैसी अलग-अलग पहचानों को एक शब्द "ट्रांसजेंडर" में ही समल्लित कर दिया।

- जिन आपराधिक मामलों में LGBTQIA+ व्यक्ति शिकायतकर्ता या आरोपी हैं उनको कवर करते समय रिपोर्टर को अपने द्वारा अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण के बारे में विवेकपूर्ण होना चाहिए। ऐसे मामलों को सनसनीखेज़ बनाना आसान है पर इसके दूरगामी और हानिकारक परिणाम हो सकते हैं, जिसमें क्वीयर व्यक्ति को बहिष्कार और शारीरिक हिंसा का भी सामना करना पड़ सकता है। (और जानकारी के लिए 'अपराध' अध्याय देखें)

- किसी सिविल केस पर रिपोर्ट करते समय किसी व्यक्ति के यौन रुझान का उल्लेख न करें जब तक कि वे ख़ुद ऐसा करने के लिए नहीं कहते या यह मामले के लिए प्रासंगिक न हो।

  - उदाहरण के लिए, यदि भूमि के स्वामित्व के मामले में शामिल पार्टियों में से एक समलैंगिक पुरुष है, तो उसकी यौनिकता का मामले से बहुत कम लेना-देना है, और इसलिए इसका उल्लेख करना उचित नहीं है, जब तक कि उस व्यक्ति को यह नहीं लगता कि उसके यौन रुझान की वजह से भेदभाव किया जा रहा है और इसके बारे में बात होनी चाहिए।

- कई माता-पिता अपने वयस्क संतान के 'अपहरण' का आरोप लगाते हुए अदालतों में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका (Habeas Corpus) दायर करते हैं, यह जानते हुए भी कि वे अपने साथी के साथ सहमति से गैर-विषमलैंगिक संबंध में हैं। ऐसे उदाहरण भी सामने आए हैं जिनमें एक LGBTQIA+ व्यक्ति ने अपने साथी के परिवार के खिलाफ उन्हें बंदी

रखने के ख़िलाफ़ याचिका दायर की है, जैसे कि केरल उच्च न्यायालय में समलैंगिक जोड़े अधिला और नूरा का मामला। यदि कोई अदालत ऐसे मामले में LGBTQIA+ जोड़े के पक्ष में फैसला सुनाती है, तो इसे मिसाल के तौर पर दर्ज करना महत्वपूर्ण है। पर अगर फ़ैसला ख़िलाफ़ में होता है तो उसे रिपोर्ट करना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इस से और लोगों को जानकारी होगी और आगे की क़ानूनी कार्यवाही या कम से कम विरोध प्रदर्शन हो सकेंगे। दोनों मामलों में, बिना उस जोड़े के बयान के मामलों की रिपोर्ट न करें।

- यदि आप एक अदालती मामले को कवर कर रहे हैं जिसमें LGBTQIA+ व्यक्ति एक पक्ष है, तो निजता और सुरक्षा के उनके अधिकार का सम्मान करें। उनके पूछे बिना उनका नाम या किसी भी ऐसे व्यक्तिगत जानकारी का उल्लेख न करें जिससे उनकी पहचान ज़ाहिर हो सकती है, भले ही वह जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध अदालती दस्तावेज़ों में लिखी हो। यह प्रसिद्ध हस्तियों के साथ-साथ उन लोगों पर भी लागू होता है जिनका आपने पिछली रिपोर्ट में ग़लती से नाम उजागर किया हो।

- यदि कोई LGBTQIA+ व्यक्ति किसी मामले में संबंधित पक्ष है, तो अदालत के रिकॉर्ड की जांच कर देखें कि वकील, अभियोजन पक्ष, या न्यायाधीश ऐसे सवाल तो नहीं पूछ रहे हैं या कुछ ऐसी टिप्पणी तो नहीं कर रहे जो व्यक्ति के जेंडर, शरीर या यौनिकता को निशाना बना रहे हों। क्या वे किसी व्यक्ति के शरीर या यौन झुकाव के बारे में आपत्तिजनक या कामुक प्रश्न पूछ रहे हैं? क्या उन LGBTQIA+ व्यक्ति के द्वारा बनाए गए रिश्तों पर नैतिकता भरी टिप्पणियों और सवालों के द्वारा उन्हें कमतर दिखाने का प्रयास किया जा रहा है? यदि ऐसा है, तो उन्हें अपनी रिपोर्ट में चुनौती देना आवश्यक है।

- निर्णयों और तर्कों की जांच करते समय, ग़लत, भ्रामक या रूढ़िवादी बयानों पर नज़र रखें।

    - उदाहरण के लिए, इंटरनेशनल जुरिस्टस कमीशन की एक रिपोर्ट में एक कार्यकर्ता ने बताया कि दो समलैंगिक महिलाओं से जुड़े एक केस की सुनवाई के दौरान, अभियोग पक्ष दोहराता रहा कि "केरल राज्य में कोई समलैंगिक महिला नहीं हैं," और न्यायाधीश ने भी इस दावे को चुनौती नहीं दी।

- LGBTQIA+ मुद्दों पर काम करने वाले किसी भी पत्रकार को उन अधिकारों के बारे में पता होना चाहिए जो वर्तमान में देश में क्वीयर लोगों के लिए हैं। उन्हें अंतरराष्ट्रीय उदाहरणों और सिद्धांतों के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए। संक्षेप में, यहाँ कुछ प्रमुख अदालती फैसले और कानून और LGBTQIA+ अधिकार आंदोलन पर उनका प्रभाव दिया गया है:

    - **नाज़ फाउंडेशन बनाम दिल्ली सरकार:** साल 2009 में 'नाज़ फाउंडेशन बनाम दिल्ली सरकार' केस में दिल्ली उच्च न्यायालय का फैसला भारत में उन पहले मामलों में से एक था जिसमें यह स्वीकार किया गया कि निजी तौर पर सहमति से समलैंगिक यौन गतिविधि में शामिल वयस्क अपराधी नहीं हैं और इसे अपराध मानने से उनके मौलिक अधिकारों का हनन होगा। यह फैसला गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) नाज़ फाउंडेशन द्वारा 2001 में एक अन्य एनजीओ, लॉयर्स कलेक्टिव, के साथ दायर उस याचिका के जवाब में आया था जिसमें भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 377 की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी गई थी। धारा 377 में "प्रकृति की व्यवस्था के विरुद्ध" संभोग को अपराध माना गया था।

    - **सुरेश कुमार कौशल बनाम नाज़ फाउंडेशन:** सर्वोच्च न्यायालय ने 11 दिसंबर, 2013 को दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले को पलट दिया और इस प्रकार समलैंगिकता को फिर से अपराध बना दिया गया। फैसला जारी करते हुए,

पीठ ने यह भी दावा किया कि "लेस्बीयन, गे, द्वियौनिक या ट्रांसजेंडर लोग देश की आबादी का एक छोटा अंश हैं" और इस मुद्दे पर न्यायिक हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। LGBTQIA+ व्यक्तियों के बुनियादी मानवाधिकारों की अनदेखी के लिए इस फैसले की व्यापक निंदा हुई।

- **NALSA बनाम भारत संघ:** साल 2014 के NALSA निर्णय ने यह माना कि एक व्यक्ति को अपने जेंडर की स्वयं पहचान करने का अधिकार है, चाहे वह पुरुष-महिला बाइनरी के भीतर हो या बाहर। यह भारत में ट्रांस अधिकारों की लड़ाई के लिए बहुत महत्वपूर्ण फ़ैसला था। इस निर्णय ने ट्रांस व्यक्तियों को जेंडर संगति सर्जरी से गुज़रे बिना दस्तावेज़ों पर अपना जेंडर बदलने की अनुमति दी। इसके अलावा उन्हें पुरुष, महिला या 'तीसरे जेंडर' के रूप में खुद को पहचानने और पंजीकृत करने का संवैधानिक अधिकार दिया। हालाँकि, 'तीसरे जेंडर' वाक्यांश की आलोचना की गई है क्योंकि इससे लगता है कि 'पुरुष' और 'महिला' मूल जेंडर हैं। (शब्दावली देखें)

- **नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत संघ:** 6 सितंबर, 2018 को, सुप्रीम कोर्ट ने सर्वसम्मति से फैसला सुनाया कि IPC की धारा 377 असंवैधानिक है क्योंकि यह किसी व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करती है। वयस्कों के बीच सहमति से हुए समलैंगिक संभोग को अपराध की श्रेणी से बाहर करते हुए अदालत ने कहा कि किसी व्यक्ति का यौन रुझान उनकी पहचान का एक जन्मजात हिस्सा है और इसे अमान्य करना उनके जीवन के अधिकार को नकारने के समान है।

- **ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019:** लोकसभा ने 5 अगस्त, 2019 को ट्रांसजेंडर व्यक्तियों (अधिकारों का संरक्षण) विधेयक पारित किया जिसका उद्देश्य रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में उनके खिलाफ भेदभाव पर रोक लगाकर ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा करना है। पर देश के ट्रांसजेंडर समुदाय ने इस बिल का ज़ोरदार विरोध किया और आरोप लगाया कि इसने उनके ऊपर होने वाले संस्थागत उत्पीड़न को और अधिक आसान बना दिया है। प्रशासनिक सहजता के उद्देश्य से इंटर सेक्स विविधता और ट्रांसजेंडर पहचान का विलय करने के लिए भी इसकी आलोचना की गई।

  इस बात पर भी चिंता जताई गई कि केंद्र सरकार ने इस कानून को पारित करते समय जनभागीदारी की पूरी तरह से अवहेलना की है जब कि यह क़ानून लोगों के जीवन को महत्वपूर्ण रूप से बदलने की क्षमता रखता है। हालाँकि व्यापक विरोध के कारण पहले मसौदे के लिए और बाद में दूसरे मसौदे के लिए भी सुझावों की समय सीमा बढ़ा दी गई थी, तब भी काफ़ी समुदाय के सदस्य और सहयोगी अपने सुझाव प्रस्तुत नहीं कर पाए थे (कोविड-19 महामारी के दौरान काफ़ी कम समय मिला था)। आखिरकार, कई विरोधों और पत्रों के बावजूद, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों (अधिकारों का संरक्षण) नियम 25 सितंबर, 2020 को लागू हो गए।

- **संयुक्त राष्ट्र के संकल्प और सम्मेलन:** संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद और महासभा ने यौन रुझान, जेंडर पहचान और लैंगिक विशेषताओं के आधार पर हिंसा और भेदभाव से संबंधित कई प्रस्ताव पारित किए हैं। इनमें LGBTQIA+ व्यक्तियों की सुरक्षा पर स्वतंत्र विशेषज्ञों का अधिदेश, उनके मानवाधिकारों से संबंधित संकल्प, और महासभा के कई प्रस्ताव शामिल हैं जो यौन रुझान या जेंडर पहचान के आधार पर क़ानूनी प्रक्रिया के बिना, अविलंबित या मनमाने मृत्यूदंड के खिलाफ हैं।

- **योग्याकार्ता सिद्धांत:** साल 2006 में योग्याकार्ता, इंडोनेशिया, में दुनिया भर के मानवाधिकार विशेषज्ञों के एक समूह द्वारा लिखा गया 'योग्याकार्ता सिद्धांत' यौन रुझान और जेंडर पहचान के सम्बंध में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के अमल पर एक गाइड है। 2017 में इन सिद्धांतों को विस्तार कर इसमें जेंडर अभिव्यक्ति और यौन विशेषताओं के विशिष्ट और परस्पर जुड़ने वाले पहलुओं को शामिल कर इसका नाम 'योग्याकार्ता सिद्धांत प्लस 10' रखा गया।

- पत्रकारों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि LGBTQIA+ व्यक्ति को अदालतों और अन्य न्यायिक मंचों पर उतना ही बहिष्कार और भेदभाव झेलना पड़ सकता है जितना किसी अन्य संगठन में। पत्रकार यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि न्यायिक परिसर LGBTQIA+ व्यक्तियों को शामिल करे और सुरक्षित स्थान बने। यदि आपको अदालत परिसर में किसी LGBTQIA+ व्यक्ति के साथ भेदभाव या उत्पीड़न का कोई विशेष उदाहरण मिलता है, तो पूछें कि क्या वह व्यक्ति अपनी आप बीती बताना चाहता है? जांच करें कि क्या समुदाय के और भी लोग हैं जो इसी तरह की घटनाओं से प्रभावित हुए हैं? इंटरनेशनल कमिशन ऑफ ज्यूरिस्ट्स की रिपोर्ट में केरल के दो व्यक्तियों - एक ट्रांस पुरुष और एक ट्रांस महिला - का हवाला दिया गया है, जिन्होंने कहा कि एक केस में अदालत में पेश होने पर जज सहित हर कोई उन पर हंसता था। ऐसी घटनाएं मामूली लग सकती हैं, लेकिन वे LGBTQIA+ व्यक्तियों के प्रणालीगत बहिष्करण में योगदान देती हैं।

- न्यायिक कार्यक्षेत्र में LGBTQIA+ व्यक्तियों की उपस्थिति भारत के अधिकांश रोज़गार स्थानों की तरह ही बहुत कम है। पत्रकारों को न्यायिक निकायों के भीतर विविधता पर नज़र रखने की ज़रूरत है, खासकर जब निर्णायक स्थानों पर नियुक्त लोगों की बात आती है। जैसे कि केरल की पहली सावर्जनिक तौर पर अपनी पहचान ज़ाहिर करने वाली ट्रांस महिला वकील पद्मा लक्ष्मी का बार काउंसिल में नामांकन होना मिसाल के तौर पर कवर किया जाना चाहिए।

- अपने परिसर में LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए ढांचागत और प्रशासनिक सुविधाओं की कमी के लिए न्यायिक निकायों को जवाबदेह ठहराएं। फरवरी 2023 में मद्रास उच्च न्यायालय ने तमिलनाडु राज्य सरकार को विकलांग व्यक्तियों के लिए बने सार्वजनिक शौचालयों को 'सभी जेंडर' के लिए उपलब्ध कराने की सलाह देते हुए कहा था कि उसके स्वयं के परिसर में भी अभी तक ऐसे शौचालय नहीं है। ऐसे कथनों पर ध्यान दें जो इन कमियों को स्वीकार करते हैं।

- जब न्यायिक निकायों द्वारा अनुकूल कार्रवाई की जाती है, तो उन्हें स्वीकार करें और साथ ही साथ आलोचना के लिए भी जगह छोड़ें। उन LGBTQIA+ व्यक्तियों से परामर्श करें जो इन उपायों से प्रभावित होंगे। उदाहरण के लिए, 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने न्यायपालिका को LGBTQIA+ समुदाय के लिए और संवेदनशील बनाने के लिए एक मॉड्यूल जारी किया। इस तरह की पहलों को कवर करते समय जांच करें कि क्या समुदाय का कोई व्यक्ति उस पैनल का हिस्सा था जिसने मॉड्यूल लिखा है और क्या इसमें कोई सुधार की गुंजाइश है?

राजनीति

यह अध्याय LGBTQIA+ मुद्दों पर राजनीतिक दलों के रुख, राजनीति में LGBTQIA+ व्यक्ति, राजनीतिक अभियान जिनसे LGBTQIA+ समुदाय को मदद या चोट पहुंचती हो और LGBTQIA+ व्यक्तियों से सम्बंधित राजनीतिक संदेशों के बारे में है। हर सेक्शन के अंदर उन घटनाओं/मुद्दों को सूचीबद्ध किया गया है जिन्हें मीडिया द्वारा कवर किया जाना चाहिए। साथ ही उन्हें कैसे कवर किया जाना चाहिए, इस पर विस्तृत सूची दी गयी है।

- पत्रकारों/मीडिया संस्थाओं को सरकारी एजेंसियों में LGBTQIA+ व्यक्तियों की नियुक्तियों को कवर करना चाहिए क्योंकि आपकी ख़बर से यह पहल इतिहास में दर्ज हो जाएगी और आगे के सभी कार्य इसी पैमाने पर मापे जाएँगे जिससे पता चल सकेगा कि सरकारें कितनी प्रगतिशील या समावेशी हैं।
    - उदाहरण: सरकार के सलाहकार पद पर एक ट्रांसजेंडर व्यक्ति की नियुक्ति।
- जब आप LGBTQIA+ व्यक्तियों से संबंधित कानूनों, विधेयकों, अध्यादेशों, सरकारी आदेशों, नियमों आदि के बारे में लिखते हैं, तो निम्नलिखित पर विचार करें:
    - क्या इन कानूनों, नियमों आदि का मसौदा तैयार करने से पहले समुदाय के साथ परामर्श किया गया है?
        - समाचार रिपोर्टों में ऐसे कानूनों, नियमों आदि पर LGBTQIA+ समुदायों की आवाज़ सामने आनी चाहिए कि यह उन्हें कैसे प्रभावित करेगा न कि बिना किसी आलोचना या राय के केवल सरकार की प्रशंसा की जाए।

          उदाहरण के लिए, कुछ सरकारों द्वारा एक शब्द के रूप में 'तीसरे जेंडर' का उपयोग पहली नज़र में 'समावेशी' लग सकता है, लेकिन यह ट्रांस समुदायों की स्थिति और वास्तविकताओं और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा को नहीं दर्शाता और यह भी संकेत देता है कि जेंडर पहचानों में कुछ ऊँच, नीच है।
        - क्या सरकार वही कर रही जो वह बोल रही है? उदाहरण के लिए, यदि कोई मंत्री सार्वजनिक रूप से LGBTQIA+ समुदायों के समर्थन में बयान देता है तो क्या यह सरकार की नीतियों में दिखाई दे रहा है?

उदाहरण: कुछ मंत्री साक्षात्कारों और सार्वजनिक आयोजनों में LGBTQIA+ समुदायों के समर्थन में टिप्पणियाँ कर सकते हैं, पर जब समुदायों के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर सरकार के रुख की बात आती है, तो वे चुप रहते हैं जबकि वो सरकार का हिस्सा हैं।

- जब नीतियों/कानूनों/योजनाओं के अमल की बात आती है, तो निम्नलिखित पर गौर करें:

  क्या यह अमल LGBTQIA+ समुदाय के नेताओं/संगठनों/समूहों के परामर्श/ सामंजस्य से किया गया है?

  क्या नीतियों/योजनाओं के लिए पर्याप्त धनराशि दी जा रही है, या यह केवल कागज पर 'अच्छी दिखने वाली' नीति है?

  पत्रकारों को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए कि सरकारों द्वारा घोषित नीतियों/योजनाओं को वास्तव में ज़मीन पर कैसे लागू किया जाता है।

  उदाहरण: कई राज्यों ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए नीतियों की घोषणा की है जिनका मीडिया में धूमधाम से स्वागत किया गया। हालाँकि, बाद में पता चला कि ये नीतियां ठीक से काम नहीं कर रही हैं।

- किसी राजनीतिक दल के घोषणापत्र को कवर करते समय निम्नलिखित पर विचार करें:
  - क्या घोषणापत्र बनाने वाली समिति में LGBTQIA+ समुदाय का प्रतिनिधित्व है?
  - क्या किसी राजनीतिक दल के घोषणापत्र में LGBTQIA+ व्यक्तियों/समुदायों के अधिकारों और कल्याण के लिए कुछ विशेष है?

    उदाहरण: क्या वे आवास, आरक्षण, या अन्य विशेष अधिकारों का वादा कर रहे हैं?
  - क्या घोषणापत्र की व्यापक सोच में LGBTQIA+ व्यक्ति भी शामिल हैं?

    उदाहरण: क्या भाषा जेंडर को ले कर रूढ़िवादी है तथा समलैंगिक और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के बारे में ड़र और नफ़रत फैलाने वाली है या फिर समावेशी है?
  - क्या घोषणापत्र में ऐसा कुछ है जो LGBTQIA+ व्यक्तियों/समुदायों के प्रति भेदभावपूर्ण है, या उनके अधिकारों के विरुद्ध है?

    उदाहरण: क्या यह सामुदायिक जीवन के विरुद्ध है? क्या घोषणापत्र LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा नीतियों की आलोचना को ध्यान में रखता है, या यह एक सिस जेंडर और विषमलैंगिक नज़रिए को ही दोहरा रहा है?
  - क्या पार्टी और उसके सदस्यों का सार्वजनिक/मीडिया रुख घोषणापत्र में लिखी गई बातों के अनुरूप है?
  - जो पत्रकार राजनीति को LGBTQIA+ नज़रिए से कवर करना चाहते हैं, उन्हें यूनियनों, राजनीतिक आंदोलनों आदि के घोषणापत्रों को भी देखना चाहिए कि वे LGBTQIA+ अधिकारों के संबंध में कैसे विकसित हो रहे हैं।

- राजनीतिक नेताओं के भाषणों/टिप्पणियों को कवर करते समय:
    - पत्रकारों को LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में राजनेताओं और नेताओं के समस्याग्रस्त बयानों को उजागर करना चाहिए, जिसमें यह स्पष्टीकरण भी शामिल हो कि यह बयान समस्याग्रस्त क्यों है। ऐसे भाषणों पर रिपोर्टिंग करते समय क्वीयर व्यक्तियों की राय शामिल करें। यह बयान नेताओं द्वारा टीवी पैनल चर्चाओं और/या इंटर्व्यू, बाइट्स और प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान भी दिए गए हो सकते हैं।
    - यदि किसी नेता द्वारा सोशल मीडिया पर कोई समस्याग्रस्त बयान दिया जाता है तो उसको वैसे ही कवर करें जैसे किसी सार्वजनिक भाषण को आप करेंगे। यदि कोई नकारात्मक टिप्पणी बहुत अधिक समर्थन जुटा रही है, तो इस बारे में बात करें कि राजनेता कैसे LGBTQIA+ समुदायों या व्यक्तियों के प्रति भेदभाव और नफरत को उकसा रहे हैं। प्रतिक्रियाओं को नज़र-अंदाज न करें।
    - यदि किसी नेता द्वारा अर्ध-सार्वजनिक या निजी स्थान पर भाषण/टिप्पणी की जाती है और आप उसको कवर करते हैं तो सोचें उसका उद्देश्य क्या है? क्या ऐसे भाषणों और टिप्पणियों को अनुचित कवरेज देते हुए टीआरपी या ज़्यादा पाठक हासिल करना है जिसकी वजह से वह बयान और लोकप्रिय हो जाते हैं या फिर पत्रकारिता ऐसे नेताओं को जवाबदेह ठहराने के लिए की जा रही है?
        - उदाहरण: एक राजनेता ने किसी शादी समारोह के दौरान समलैंगिकता विरोधी टिप्पणियाँ कीं। मीडिया के एक वर्ग ने इसे प्रमुखता से उठाया, हालाँकि उस नेता से स्पष्टीकरण या किसी भी तरीके की जवाबदेही नहीं माँगी गयी।
    - क्या किसी नेता/राजनेता द्वारा दिया गया भाषण/टिप्पणी इस हद तक क्वीयर लोगों के ख़िलाफ़ है कि यह उनके द्वारा दिए गए बाकी राजनीतिक संदेशों के भी विरुद्ध है?
        - उदाहरण के लिए, यदि कोई तर्कवादी राजनेता जिसने अपने जीवन में कभी भी 'संस्कृति' और 'धर्म' के बारे में बात नहीं की हो अचानक दावा करता है कि LGBTQIA+ संबंध 'संस्कृति के विरुद्ध' हैं, तो यह एक बड़ा मुद्दा है और इस दोगलेपन को सामने लाया जाना चाहिए।
        - समाचार रिपोर्टों में ऐसे टिप्पणियों को चुनौती देना महत्वपूर्ण है। किसी भी राजनेता या नेता द्वारा दिए गए ऐसे बयानों को दर्ज करना ज़रूरी है पर हमें साथ में यह भी जोड़ना चाहिए कि ये बयान एक समूह के लोगों के प्रति घृणास्पद हैं।
- राजनीतिक संगठन और आंदोलन शुरू करने वाले/नेतृत्व करने वाले LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में लिखते/बात करते समय:
    - किसी भी पार्टी/संगठन/आंदोलन की तरह, केवल LGBTQIA+ व्यक्तियों की पहचान पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, उनके काम, राय और राजनीति के बारे में लिखने पर ध्यान दें।
    - ऐसे LGBTQIA+ व्यक्तियों पर ध्यान दें जो न केवल LGBTQIA+ अधिकारों से संबंधित मुद्दे ही नहीं बल्कि 'मुख्यधारा' के मुद्दे भी उठा रहे हैं।

- उदाहरण: दलित ट्रांसजेंडर एक्टिविस्ट ग्रेस बानो तमिलनाडु में जल्लीकट्टू आंदोलन का हिस्सा थीं लेकिन उन्हें आंदोलन के नेता के रूप में श्रेय नहीं दिया गया।

- एक और उदाहरण: कई क्वीयर समूह और व्यक्ति देश भर में सीएए (नागरिकता (संशोधन) अधिनियम), एनआरसी (नागरिकों का राष्ट्रीय रजिस्टर) विरोधी प्रदर्शनों का हिस्सा थे, लेकिन क्वीयर व्यक्तियों के रूप में उनके नेतृत्व को शायद ही उजागर किया गया।

- किसी पार्टी, आंदोलन आदि को शुरू करने वाले 'पहले' व्यक्ति के रूप में किसी को श्रेय देने में सावधानी बरतें। सामान्य तौर पर ऐसी किसी भी चीज़ के बारे में यह कहने से सावधान रहें कि कुछ 'पहली बार' हो रहा है जिसे निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता या साबित नहीं किया जा सकता है।

- चुनाव लड़ रहे LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में लिखते/बात करते समय:

  - जब कोई LGBTQIA+ व्यक्ति चुनाव लड़ता है तो केवल उनकी पहचान पर ध्यान केंद्रित न करें; उनके पिछले काम को भी देखें, जीतने पर वे क्या करने का वादा करते हैं, उनकी राजनीति क्या है, आदि। उनके राजनीतिक काम और महत्वाकांक्षाओं को कवर करने के उद्देश्य से उनके व्यक्तिगत जीवन या अतीत के असंबंधित काम की जांच न करें।

    - उदाहरण: यदि एक ट्रांस महिला चुनाव लड़ रही है और उसने अपने जीवन में यौन कार्य किया है, तो उसके द्वारा किए गए कार्य पर नैतिक दृष्टिकोण रखने की ज़रूरत नहीं है। हालाँकि, उसने पुलिस, पितृसत्ता, जेंडर-आधारित हिंसा, असंगठित कार्य क्षेत्र आदि का सामना या उसमें गुज़ारा कैसे किया यह अनुभव एक नेता के रूप में उनकी विश्वसनीयता और ज्ञान को दर्शाता है।

  - जब राजनीतिक दल सार्वजनिक रूप से LGBTQIA+ अधिकारों का समर्थन करने की बात करते हैं, तो जांच करें कि क्या वे चुनाव में LGBTQIA+ उम्मीदवारों को अवसर देते हैं - ठीक उसी तरह जैसे मीडिया रिपोर्टें इस बात की जांच करती हैं कि कितनी (सिस जेंडर) महिलाएं प्रमुख पार्टियों से चुनाव लड़ती हैं।

    - यदि कोई पार्टी LGBTQIA+ उम्मीदवारों को टिकट दे रही है, तो देखें कि क्या इन उम्मीदवारों को वहाँ टिकट दिया गया है जहाँ उनके जीतने की संभावना है या केवल उन सीटों पर जहाँ पार्टी को पता है कि वह हारने वाली है और इसलिए वहाँ LGBTQIA+ उम्मीदवारों को खड़ा करके सिर्फ़ वाहवाही लूटना चाहती है।

    - इसके अलावा, देखें कि क्या LGBTQIA+ उम्मीदवार को पार्टी के अन्य उम्मीदवारों के जैसे समर्थन और संसाधन दिए जाते हैं - जिसमें पैसा, बड़े नेताओं का समर्थन, चुनाव अभियान आदि शामिल है।

    - क्या उम्मीदवार को टिकट आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र (महिला, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, आदि) से दिया गया है या सामान्य निर्वाचन क्षेत्र से? क्यों? इसके स्थानीय राजनीतिक कारण क्या हैं?

    - किसी भी अन्य उम्मीदवार की तरह, LGBTQIA+ उम्मीदवार के निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं पर भी रिपोर्ट करें। लोगों से पूछें कि उम्मीदवार के बारे में उनके क्या विचार हैं, निर्वाचन क्षेत्र में उनके द्वारा अतीत में क्या

काम किए गए और वे उम्मीदवार के काम के बारे में क्या जानते हैं आदि। यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी होगा जिस से पता चलेगा कि जनता LGBTQIA+ उम्मीदवारों को कैसे देखती है, और इससे भविष्य में LGBTQIA+ उम्मीदवार को अपने दृष्टिकोण और मतदाताओं में उनकी पहुंच पर काम करने में मदद मिल सकती है।

    - विरोधी उम्मीदवार/पार्टियाँ अपने निर्वाचन क्षेत्र में LGBTQIA+ उम्मीदवारों के बारे में कैसे बात कर रहे हैं? क्या वे भेदभावपूर्ण व्यवहार कर रहे हैं या उन्हें समान दृष्टि से देख रहे हैं?

- राजनीति (नीति/आंदोलन/मुद्दे या पार्टियों) के बारे में LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा दिए गए बयानों को कवर करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें:

    - कभी-कभी LGBTQIA+ व्यक्ति किसी पार्टी या राजनेता का समर्थन कर सकता है। इसका मतलब यह नहीं है कि देश के सभी LGBTQIA+ समुदाय उक्त पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष में हैं। यह न मानें कि एक व्यक्ति या एक संगठन देश/राज्य के सभी क्वीयर व्यक्तियों और समुदायों का प्रतिनिधि है, ऐसे समर्थन को उतना ही श्रेय दें। "व्यक्ति 'क' राजनेता 'ख' का समर्थन करता है" ठीक है पर "पूरा भारतीय LGBTQIA+ समुदाय राजनेता 'ख' का समर्थन करता है" ठीक नहीं है।

    - सिस और विषमलैंगिक व्यक्तियों की तरह, क्वीयर व्यक्तियों के भी विभिन्न राजनीतिक झुकाव और विचार होते हैं। किसी एक व्यक्ति के बयानों और विचारों को लेकर सभी को एक साथ जोड़ना सही नहीं है।

    - जब कोई LGBTQIA+ व्यक्ति या समूह किसी राजनीतिक दल का समर्थन करता है, तो देखें कि क्या वे LGBTQIA+ मुद्दों पर पार्टी के रुख के आधार पर उनका समर्थन कर रहे हैं, या पार्टी द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दों/स्थितियों के आधार पर उनका समर्थन कर रहे हैं जो उनकी पहचान के किसी अन्य पहलू को प्रभावित करते हैं।

        - उदाहरण के लिए, क्या LGBTQIA+ व्यक्ति का किसी पार्टी के लिए समर्थन उनके जेंडर/यौनिकता के आधार पर है या उनकी धार्मिक पहचान, या जाति की पहचान के आधार पर?

    - यह जांच करना भी महत्वपूर्ण है कि क्या LGBTQIA+ व्यक्ति और समूह किसी पार्टी का समर्थन केवल इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे LGBTQIA+ अधिकारों के बारे में वादे करती है भले ही अन्य सामाजिक मुद्दों जैसे रोज़गार, धर्म, जाति, आदि पर पार्टी की स्थिति समस्याग्रस्त हो ?

- पत्रकारों को निम्नलिखित को भी कवर करने का प्रयास करना चाहिए :

    - LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए सरकारी अभियान, जैसे मतदाता नामांकन के लिए एक मुहिम।

    - कोई क्वीयर व्यक्ति जो सरकार के साथ मिल कर LGBTQIA+ समुदायों की मदद के लिए शुरू हुए अभियानों पर काम कर रहे हों, जैसे आवास और कल्याण योजनाओं को अमल करना।

    - LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों द्वारा राजनीतिक अभियान, जैसे, आरक्षण की मांग करने वाला अभियान।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए पार्टियों द्वारा राजनीतिक पहल, उदाहरण के लिए, किसी पार्टी में LGBTQIA+ व्यक्तियों का एक पेशेवर मंच।
- राजनीतिक दल ऐसे कार्यक्रम या अभियान चला रहे हों जो LGBTQIA+ अधिकारों के विरुद्ध हैं, उदाहरण के लिए, विवाह समानता के विरुद्ध एक पोस्टर अभियान।
- LGBTQIA+ व्यक्तियों के इर्द-गिर्द कोई राजनीतिक संदेश। ऐसा करते समय, नेताओं और पार्टीयों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा को देखें - क्या उसमें क्वीयर समुदाय के लिए 'दान' ज़्यादा और 'अधिकार' कम सुनाई दे रहा है?

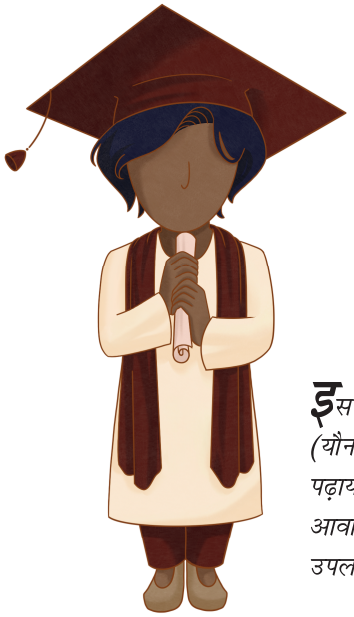

शिक्षा

इस अध्याय में शिक्षा से जुड़े काफ़ी मुद्दों पर बात होगी, जैसे कि शिक्षा नीति, आरक्षण, पाठ्यक्रम (यौन शिक्षा सहित), स्कूल, कॉलेज तक पहुँचने की क्षमता, भेदभाव (शौचालय, स्कूल वर्दी, पोषण, पढ़ायी जारी रख पाना, एडमिशन सम्बंधी परेशानी जैसे काग़ज़ों में नाम और जेंडर बदलवाना आदि), आवास, दूसरे क्षात्रों द्वारा उत्पीड़न और रैगिंग, समर्थन समूह, LGBTQIA+ व्यक्तियों की शैक्षिक उपलब्धियाँ, और शिक्षक के रूप में LGBTQIA+ व्यक्ति।

- यदि कोई सरकार या सरकारी इकाई एक विशेष शिक्षा नीति लेकर आती है, तो उसे कवर करने वाले पत्रकारों को यह देखना चाहिए कि क्या नीति और इसके पहलुओं में LGBTQIA+ व्यक्ति शामिल हैं।
    - उदाहरण के लिए, यदि कोई सरकार महिला छात्रों के लिए बस पास की नीति ला रही है, तो क्या इसमें ट्रांस और जेंडर नॉन कोनफ़ोर्मिंग व्यक्तियों को भी शामिल किया गया है?
- राष्ट्रीय या राज्य-स्तरीय नीतियों में क्या LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों को हितधारकों के रूप में देखा गया है?
    - उदाहरण के लिए, यदि केंद्र सरकार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लेकर आ रही है, तो क्या उन्होंने LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदायों के लिए आरक्षण और उनके संस्थानों तक पहुँच पाने की क्षमता के प्रश्नों को एक नीतिगत मुद्दा माना है? क्या नीति को अंतिम रूप देने से पहले उसे बनाने वालों ने LGBTQIA+ व्यक्तियों, संगठनों और समुदायों के साथ खुले और पारदर्शी तरीके से परामर्श किया है?
- क्या सरकारों द्वारा प्रस्तुत शिक्षा बजट LGBTQIA+ समुदाय को हाशिए पर रहने वाले समूह की तरह देखता है और विशेष ध्यान देता है?
    - उदाहरण के लिए, शिक्षा मंत्रालय के केंद्रीय बजट में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदायों के लिए की जाने वाली शैक्षिक पहलों के लिए अलग से आवंटन किया गया है। पत्रकार देख सकते हैं और सवाल कर सकते हैं कि क्या LGBTQIA+ समुदायों के लिए समान योजनाएं लागू की गई हैं, और क्या इसके लिए पर्याप्त धन आवंटित किया गया है।

- क्या शिक्षक प्रशिक्षण के लिए नीतियों और योजनाओं में LGBTQIA+ व्यक्ति शामिल हैं? देखें कि क्या भर्ती नोटिस विशेष रूप से LGBTQIA+ आवेदकों को सम्बोधित करते हैं, और क्या यह प्रक्रिया LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए जगह बनाती है।

- क्या वर्दी/कपड़ों के बारे में किसी शैक्षणिक संस्थान की नीतियां LGBTQIA+ अभिव्यक्तियों को वर्जित करती हैं? क्या जेंडर आधारित कपड़े (जैसे, लड़कियों के लिए स्कर्ट, लड़कों के लिए पैंट) सभी छात्रों पर थोपे गए हैं या फिर छात्रों को उनकी व्यक्तिगत पसंद के आधार पर छूट दी गई है ?

- कई ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अपनी उच्च शिक्षा के लिए काग़ज़ पर अपना नाम और जेंडर बदलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पत्रकारों को यह देखना चाहिए कि क्या शैक्षणिक संस्थानों और अधिकारियों के पास इसे सरल बनाने के लिए नीतियां हैं? क्या उनके प्रवेश प्रक्रिया और आवेदन पत्रों में इसे ध्यान में रखा गया है? केवल एक व्यक्तिगत उदाहरण को देखने के बजाय, इसका एक व्यवस्था तंत्र के रूप में आकलन करें।

    - उदाहरण के लिए, यदि आप विश्वविद्यालय/स्कूली दस्तावेजों में अपना नाम और जेंडर बदलवाने के लिए किसी व्यक्ति के संघर्ष के बारे में लेख लिख रहे हैं, तो इस मुद्दे पर निर्णयों और नीतियों को देखें, और कार्यकर्ताओं और समुदाय के सदस्यों से बात करें कि यह कैसे एक लगातार पेश आने वाली समस्या है।

- इस बात पर भी ध्यान दें कि क्या शिक्षा संस्थान जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों को शौचालय की सुविधा प्रदान कर रहे हैं, चाहे वो नए निर्माण के साथ हो या ऐसी नीति के साथ जो छात्रों को अपनी पसंद के अनुसार शौचालय चुनने की अनुमति देती है। ऐसी नीतियों और बुनियादी ढांचे के साथ ही बाकी छात्रों और कर्मचारियों की संवेदनशीलता पर भी काम होना चाहिए ताकि जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों को उत्पीड़न का सामना न करना पड़े।

- जब स्कूल में किसी वर्ग के छात्र को मिड डे मील न मिलने से संबंधित कवरेज हो, तो देखें कि क्या जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों को भी इस से वंचित किया जा रहा है ?

- जब पत्रकार स्कूल बीच में छोड़ने की दर, शिक्षा जारी रखने में परेशानी जैसी ख़बरें कवर कर रहे होते हैं तो उन्हें इन मुद्दों को LGBTQIA+ के नज़रिए से भी देखना चाहिए। क्या संस्थान यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रयास कर रहे हैं कि जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्र विभिन्न कारणों से पढ़ाई न छोड़ें? क्या इसके पीछे के कारणों को संस्थागत नीतियों द्वारा सुलझाया जा रहा है या केवल विशेष मामलों में ही अस्थायी उपाय किए जाते हैं?

- आवासीय संस्थानों को हॉस्टल बनाते और आवंटित करते समय जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों, LGBTQIA+ छात्रों और ऐसे छात्रों को ध्यान में रखना चाहिए जो अपनी जेंडर पहचान के बारे में निश्चित नहीं हैं। शैक्षिक संस्थानों में आवास के मुद्दों पर नज़र रखने वाले पत्रकारों को यह भी देखना चाहिए कि किन नीतियों का पालन किया जाता है, और क्या जेंडर के अनुसार विभाजित स्थानों और सभी जेंडर के लिए नियत स्थानों का अच्छा संतुलन है ताकि सभी छात्रों को उनकी व्यक्तिगत सुविधा के अनुसार एक सुरक्षित जगह मिल सके? यदि जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्र सुरक्षित स्थान चाहते हैं तो क्या उनके लिए व्यक्तिगत कमरे कम दरों पर उपलब्ध हैं ?

- सरकारों द्वारा छात्रों के लिए उपलब्ध कराए गए आवास की जांच करने वाले पत्रकारों को यह भी देखना चाहिए कि क्या इन स्थानो में जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों के लिए प्रावधान हैं ?

- उदाहरण के लिए, अगर कोई जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्र अनुसूचित जाति/जनजाति छात्रों के लिए बने हॉस्टल का लाभ उठा रहा है, तो उन्हें आवास कैसे प्रदान किया जाता है ?

- क्या संस्थानों की उत्पीड़न-विरोधी और रैगिंग-विरोधी नीतियों में जेंडर आधारित उत्पीड़न, LGBTQIA+ व्यक्तियों के ख़िलाफ़ नफ़रत या हिंसा जैसे मुद्दे शामिल हैं? क्या ये नीतियां मौजूदा सरकारी कानूनों के अनुरूप हैं? संस्थानों में दूसरे छात्रों द्वारा उत्पीड़न/रैगिंग, या जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों की आत्महत्या को कवर करने वाले पत्रकारों को व्यक्तिगत मामले की बारीकियों को देखने के साथ साथ यह प्रश्न भी पूछने चाहिए।

- किसी उत्पीड़न की घटना को कवर करते समय, पीड़ित की स्वंय निर्धारित पहचान का सम्मान करें। उनके जेंडर या यौनिकता के बारे में धारणाएं न बनाएं, और यदि पीड़ित बात करने के लिए उपलब्ध है, तो आप उनकी पहचान को कैसे पेश करेंगे इस बारे में उनसे सहमति लें।

- संस्थानों में दूसरे छात्रों द्वारा उत्पीड़न/रैगिंग को कवर करते समय, दोषी व्यक्ति की यौनिकता के बारे में सिर्फ इसलिए अटकलें न लगाएँ क्योंकि उत्पीड़न यौन प्रकृति का है।

  - उदाहरण के लिए, यदि कोई पुरुष-पहचान वाला छात्र किसी अन्य पुरुष छात्र को धमकाता है और यौन उत्पीड़न करता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि दोषी समलैंगिक है।

- अगर किसी कर्मचारी को LGBTQIA+ व्यक्तियों के ख़िलाफ़ नफ़रत या हिंसा की वजह से बर्खास्त किया गया है तो यह भी पूछें कि संस्थान को क्वीयर लोगों के लिए सुरक्षित स्थान बनाने के लिए क्या किया गया है और क्या इन मुद्दों पर संवेदनशीलता पूरे संस्थान में है? क्या ऐसी नीतियां लागू हैं जिससे जेंडर और यौनिकता के कारण हुए उत्पीड़न और भेदभाव की शिकायतों को उठाया जा सके?

- शिक्षा क्षेत्र में मुद्दों को कवर करते समय, कृपया याद रखें कि कुछ कर्मचारी LGBTQIA+ हो सकते हैं; कुछ छात्र जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग भी हो सकते हैं पर शायद प्रत्यक्ष तौर पर नहीं। सुनिश्चित करें कि शैक्षणिक संस्थान या शिक्षा क्षेत्र को प्रभावित करने वाले बड़े मुद्दों को कवर करते समय उनकी आवाज़ भी शामिल हो।

  - उदाहरण के लिए, आप एक शैक्षणिक संस्थान में यौन उत्पीड़न पर एक लेख लिख रहे हैं तो ध्यान दें कि यह यौन उत्पीड़न सिर्फ़ सिस जेंडर महिलाओं का ही नहीं, बल्कि जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग छात्रों और LGBTQIA+ व्यक्तियों का भी हो सकता है। हालाँकि, इस बात का ध्यान रखें कि आप दुर्व्यवहार को जेंडर या यौनिकता से तो नहीं जोड़ रहे हैं। जो व्यक्ति किसी पुरुष या जेंडर नॉन कौनफ़ोरमिंग व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार करता है ज़रूरी नहीं कि वह समलैंगिक ही हो - और समस्या उनकी यौनिकता नहीं बल्कि अपनी शक्ति और पद का दुरुपयोग है।

- कैंपस की राजनीति को कवर करते समय, LGBTQIA+ नेताओं द्वारा कैंपस आंदोलनों में दिए गए योगदान पर प्रकाश डालें।

- छात्र संघों को कवर/प्रोफ़ाइल करते समय, देखें कि वे अपने नेतृत्व में कितने समावेशी और विभिन्न पहचानों को अपनाने वाले हैं, जिसमें LGBTQIA+ पहचान भी शामिल है। क्या उनका प्रचार LGBTQIA+ व्यक्तियों के प्रति नफ़रत या डर फैलाता है ?

- क्या छात्र संघ, कैंपस समूह और सहायता समूह जो क्वीयर व्यक्तियों और समुदायों का समर्थन करने का दावा करते हैं, LGBTQIA+ मुद्दों को प्राथमिकता से उठा रहे हैं? क्या उनके नेतृत्व में LGBTQIA+ व्यक्ति हैं या वे बस दिखावा कर रहे हैं? पत्रकारों को कैम्पस में अलग अलग पहचान रखने वाले LGBTQIA+ व्यक्तियों से बात करके 'सहायता समूहों' द्वारा किए गए ऐसे दावों की जांच करनी चाहिए।

- भारत के संविधान के अनुसार, केंद्र सरकार, राज्य सरकार और केंद्र शासित प्रदेश की सरकारों को सामाजिक रूप से वंचित और पिछड़े समूहों के लिए एडमिशन, रोजगार आदि में कोटा निर्धारित करने की अनुमति है।

  ऐतिहासिक रूप से, भारत में ट्रांस समुदाय अपनी सामुदायिक श्रेणियों के तहत शिक्षा, रोजगार आदि में आरक्षण की मांग करता रहा है। इसका मतलब है कि अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) से आने वाले ट्रांस व्यक्तियों के लिए कोटे के भीतर एक कोटा और सामान्य श्रेणी के तहत अलग ट्रांस आरक्षण। 2014 के NALSA फैसले में सुझाव दिया गया है कि ट्रांस व्यक्तियों को ओबीसी श्रेणी के तहत आरक्षण दिया जाना चाहिए पर इसको असमान माना गया है क्योंकि ट्रांस व्यक्ति विभिन्न जातियों और समुदायों से आते हैं, और उन्हें न केवल उनके जेंडर के आधार पर बल्कि उनकी जातिय और धार्मिक पहचान के आधार पर भी हाशिए पर रखा जाता है।

  - उदाहरण के लिए, सितंबर 2021 में यह बताया गया था कि केंद्र सरकार उच्च शिक्षा और रोज़गार में आरक्षण के लिए ओबीसी श्रेणी के तहत ट्रांस व्यक्तियों को जोड़ने पर विचार कर रही है। इसे केवल एक बयान के रूप में रिपोर्ट करने से ऐसा लगता है कि यह एक सकारात्मक कदम है जिसका ट्रांस व्यक्ति स्वागत करेंगे। हालाँकि, कोटे के भीतर कोई कोटा नहीं होने से, इसका मतलब यह होगा कि सभी ट्रांस व्यक्तियों, जिनमें एससी और एसटी श्रेणियों के लोग भी शामिल हैं, को बड़े ओबीसी पूल के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

- पाठ्यक्रम प्रस्तावों और परिवर्तनों पर रिपोर्टिंग करते समय समावेशी रूख अपनाएँ और LGBTQIA+ कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों और समुदायों से बात करें।

  - उदाहरण के लिए, जनवरी 2023 में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा 'जेंडर समावेशी' प्रशिक्षण के लिए एक मैनुअल प्रकाशित किया गया था। कई मीडिया संस्थाओं ने इस ख़बर को बिना किसी LGBTQIA+ कार्यकर्ता से बात किए ही कवर किया, जबकि यह मैनुअल ट्रांसजेंडर और इंटरसेक्स विविधता वाले व्यक्तियों के बारे में ग़लत सूचना और रूढ़िवादिता से भरा हुआ था। शिक्षा नीति को कवर करने वाले पत्रकारों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे किसी दस्तावेज़ में कही गई बातों को दोहराने के बजाय समस्याग्रस्त दिशानिर्देशों पर रोशनी डालें।

- विभिन्न शैक्षिक निकायों और संस्थानों द्वारा प्रदान की जाने वाली यौन शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम के बारे में समाचारों को कवर करते समय यह देखें कि क्या पाठ्यक्रम में विविध जेंडर और यौनिकताएँ शामिल हैं? यौन शिक्षा के बारे में बात करते समय विषमलैंगिक दृष्टिकोण तक ही सीमित न रहें।

- LGBTQIA+ छात्र या शिक्षक की उपलब्धियों को कवर करते समय, सुनिश्चित करें कि आपके शब्द कृपा वाले न लगें। किसी उपलब्धि के बारे में ख़बर को किसी व्यक्ति के जेंडर या यौनिकता तक सीमित न करें - यह केवल उनकी शक्सियत का एक हिस्सा है।

- उदाहरण के लिए, यदि किसी क्वीयर व्यक्ति ने संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की सिविल सेवा परीक्षा उच्च रैंक के साथ उत्तीर्ण की है, तो उन सुर्खियों से बचें जो उन्हें 'प्रथमता' प्रदान करती हैं। इसकी अत्यधिक संभावना है कि कई LGBTQIA+ व्यक्तियों ने भी वही परीक्षा उत्तीर्ण की है पर वह समाज के सामने नहीं आए हैं। एक प्रत्यक्ष उपलब्धि अन्य LGBTQIA+ व्यक्तियों और समुदाय के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य करती है और समाज में हमारी उपस्थिति को सामान्य बनाती है पर उस व्यक्ति के कौशल के बजाय उनकी क्वीयर पहचान पर पूरा फ़ोकस करना ठीक नहीं।

विज्ञान क्षेत्र में क्वीयर समुदाय से घृणा और LGBTQIA+ व्यक्तियों के प्रतिनिधित्व की कमी

आम धारणा है कि विज्ञान और शिक्षा जगत निष्पक्ष हैं, लेकिन कई शोधकर्ताओं ने बताया है कि ऐसा हमेशा नहीं हो सकता क्योंकि विज्ञान लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता है, और लोगों में सचेत और अचेत पूर्वाग्रह या पक्षपात हो सकते हैं। वैज्ञानिक संस्थानों में ऐतिहासिक रूप से क्वीयर समुदाय के लिए भय और नफ़रत रही है जिसकी वजह से LGBTQIA+ वैज्ञानिक असुरक्षित महसूस करते हैं। इसके इलावा, शोधकर्ताओं का पूर्वाग्रह वैज्ञानिक अध्ययनों में भी दिखता है।

मनुष्यों और जानवरों में जेंडर और यौनिकता पर हुए अध्ययनों का एक बड़ा प्रतिशत पक्षपाती पाया गया है, जिस की वजह से कुछ शोध समूहों ने इस मुद्दे पर जागरूकता बढ़ाने के प्रयास शुरू किए हैं। हमें रिसर्च में एक सकारात्मक LGBTQIA+ नज़रिए की ज़रूरत है जो जेंडर और यौनिकता पर एक विस्तृत दृष्टिकोण अपनाए। लोगों को जेंडर, लिंग और यौनिकता की ठोस सीमाओं में बांधना विज्ञान और सामाजिक न्याय दोनों के लिए हानिकारक है।

उदाहरण के लिए, 2021 में जरनल ऑफ एनवायर्नमेंटल मैनेजमेंट में प्रकाशित एक अध्ययन की आलोचना की गई क्योंकि इसमें समलैंगिक लोगों को स्पेन में एक रेत के टिब्बे को पर्यावरणीय क्षति के लिए ज़िम्मेदार ठहराया गया था। सोशल मीडिया पर ऐसी प्रतिक्रिया मिलने के बाद अध्ययन को वापस लिया गया।

कई मेडिकल पाठ्यपुस्तकें अभी भी समलैंगिकता को यौन विचलन और/या दंडनीय अपराध के रूप में दर्शाती हैं। 1974 तक, अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन की पाठ्यपुस्तकों में समलैंगिकता को "सोशियोपैथिक पर्सनैलिटी डिस्टरबेन्स (एक मनोरोग)" के श्रेणी में रखा गया था। चिकित्सा साहित्य में क्वीयर समुदाय के लिए डर और नफ़रत खत्म करने के लिए दुनिया भर में संघर्ष चल रहा है। अक्टूबर 2021 में भारतीय राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग ने मेडिकल विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और संस्थानों को निर्देश दिया था कि यदि पाठ्यक्रम और पुस्तकों में यौन सम्बन्ध या LGBTQIA+ समुदायों और उनकी यौनिकता के बारे में अवैज्ञानिक, अपमानजनक, या भेदभावपूर्ण जानकारी है तो उन्हें मंज़ूरी न दें। इस निर्देश में मद्रास उच्च न्यायालय के एक फैसले का हवाला दिया गया है जिसमें चिकित्सा शिक्षा में बड़े पैमाने पर क्वीयर व्यक्तियों के प्रति भय और नफ़रत फैलाने वाली बातों को रेखांकित किया गया था। हालाँकि यह एक अच्छा बदलाव है, चिकित्सा और अन्य वैज्ञानिक अध्ययनों में यह पक्षपात अभी भी बना हुआ है।

न्यूज़रुम्स को विज्ञान और टेक्नॉलजी के बारे में ख़बरें कवर करते समय वैज्ञानिक समुदाय और उसके साहित्य में LGBTQIA+ व्यक्तियों के प्रति मौजूदा पूर्वाग्रहों से सावधान रहने की आवश्यकता है।

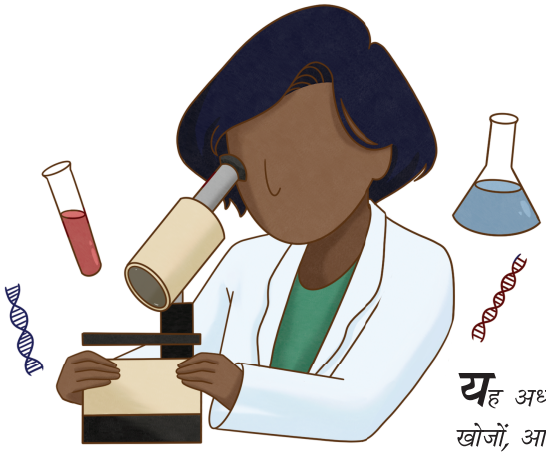

विज्ञान

यह अध्याय LGBTQIA+ व्यक्तियों के संबंध में वैज्ञानिक शोध, प्रकाशन, खोजों, आविष्कारों और टेक्नॉलजी के बारे में है।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों से जुड़ी विज्ञान और तकनीकी ख़बरों की रिपोर्टिंग करते समय सनसनीखेज़ वर्णनों से बचें। सिर्फ़ ज़्यादा पाठक पाने के लिए दिए गए शीर्षक जैसे "एक आदमी जो गर्भवती हो गया" और "एक आदमी जिसे पिरीयड्ज़ आते हैं" न केवल त्रुटिपूर्ण हैं, बल्कि समस्याग्रस्त भी और सिर्फ़ सनसनी फैलाने के लिए क्वीयर व्यक्तियों के जीवन का उपयोग करते हैं।

- 'विकृति थेरेपी' के बारे में बात करने से बचें जब तक कि लेख सीधे तौर पर इसमें शामिल हिंसा और अनैतिकता पर चर्चा न करे।

- ध्यान रखें कि आप जो रिसर्च पढ़ रहे हैं, वे ग़लत विज्ञान पर आधारित हो सकती है। इसमें क्वीयर व्यक्तियों और जेंडर के बारे में अवैज्ञानिक जानकारी को छुपाने के लिए वैज्ञानिक शब्दजाल का उपयोग किया जाता है। इन लेखों को अपनी ख़बर में इस्तेमाल करने से पहले किसी क्वीयर वैज्ञानिक या शोधकर्ता से उसकी विश्वसनीयता की जाँच अवश्य कराएँ।

- 'तीसरे लिंग' वाक्यांश, ट्रांस व्यक्तियों के 'मृत नाम' का इस्तेमाल और विषमलैंगिक दृष्टिकोण कुछ ऐसे संकेत हो सकते हैं जिससे आप रिसर्च पेपर में छिपे पूर्वाग्रह या क्वीयर समुदाय के प्रति नफ़रत और भय को पहचान सकते हैं। (सही परिभाषाओं के लिए शब्दावली देखें)

- कुछ वैज्ञानिक पत्रिकाओं और चिकित्सा पाठ्यपुस्तकों में LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में भयपूर्ण या नकारात्मक अवधारणाएँ हो सकती हैं। पत्रकारों को अपनी ख़बरों और वीडियो प्रस्तुतियों में इन किताबों की किसी भी जानकारी का उपयोग करने से पहले किसी क्वीयर विशेषज्ञ से परामर्श करना चाहिए।

- 'विकृत थेरेपी, सोडोमी, समलैंगिक प्रवृत्तियों की उत्पत्ति, क्वीयर लोगों के बीच एक विशेष व्यवहार का प्रचलन' आदि विषयों के बारे में चिकित्सा और वैज्ञानिक लेख आमतौर पर पक्षपाती और नकारात्मक होते हैं। उनका इस्तेमाल करने से बचें।

- जिन विशेषज्ञों के विचारों को आप अपनी ख़बरों में जगह देते हैं, उनकी क्वीयर विषयों पर राजनीतिक राय जानना महत्वपूर्ण है। हालाँकि किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना लगभग असंभव है जो राजनीतिक रूप से परिपूर्ण हो, पर यह ज़रूरी है कि

पत्रकार क्वीयर अधिकारों और विभिन्न पहचानों के परस्पर सम्बन्धों पर इन विशेषज्ञों की सोच को जांचते रहें। इस से LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में प्रचलित सामाजिक पूर्वाग्रहों से बचा जा सकेगा।

- किसी वैज्ञानिक लेख या विशेषज्ञ द्वारा दिए गए इंटर्व्यू में क्वीयर व्यक्तियों के बारे में तार्किक लगने वाली बात ज़रूरी नहीं वैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ और समावेशी हो।
    - उदाहरण के लिए, यह राय कि "जिन महिलाओं के साथ यौन दुर्व्यवहार हुआ है, उनमें पुरुषों के प्रति घृणा पैदा हो जाती है और वे समलैंगिक बन जाती हैं" कुछ लोगों को तर्कसंगत लग सकती है, लेकिन यह धारणा अवैज्ञानिक है और समलैंगिक/क्वीयर व्यक्तियों के बारे में ग़लत जानकारी को बढ़ावा देती है।
- जेंडर और पुरुषत्व/स्त्रीत्व नियम सामाजिक धारणाओं पर टिके हैं। शब्दों और/या दृश्यों के माध्यम से उन्हें कायम रखना जेंडर की बाइनरी सीमाओं को मजबूत करता है और जेंडर के बारे में एक विस्तृत सोच को कमज़ोर करता है।
- ग़ैर जेंडर प्राणी जैसे जानवर, प्रकृति के तत्व और मानव निर्मित वस्तुओं को जेंडर नियमों में ढालने से बचें।
- किसी वैज्ञानिक लेख को पढ़ते समय क्वीयर सिद्धांत को लागू करने पर विचार करें ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह लेख समावेशी है या नहीं। क्वीयर सिद्धांत का मतलब दुनिया को पुरानी जेंडर और यौनिक परिभाषाओं से परे देखना और सामाजिक असमानता के ख़िलाफ़ काम करना।

विज्ञान पर संवेदनशील रिपोर्टिंग के लिए संसाधन

- क्वीयर थ्योरी: एन इंट्रोडक्शन, एनामेरी जगोस, 1997
- एवोलूयशनस रेन्बो - डाईवरस्टी, जेंडर एंड सेक्शूऐलिटी इन नेचर एंड पीपल, जोन रफ़गार्डन, 2009
- क्वीयरफोबिक इमयूनोपॉलिटिक्स इन द केस ओफ एचआईवी/एड्स: पोलिटिकल इकॉनमी, द डार्क लेगसी आफ ब्रिटिश कोलोनीयलिज़म एंड क्वीयरफ़ोबिया इन सब-सहारन अफ्रीका, लिंडा रोलैंड डेनिल, 2021, सेक्शूऐलिटी एंड कल्चर

मनोरंजन

यह अध्याय सिनेमा, संगीत, थिएटर, कला, नृत्य, लोक प्रदर्शन, टेलिविज़न कार्यक्रम और साहित्य को कवर करने वाले पत्रकारों के लिए है।

क्वीयर व्यक्तियों से संबंधित मनोरंजन गतिविधियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

- LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा की गयी रचनाएँ
- LGBTQIA+ व्यक्तियों के बारे में अन्य लोगों द्वारा की गयी रचनाएँ

इस गाइड के अन्य अध्यायों की ही तरह, ध्यान में रखने वाली बात यह है कि क्वीयर व्यक्तियों को वह सम्मान दिया जाए जिसके वो हक़दार हैं, और निष्पक्ष और उचित रिपोर्टिंग सुनिश्चित की जाए।

- **LGBTQIA+ व्यक्तियों की रचनाएँ:** LGBTQIA+ व्यक्तियों की रचनाएँ क्वीयर व्यक्तियों या अन्य लोगों के बारे में हो सकती हैं। ऐसी रचनाओं के बारे में समीक्षा या ख़बर बनाते समय, उन्हें अन्य रचनाकारों द्वारा किए गए कार्यों के बराबर मानें। ख़बरों या लेखों को रचनाकार की पहचान से परे जाना चाहिए और रचना की भी उसी तरह समीक्षा की जानी चाहिए। हालाँकि, अगर किसी क्वीयर व्यक्ति ने अपना काम करने के लिए लम्बा संघर्ष किया है तो इसके लिए उनकी दृढ़ता की सराहना की जानी चाहिए।
    - अगर किसी क्वीयर व्यक्ति का अपनी पहचान के कारण मनोरंजन या रचनात्मक क्षेत्र में जगह बनाने का सफ़र महत्वपूर्ण है, तो इसका उल्लेख करने से पहले आप उनकी सहमति प्राप्त कर लें।
    - LGBTQIA+ व्यक्तियों की रचनाओं के बारे में रिपोर्ट करते समय कला को कलाकार से अलग रखें। उदाहरण के लिए, एक विषमलैंगिक निर्देशक के काम को उनकी पहचान से परे देखा जाता है, तो LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए भी यही नियम लागू करें।
    - यदि किसी LGBTQIA+ लेखक ने मुख्य नायक के रूप में एक क्वीयर व्यक्ति को लेकर एक काल्पनिक रचना रची है, तो उस पात्र को काल्पनिक ही माना जाना चाहिए। चरित्र की यात्रा की तुलना लेखक की यात्रा से करने से बचें और ऐसी धारणाओं के आधार पर लेख या समीक्षा न लिखें।

- यदि कार्य एक आत्मकथा है या नाटक/फिल्म लेखक के जीवन पर आधारित है, तो रचनाकार की जेंडर/यौनिक पहचान को प्रकट कर सकते हैं। अन्य सभी मामलों में, उनकी सहमति महत्वपूर्ण है और अपमानजनक शब्दों का उपयोग किए बिना ऐसी जानकारी को संवेदनशील तरीके से पेश करना भी ज़रूरी है (सही परिभाषाओं के लिए शब्दावली देखें)। कलाकार को यह सूचित करें कि आपकी ख़बर या लेख में ऐसी जानकारी होगी।

- **LGBTQIA+ व्यक्तियों और उनके जीवन के बारे में रचनाएँ:** क्योंकि मनोरंजन उद्योग में LGBTQIA+ व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व कम है तो उनके बारे में अधिकांश रचनाएँ विषमलैंगिक कलाकारों द्वारा बनाई गई हैं।
  - सिर्फ इसलिए कि किसी रचना में LGBTQIA+ वर्ग शामिल हैं, यह एक महान कला या सटीक काम नहीं हो जाता।
  - जब LGBTQIA+ व्यक्ति किसी रचना में दर्शाए गए LGBTQIA+ पात्रों के अभद्र या ग़लत चित्रण के बारे में चिंता जताते हैं, तो उनके नज़रिए से उस कला की समीक्षा करना नैतिक रूप से सही है।
  - यह पत्रकार की ज़िम्मेदारी है कि यह देखें कि क्या क्वीयर पहचान वास्तव में कहानी के लिए आवश्यक थी या उसका उपयोग केवल हास्य रस के लिए या प्रतीकात्मक तौर पर किया गया है।
  - पत्रकार की एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है कि वह क्वीयर व्यक्तियों की गतिविधियों, शारीरिक भाषा और मेकअप को अपमानजनक तरीके से चित्रित करने वाली मनोरंजन सामग्री की आलोचना करें।

- **लोक कलाएँ**
  - मुख्यधारा के सिनेमा, टेलीविज़न शो और साहित्य के अलावा, क्वीयर व्यक्ति लोक कलाओं के कई पहलुओं में योगदान देते हैं। लंबे समय से, छोटे शहरों और गांवों में क्वीयर व्यक्तियों द्वारा लोक मंच नृत्य और बाकी सांस्कृतिक प्रदर्शन किए जाते रहे हैं।
    - इन प्रदर्शनों को किसी अन्य लोक प्रदर्शन की तरह ही देखा जाना चाहिए और वैसे ही प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए। ख़बर की भाषा को निष्पक्ष रखिए।
    - यदि यह प्रासंगिक और उपयोगी है, तो अपने पाठकों और दर्शकों को कवर की जा रही लोक कला में LGBTQIA+ व्यक्तियों की भागीदारी के इतिहास के बारे में सूचित करें और कला के विकास में उनके योगदान को अपनी रिपोर्ट में जगह दें।
    - कभी-कभी, अपर्याप्त कानूनी सुरक्षा के कारण ऐसे कार्यकर्मों में अपराध हो जाते हैं जिसमें क्वीयर व्यक्ति शामिल हों। इन घटनाओं को अन्य आपराधिक घटनाओं की तरह ही देखा जाना चाहिए। (अधिक जानकारी के लिए 'अपराध' अध्याय देखें)
    - मनोरंजन उद्योग में क्वीयर व्यक्तियों के बारे में जानकारी एकत्र करते समय सुनिश्चित करें कि यह जानकारी या उसे एकत्र किए जाने वाली प्रक्रिया क्वीयर कलाकारों की आजीविका को प्रभावित न करे।

ट्रांसजेंडर एथलीट, अनिश्चित विज्ञान और टेस्टोस्टेरोन का डायनासोर

सायंतन दत्ता

1985 में स्पेनिश एथलीट मारिया जोस मार्टिनेज-पैटिनो वैश्विक विश्वविद्यालय खेलों में भाग लेने के लिये जापान के कोबे शहर गईं। वहाँ, उन्होंने अपना दूसरा "स्त्रीत्व परीक्षण" कराया: उनके गाल के अंदर के हिस्से से कुछ कोशिकाएँ ली गईं जिनका क्रोमोसोम (गुणसूत्र) कैरियोटाइप (संरचना) के लिए विश्लेषण किया गया ताकि यह पुष्टि हो सके कि उनके पास दो X क्रोमोसोम हैं या नहीं। उनकी दौड़ प्रतियोगिता से एक रात पहले, डॉक्टर ने सूचित किया कि परीक्षण में एक "समस्या" है जिसकी वजह से मार्टिनेज-पैटिनो को अगले दिन के मुक़ाबले में भाग लेने से रोक दिया गया।

दो महीने बाद, उनके परीक्षण के नतीजों ने जापान से स्पेन में खेल महासंघ तक लंबा सफर तय किया और वह घोषणा की जिससे उसकी दुनिया तहस-नहस हो जाने वाली थी: XX के बजाय - जैसा कि उनके पहले परीक्षण में घोषित किया गया था - उनका कैरियोटाइप XY पाया गया।

1986 में जब वह बाधा दौड़ में प्रथम स्थान पर रहीं, तो यह ख़बर मीडिया में लीक हो गई। मार्टिनेज-पैटिनो को भविष्य में रेसिंग से रोक दिया गया, उनकी खेल छात्रवृत्ति रद्द कर दी गई और उनके दौड़ने की समयावधि को एथलेटिक रिकॉर्ड से मिटा दिया गया। इन सब के पीछे धारणा यह थी कि उनकी क्रोमोसोम संरचना उन्हें अन्य महिलाओं (जिनके पास XX का कैरियोटाइप था) पर अनुचित बढ़त प्रदान करती है।

टेस्टोस्टेरोन कहाँ है?

मनुष्यों में Y क्रोमोसोम एक जीन का स्थान है जिसे "Y का लिंग-निर्धारण क्षेत्र" कहा जाता है। एक विकासशील भ्रूण में, यह जीन एक प्रोटीन कोड करता है जो टेस्टीज़ (वृषण) के विकास में मदद करता है और टेस्टीज़ फिर उस हार्मोन का उत्पादन करता है जिसे अक्सर "पुरुष हार्मोन" या टेस्टोस्टेरोन कहा जाता है। जीन डीएनए से बने हुए आनुवंशिकता की इकाई होते हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ते रहते हैं।

टेस्टोस्टेरोन का स्तर आम तौर पर यौवन के दौरान चरम पर होता है, जिसकी वजह से "बड़ी और मजबूत हड्डियां, अधिक बड़ी और ताक़तवर मांसपेशियाँ, और उच्च संचार वाले हीमोग्लोबिन के साथ-साथ संभावित मनोवैज्ञानिक (व्यवहारिक)

विशेषताएँ होती हैं।" यह कहा जाता है कि पुरुष शरीर में टेस्टोस्टेरोन का चरम स्तर एथलेटिक्स और खेल में किसी महिला पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करता है।

हालाँकि, इस धारणा के साथ एक समस्या है। कई जैविक अणुओं की तरह टेस्टोस्टेरोन को भी कार्य करने के लिए प्रोटीन के एक और सेट - जिसे रिसेप्टर्स कहा जाता है - की आवश्यकता होती है। वास्तव में, यह पाया गया है कि जिस पुरुष शरीर में मांसपेशियों का मास (द्रव्यमान) 12 सप्ताह के शक्ति प्रशिक्षण के बाद सबसे अधिक बढ़ता है, उनमें टेस्टोस्टेरोन का स्तर सबसे अधिक नहीं होता, बल्कि उन लोगों में इन रिसेप्टर्स का स्तर उच्चतम होता है जिनसे टेस्टोस्टेरोन जुड़ता है (इन्हें "एण्ड्रोजन रिसेप्टर्स" कहा जाता है)।

इसके विपरीत, मार्टिनेज़-पैटिनो में एण्ड्रोजन असंवेदनशीलता नामक एक स्थिति थी, यानी उनके एण्ड्रोजन रिसेप्टर्स टेस्टोस्टेरोन पर प्रतिक्रिया नहीं करते थे। इसका मतलब मेडिकल रिपोर्ट में दी गयी उनकी क्रोमसोम संरचना का उनके लिंग का निर्धारण करने में कोई मायने नहीं रह जाता। वैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और पत्रकारों के समर्थन के कारण, दो साल बाद, 1988 में मार्टिनेज़-पैटिनो को इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर एथलेटिक्स ने फिर से दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति दी।

हालाँकि, एक बात बदली नहीं: यह धारणा कि जिनके शरीर में टेस्टोस्टेरोन की मात्रा अधिक होती है वो खेलों में अनुचित लाभ पाते है। यह धारणा ट्रांसजेंडर महिलाओं, इंटरसेक्स विविधिता वाले लोगों और ऐसी सिस जेंडर महिलाओं को, जिनके टेस्टोस्टेरोन का स्तर स्वीकृत सीमा से ऊपर है, खेल प्रतियोगिताओं से बाहर रखती है।

मार्टिनेज-पैटिनो का मामला एक भारतीय धावक शांथी सौंदरराजन की याद दिलाता है, जो 2006 में दोहा एशियाई खेलों में रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी थीं। हालाँकि, उनका "लिंग परीक्षण" किया गया - जिसमें वह असफल रही - और अंततः, उनका पदक छीन लिया गया और उन्हें खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने से रोक दिया गया।

सौंदरराजन, मार्टिनेज-पैटिनो की ही तरह, एण्ड्रोजन-असंवेदनशील थे।

विज्ञान क्या कहता है?

सौंदरराजन, मार्टिनेज-पटिनो, पिंकी प्रमाणिक, दुती चंद और उन जैसे अन्य लोगों की मुश्किलों की वजह दो विवादास्पद पर लोकप्रिय मान्यताएं हैं: कि किसी व्यक्ति का लिंग केवल पुरुष या महिला हो सकता है, और पुरुषत्व या स्त्रीत्व की मात्रा स्पष्ट रूप से क्रोमोसोमल और हार्मोनल संरचना के साथ निर्धारित की जा सकती है।

अपनी पुस्तक 'सेक्स/जेंडर: बायोलॉजी इन ए सोशल वर्ल्ड' (2012) में, जीव विज्ञानी और नारीवादी ऐन फॉस्टो-स्टर्लिंग जैविक लिंग की विभिन्न परतों को उजागर करती हैं, जैसा कि 1950 और 60 के दशक में चिकित्सक और सेक्सोलॉजिस्ट जॉन मोनी द्वारा प्रस्तावित किया गया था। यह मॉडल "लिंग (सेक्स) की परतें" के नाम से जाना जाता है और इसके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन "क्रोमोसोमल लिंग" से शुरू करता है, यानी, 'लिंग क्रोमोसोम' (X और Y) की एक विशिष्ट संरचना। अपने भ्रूण के जीवन के लगभग 8-12 सप्ताह तक व्यक्ति का लिंग "उदासीन" होता है, और केवल जब लिंग क्रोमोसोम पर विशेष जीन की अभिव्यक्ति शुरू होती है, तो उसके शरीर के भीतर गोनाड ग्रंथि बनती है। फ़ॉस्टो-स्टर्लिंग के अनुसार, यह "भ्रूण गोनाडल लिंग" है।

फिर यह गोनाड "लिंग हार्मोन" बनाते हैं जो भ्रूण को "भ्रूण हार्मोनल लिंग" प्रदान करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आंतरिक प्रजनन अंगों (जैसे, फैलोपियन ट्यूब, अंडाशय, गर्भाशय, सेमिनल ट्यूब, आदि) का निर्माण होता है। इस समय पर कहा जाता

है कि भ्रूण ने "आंतरिक प्रजनन लिंग" प्राप्त कर लिया है। भ्रूण के विकास के चौथे महीने के आसपास, जननांगों का निर्माण होता है जिससे भ्रूण को "भ्रूण जननांग लिंग" प्राप्त होता है।

इसी तरह, जैसे ही यौवन के दौरान सेक्स हार्मोन का स्तर चरम पर होता है, व्यक्ति को "यौवन संबंधी हार्मोनल लिंग" प्राप्त होता है जो उनके शरीर को आकृति देता है (यह फॉस्टो-स्टर्लिंग के अनुसार "यौवन रूपात्मक लिंग" है)। फॉस्टो-स्टर्लिंग कहती हैं कि ज़रूरी नहीं ये परतें हमेशा एक-दूसरे से सहमत हों और एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप में भी विकसित हो सकती हैं। एण्ड्रोजन असंवेदनशीलता एक ऐसा मामला है जहाँ व्यक्ति का क्रोमोसोमल लिंग और भ्रूण हार्मोनल लिंग अन्य लिंग परतों के साथ नहीं बैठता।

इस प्रकार, जैविक लिंग स्पष्ट रूप से न तो क्रोमोसोम द्वारा निर्धारित होता है, न ही जननग्रंथियों और हार्मोन्ज़ द्वारा। जब सभी लिंग परतें एक-दूसरे के साथ बैठती हैं, तो व्यक्तियों को पारम्परिक रूप से "पुरुष" और "महिला" कहा जाता है; हालाँकि, जब ये परतें उन तरीकों से जुड़ती हैं जो पारम्परिक नहीं हैं, तो इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति इंटरसेक्स विविधिता के साथ विकसित होते हैं।

अनुमान के अनुसार, तीस से अधिक विभिन्न प्रकार की इंटरसेक्स विविधताएं हैं। एण्ड्रोजन असंवेदनशीलता के मामले में, किसी व्यक्ति का क्रोमोसोमल लिंग आमतौर पर XY होता है। पर व्यक्तियों में टेस्टोस्टेरोन के प्रति असंवेदनशीलता के भिन्न स्तर की वजह से भ्रूण जननांग लिंग, आंतरिक प्रजनन लिंग और यौवन रूपात्मक लिंग काफ़ी भिन्न हो सकते हैं।

न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, अप्रैल 2023 में, अमरीका की कांग्रेस में रिपब्लिकन पार्टी ने ट्रांसजेंडर महिलाओं और लड़कियों को "महिलाओं के" एथलेटिक कार्यक्रमों में भाग लेने से रोकने के लिए मतदान किया। हालाँकि रिपोर्ट में कहा गया कि इस विधेयक के सीनेट द्वारा पारित होने या राष्ट्रपति द्वारा मंज़ूरी मिलने की कोई "गुंजाइश नहीं है", यह वाक्या ट्रांसजेंडर महिलाओं की अपने जेंडर वर्ग में खेलने से जुड़े विवादों में एक नयी कड़ी थी।

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC) ने 2004 में एक ऐतिहासिक फ़ैसले के ज़रिए ट्रांसजेंडर एथलीटों को ओलंपिक में भाग लेने की अनुमति दी और यह स्वीकार किया कि ट्रांसजेंडर महिलाएं जो हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी लेती हैं - जिसमें आम तौर पर टेस्टोस्टेरोन अवरोधक और एस्ट्रोजन सप्लीमेंट का संयोजन शामिल होता है - उनके शरीर में संचारित टेस्टोस्टेरोन का स्तर काफी नीचे होता है (अक्सर सिस जेंडर महिलाओं के बराबर)।

2018 साइंस मैगज़ीन में छपी एक रिपोर्ट ने बताया कि खेलों में भाग लेने की इच्छुक ट्रांसजेंडर महिलाओं के लिए दिशानिर्देश इस प्रकार थे: उन्हें जेंडर संगति सर्जरी से गुज़रना होगा, सम्बंधित अधिकारियों से जेंडर की कानूनी मान्यता प्राप्त करनी होगी, और कम से कम दो साल की "हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी" लेनी होगी। इन दिशानिर्देशों के बावजूद यह धारणा जारी है कि जिन ट्रांसजेंडर महिलाओं को पहले टेस्टोस्टेरोन मिल चुका है, उन्हें हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी के बावजूद सिस जेंडर खिलाड़ियों पर बढ़त हासिल होगी।

2021 में, अमेरिका स्थित दो अस्पतालों के डॉक्टरों ने एक अध्ययन प्रकाशित किया जिसमें यह प्रदर्शित करने का दावा किया गया कि दो साल की "स्त्रीकरण चिकित्सा" (यानी, हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी) के बाद, ट्रांसजेंडर महिलाओं ने पुश-अप और सिट-अप करने में सिस जेंडर खिलाड़ियों की तुलना में कोई "एथलेटिक विशेषता" नहीं दिखाई। पर दो साल के टेस्टोस्टेरोन ब्लाकर्ज़ और एस्ट्रोजन सप्लीमेंट के बावजूद, वे 12 प्रतिशत ज़्यादा फ़ुर्तीले पाए गए।

हालांकि यह अध्ययन इस निष्कर्ष को बढ़ावा दे सकता है कि हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी से पहले शरीर में टेस्टोस्टेरोन की ज़्यादा मात्रा होने से ट्रांसजेंडर महिलाओं को एथलेटिक खेलों में लाभ मिल सकता है, पर ऐसी संभावना है कि कुछ कमियों की वजह से शोध परिणाम ग़लत हों, जिन्हें लेखक स्वयं अपने पेपर में स्वीकार करते हैं। इनमें से सबसे उल्लेखनीय यह है कि शोधकर्ताओं के पास ट्रांसजेंडर एथलीटों का कोई नियंत्रण समूह नहीं था जो हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी पर नहीं थे; इस वजह से हो सकता है कि उनके नतीजे ट्रांसजेंडर महिलाओं पर पहले से मौजूद टेस्टोस्टेरोन के प्रभावों के बजाय समय बीतने के कारण प्रदर्शन में बेहतरी को दर्शाते हों।

शोधकर्ता जोआना हार्पर, जो ख़ुद एक ट्रांसजेंडर महिला एथलीट हैं, ने 2021 के एक अध्ययन में पाया कि हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी की वजह से ट्रांसजेंडर महिलाओं में हीमोग्लोबिन का स्तर सिस जेंडर महिलाओं जितना गिर जाता है। इस थेरेपी की वजह से ट्रांसजेंडर महिलाओं में ताकत, लीन बॉडी मास और मांसपेशियों के क्षेत्र में काफ़ी कमी आती है, पर यह फिर भी सिस जेंडर महिलाओं के स्तर से ऊपर देखे गए। यहाँ यह जानना ज़रूरी है कि अप्रैल 2023 में साइंस मैगज़ीन में छपी एक रिपोर्ट बताती है कि, "...एथलीटों के हीमोग्लोबिन और मांसपेशियों के प्रयोगशाला अध्ययनों से यह पता नहीं चलता कि क्या ट्रांस महिलाएं सिस जेंडर महिलाओं से ज़्यादा तेज दौड़ सकती हैं, ऊंची छलांग लगा सकती हैं, या दूर तक फेंक सकती हैं या नहीं।"

कुछ साल पहले, 2015 में हार्पर ने ऐसा पहला अध्ययन प्रकाशित किया था जो ट्रांसजेंडर महिला एथलीटों के प्रदर्शन पर केंद्रित था जिसे एक शोधकर्ता द्वारा, जो इस शोध से नहीं जुड़े थे, "अभूतपूर्व" माना गया। इसमें पाया गया कि हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी लेने वाली ट्रांसजेंडर महिलाओं ने सिस जेंडर महिलाओं के साथ विभिन्न दौड़ मुक़ाबलों में वैसा ही तुलनात्मक प्रदर्शन किया जैसा उन्होंने थेरेपी से पहले पुरुष धावकों के साथ किया था, मतलब ट्रांसजेंडर महिलाओं ने सिस जेंडर महिला धावकों पर कोई विशेष बढ़त नहीं दिखाई।

यदि प्रमुख धारणा यह है कि जिन लोगों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर अधिक है, वे एथलेटिक्स और खेलों में ज़्यादा अच्छा प्रदर्शन करेंगे तो उन ट्रांसजेंडर पुरुषों का क्या जो अपने हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी के रूप में टेस्टोस्टेरोन लेते हैं? माना जाता है कि टेस्टोस्टेरोन के सेवन के बावजूद, ट्रांसजेंडर पुरुषों को सिस जेंडर पुरुषों की तुलना में कोई विशेष शारीरिक लाभ नहीं होता। यह IOC के संशोधित 2015 दिशानिर्देशों में भी दिखता है जिसमें ट्रांसजेंडर पुरुष "जो महिला से पुरुष में परिवर्तित होते हैं, वे बिना किसी प्रतिबंध के पुरुष वर्ग में भाग ले सकते हैं।"

यह दिशानिर्देश ऊपर दिए गए 2021 के अध्ययन के विपरीत है जिसमें पाया गया था कि टेस्टोस्टेरोन सेवन के एक वर्ष के बाद, ट्रांसजेंडर पुरुषों ने सिट-अप में सिस जेंडर पुरुषों की तुलना में औसतन बेहतर प्रदर्शन किया। इसलिए, टेस्टोस्टेरोन या वैज्ञानिक डेटा - जो वर्तमान में अपने आप में एक विवादित क्षेत्र है - से कहीं ज़्यादा इस मुद्दे के मूल में एक चिर परिचित पारम्परिक धारणा है कि महिला का शरीर कमज़ोर और पुरुष का शरीर मज़बूत होता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि टेस्टोस्टेरोन और प्रतियोगिता में लाभ के इर्द-गिर्द होने वाली चर्चा इन पारम्परिक धारणाओं को जैविक और इसलिए प्राकृतिक, प्रमाणित करने का एक प्रयास हो सकता है।

वास्तव में, जैविक शोध से मिले आंकड़ों के अलावा अन्य पहलू भी यह बताने में मदद कर सकते हैं कि क्या ट्रांसजेंडर एथलीटों को अपने सिस जेंडर प्रतिद्वंदीयों पर कोई विशिष्ट लाभ होता है या नहीं। उदाहरण के लिए, तैराक लिया थॉमस एक ट्रांसजेंडर महिला हैं जिन्होंने 2022 में विश्वविद्यालय के खेलों में अमेरिका की शीर्ष ट्रॉफी जीती थी। कोई यह तर्क दे सकता है कि उन्हें अपने सिस जेंडर महिला प्रतिद्वंदियों पर शारीरिक बढ़त हासिल थी पर यह नोट किया गया कि उनका तैराकी का समय प्रभावशाली होते हुए भी, किसी भी तरह से रिकॉर्ड तोड़ने वाला नहीं था।

इसी तरह, ट्रांसजेंडर भारोत्तोलक लॉरेल हब्बार्ड ने 2020 टोक्यो ओलंपिक में महिला वर्ग में भाग लिया पर वह जल्द ही प्रतियोगिता से बाहर हो गई क्योंकि वह अपनी तीन लिफ्टों में से एक भी पूरी नहीं कर पायी। यदि ये दो मामले पर्याप्त नहीं हैं, तो हाल ही में हुई लंदन मैराथन को भी देखा जा सकता है जहाँ ट्रांसजेंडर महिला ग्लेनिक फ्रैंक ने महिला वर्ग में भाग लिया और 6,159वें स्थान पर रहीं। फ्रैंक के काफी औसत प्रदर्शन के बावजूद, मीडिया ने उन 14,000 महिलाओं को उजागर करने का विकल्प चुना जो उनके पीछे थी बजाय की उन 6,000 को जो उनके आगे थी।

इसलिए यह सोच कि खेलों में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को अपनी पहचान वाले जेंडर वर्ग में भाग लेने देना सिस जेंडर खिलाड़ियों के प्रति अनुचित है, भेदभावपूर्ण या भ्रमित करने वाला प्रतीत होता है।

किसी के जैविक लिंग के निर्धारक के रूप में टेस्टोस्टेरोन का स्तर यह नहीं बताता कि एथलेटिक खेलों में कौन अच्छा करेगा; इसके बजाय, यह कई लोगों - जिनमें सिस जेंडर महिलाएं भी शामिल हैं - को अनुचित नुकसान पहुँचाता है।

उदाहरण के लिए, 2021 में, नामीबिया के दो 18 वर्षीय धावकों, क्रिस्टीन मोबोमा और बीट्राइस मासिलिंगी, को "प्राकृतिक उच्च टेस्टोस्टेरोन स्तर" के कारण ओलंपिक में दौड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। अमरीकी सिविल लिबर्टीज़ यूनियन की एक रिपोर्ट के अनुसार, उन पर लगा प्रतिबंध यह दर्शाता है कि वह पुलिसिया पैमाना जिसके आधार पर लोगों को "महिला" की श्रेणी के अंदर या बाहर रखा जाता है एक नस्लीय सोच से आता है।

व्यापक धारणा है कि अश्वेत लोगों - पुरुष और महिला - में श्वेत लोगों के मुक़ाबले अधिक टेस्टोस्टेरोन होता है, पर 2013 में कैंसर कॉज़ेज़ एंड कंट्रोल पत्रिका में छपे एक अध्ययन में पाया गया कि यह सच नहीं है, कम से कम अश्वेत पुरुषों के मामले में तो नहीं। इस प्रकार, टेस्टोस्टेरोन सिर्फ एक हार्मोन नहीं है, बल्कि एक डायनासोर है जो अतीत के नस्लीय और जेंडर आधारित बोझ को ढोता है। शायद यही कारण है कि दार्शनिक कॉर्डेलिया फाइन ने अपनी तीसरी पुस्तक, जो इस धारणा पर सवाल उठाती है कि टेस्टोस्टेरोन मर्दानगी का सार है, का नाम 'टेस्टोस्टेरोन रेक्स' रखा है। यह एक विनाशकारी और हिंसक डायनासोर है।

यदि टेस्टोस्टेरोन के स्तर का उपयोग नारीत्व को परिभाषित करने के लिए जारी रहता है, तो हमारे पास एक ऐसी व्याख्या रह जाएगी जिसमें केवल एक प्रकार की महिलाएं शामिल हैं: वे जो सिस जेंडर और श्वेत हैं। नारीत्व के अन्य सभी रूपों पर पुलिसिया नियंत्रण जारी रहेगा, और अश्वेत और ट्रांसजेंडर महिलाओं को "एक महिला कैसी हो?" की इस संकीर्ण परिभाषा में फिट होने के लिए अपने शरीर को बदलने की आवश्यकता पड़ती रहेगी।

आशा की किरणें

2015 में, IOC ने ट्रांसजेंडर एथलीटों की भागीदारी के लिए अपने दिशानिर्देशों को संशोधित किया। हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी के दो साल के बजाय, नई नीति में ट्रांसजेंडर प्रतियोगियों को केवल एक वर्ष की थेरेपी को ज़रूरी माना गया। ट्रांसजेंडर एथलीटों को जेंडर संगति सर्जरी कराने की अनिवार्यता को भी हटा दिया गया।

इससे पहले, उसी वर्ष, धाविका दुती चंद ने खेल से संबंधित विवादों की मध्यस्थता करने वाली स्विट्ज़रलैंड स्थित स्वतंत्र संस्था, कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट (CAS), में भारतीय एथलेटिक्स महासंघ के खिलाफ एक ऐतिहासिक मामला जीता। इस मामले में, चंद ने 2014 में कथित "हाइपरएंड्रोजेनिज़्म" (यानी, शरीर में टेस्टोस्टेरोन और अन्य "पुरुष" हार्मोन के बढ़े हुए स्तर) के कारण हुए अपने निलंबन को चुनौती दी थी। CAS ने 2015 में चंद के पक्ष में फैसला सुनाया और खेल में सभी हाइपरएंड्रोजेनिज़्म नियमों को दो साल की अवधि के लिए निलंबित कर दिया।

पिछले साल, एथलेटिक प्रदर्शन पर टेस्टोस्टेरोन के प्रभावों के बारे में वैज्ञानिक सहमति की कमी को पहचानते हुए, IOC ने दिशानिर्देशों का एक और सेट जारी किया, जिसमें निम्नलिखित घोषणा की गई: "ऐसी नीतियाँ जिनका उद्देश्य किसी एथलीट के लिंग को साबित करना है, सभी एथलीटों को दुर्व्यवहार के जोखिम में डालती है और यह सभी महिलाओं को प्रभावित करता है।" "एथलीटों के शरीर पर निगरानी" रखने के बजाय, IOC ने सिफारिश की कि नियम बनाने वाले उन तरीकों की पहचान करें जिनमें "सभी महिलाओं" को शामिल किया जाए और कुछ एथलीटों को "अनुचित नुकसान" न हो।

फिर भी, ट्रांसजेंडर एथलीटों पर प्रतिबंध जारी है। विज्ञान, जो अपने अच्छे रूप में अनिश्चित और बुरे रूप में संदिग्ध है, उसका धोखे से इस्तेमाल कर पुरुष और महिला शरीर के बारे में पितृसत्तात्मक मिथकों को कायम रखा जा रहा है ताकि उन लोगों को एथलेटिक्स और खेल से बाहर रखा जा सके जो पारम्परिक सिस जेंडर परिभाषाओं में फिट नहीं होते। अपनी शारीरिक और व्यक्तिगत निजता के हनन के कारण ट्रांसजेंडर एथलीट न केवल अपने खेल प्रतिद्वंदियों से, बल्कि उन जड़ हो चुकी प्रथाओं से भी मुक़ाबला कर रहे हैं जो उन्हें भ्रमिक, त्रुटिपूर्ण धारणाओं में सिमटने के लिए मजबूर करती हैं।

इन बाधाओं के बावजूद ट्रांसजेंडर एथलीट अपने सपनों की ओर दौड़ना जारी रखे हुए हैं।

सायंतन दत्ता *(they/them) एक क्वीयर-ट्रांस पत्रकार हैं जो विज्ञान, स्वास्थ्य, जेंडर, यौनिकता और जाति के परस्पर मिलन पर लिखते हैं। वे वर्तमान में सेंटर फॉर राइटिंग एंड पेडागॉजी, क्रिया यूनिवर्सिटी, में पढ़ाते हैं।*

खेल

यह अध्याय खेलों में LGBTQIA+ व्यक्तियों को कवर करने से संबंधित है।

- खेल में क्वीयर या ट्रांस प्रकृति की जाँच एक विसंगति के रूप में न करें। एक क्वीयर, इंटरसेक्स या ट्रांस एथलीट का शरीर तथाकथित तर्कसंगतता की पड़ताल करने का निमंत्रण नहीं है। कितनी बार हम किसी एथलीट की विषमलैंगिकता या सिस जेंडर व्यक्ति होने के बारे में बात करते हैं?

- किसी की जेंडर संगति प्रक्रिया के बारे में आक्रामक प्रश्न न पूछें।

  - उदाहरण के लिए, यह न पूछें कि क्या कोई हार्मोन थेरेपी शुरू करने जा रहा है या जेंडर संगति सर्जरी करवा रहा है। हमें LGBTQIA+ लोगों के शरीर के प्रति अपनी जिज्ञासा से परे जाने की ज़रूरत है।

- किसी की पहचान को अभूतपूर्व मानने से बचें। उनके लिए, यह रोज़मर्रा की वास्तविकता है।

  - उदाहरण के लिए, जब न्यूज़ीलैंड की वेट लिफ़्टर लॉरेल हब्बार्ड ओलंपिक में भाग लेने वाली पहली ट्रांस महिला बनीं, तो वह नहीं चाहती थीं कि उनकी पहचान का महिमामंडन किया जाए। फिर भी, अधिकांश ख़बरों ने उसी को ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में चलाया और हमें शायद ही यह पता चल पाया कि हब्बार्ड एक एथलीट के रूप में कौन है, या उनके लिए भारोत्तोलन का क्या मतलब है। ट्रांस व्यक्ति होना कोई ब्रेकिंग न्यूज़ नहीं है।

- क्वीयर और ट्रांस नज़रिए से खेलों की समीक्षा करें। साथ ही इस बात पर ध्यान दें कि LGBTQIA+ एथलीट इस संकुचित सिस जेंडर - विषमलैंगिक वातावरण में कैसे रहते हैं।

- जाँच करें कि कैसे रूढ़ जेंडर मानदंडों में फँसी खेल संस्कृति विस्तृत पहचानों को दबाती और मिटाती है और किस प्रकार इसमें इस विषय पर बात करने के लिए बहुत कम गुंजाइश है।

- क्वीयर व्यक्तियों के अपनी पहचान सावर्जनिक तौर पर ज़ाहिर करने के बारे में आ रही ख़बरों से आगे बढ़ें। यह सीमित कवरेज इस बात को नज़रअंदाज कर देती है कि क्वीयर प्रकृति खेल के मैदान को कैसे एक ऐसे स्थान में बदल सकती है जो विविधिता की जांच करने के बजाय उसका जश्न मनाता है।

- पता लगाएँ कि खेल किस प्रकार क्वीयर एथलीटों के जीवन के अन्य पहलुओं को प्रभावित करता है चाहे वो उन रूढ़ जेंडर सीमाओं के भीतर हो जो उन पर हमेश थोपी जाती हैं या उनके बाहर।

- कुछ LGBTQIA+ व्यक्ति एक एथलीट के रूप में अपनी पहचान को अपनी अन्य पहचानों से अलग मान सकते हैं। जेंडर और यौनिकता पर बातचीत को मजबूर करने के बजाय, पता लगाएँ कि खेल के साथ उनका संबंध कैसा है।

- यह जानने की कोशिश करें कि खेल के वातावरण को सुखद कैसे बनाया जा सकता है, जहाँ हर किसी के खेल के साथ संबंध का जश्न मनाया जाए न कि हाशिए पर खड़े एथलीटों का चीर हरण कर जाँच की जाए।

- पूछें कि खेलों में किस तरह के प्रयास हो सकते हैं जिससे ऐसी सोच से परे जाया जा सके जो यह कहती है कि आपके कपड़ों के नीचे क्या है उस से यह निर्धारित होता है कि आप किसके साथ खेलते हैं, आपको कितना भुगतान मिलता है और आपकी कीमत क्या है।

- ऐसी कहानियाँ पेश करें जिस से यह पता चले कि कैसे खेल का क्षेत्र एक ऐसा स्थान बन सकता है जहाँ सब पर हावी होने वाली मर्दानगी के रूप और पितृसत्ता से प्रेरित स्त्रीत्व को ख़त्म किया जा सके।

- अपनी रिपोर्टिंग में पूछें कि कौन से खेल हैं जो जेंडर समता के लिए अच्छे उदाहरण पेश कर सकते हैं।

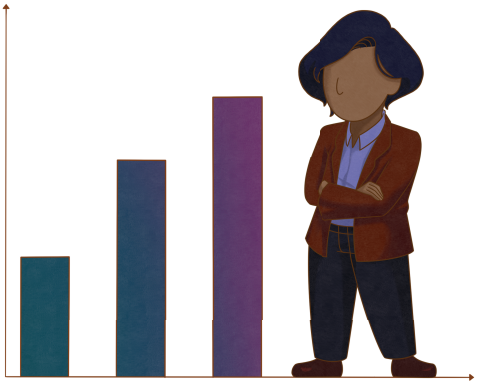

व्यवसाय

यह अध्याय विभिन्न व्यवसायों, रोज़गार और कार्यस्थलों में LGBTQIA+ व्यक्तियों को कवर करने के बारे में है।

सबसे शांत उद्योग, कार्यस्थल या व्यवसाय भी चुनौतियों, तनाव, झुंझलाहट या यहाँ तक कि खतरों से भरा हो सकता है। यह सब तब और बढ़ जाता है जब LGBTQIA+ कर्मचारियों को सुरक्षित रहने और शांति से अपनी आजीविका कमाने के लिए अपनी पहचान - या पहचानें - छिपानी पड़ती हैं।

तो व्यवसाय क्या है? आमतौर पर हम यह शब्द सुन कर किसी कम्पनी के बोर्ड रूम की कल्पना करते हैं, लेकिन वास्तव में, एक व्यवसाय में सरकारी कार्यालयों से लेकर निजी घर तक विविध प्रकार के कार्यस्थल और पेशेवर स्थान शामिल होते हैं।

व्यावसायिक ख़बरें केवल नियुक्तियों, बर्खास्तगी, विलय और अधिग्रहण या जनसम्पर्क (PR) के बुरे सपने के इर्द-गिर्द नहीं घूमती हैं। संपादक अक्सर यह भूल जाते हैं कि सफाई कर्मचारी, सेक्स वर्कर, औरों के घरों में काम करने वाले, सामाजिक कार्यकर्ता आदि भी व्यवसाय में संलग्न हैं। इन स्थितियों में LGBTQIA+ व्यक्तियों की कहानियों को कवर करने वाले पत्रकारों को सुर्खियों से परे जाकर न केवल तथ्यों को सटीकता के साथ रिपोर्ट करने की ज़रूरत है, बल्कि उन्हें संवेदनशीलता, पत्रकारीय दृढ़ता और सावधानी के साथ रिपोर्ट करना होगा।

यह सेक्शन कुछ बुनियादी नीतियों पर प्रकाश डालता है जिनसे पत्रकारों और संपादकों को पेशेवर परिवेश में LGBTQIA+ व्यक्तियों पर रिपोर्टिंग करते समय परिचित होना चाहिए, चाहे वह श्रमिक हों, कर्मचारी हों, विशेषज्ञ, बिज़नेस दिग्गज, प्रवासी या इंफलुएंसेर (प्रभावशाली व्यक्ति)।

- एक आम ग़लतफ़हमी है कि पेशेवर सेटिंग में LGBTQIA+ व्यक्तियों से संबंधित कहानियों की रिपोर्टिंग/संपादन करने वाले पत्रकारों को क्राइम संवाददाताओं की तुलना में कानूनी सीमाओं के बारे में उतनी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। इसके उलट, व्यावसायिक परिवेश में भी LGBTQIA+ पहचानों के लिए अत्यधिक संवेदनशीलता और सावधानी की आवश्यकता होती है। याद रखें कि हो सकता है आपके स्रोत ने अपने सहकर्मियों, बॉस, ग्राहकों आदि को अपनी पहचान न बताई हो। ग़लती से अगर आप उनकी पहचान ज़ाहिर कर देते हैं तो इसका प्रभाव खतरनाक न सही, पर अत्यधिक कष्टकारी तो हो ही सकता है। अपने स्रोतों की रक्षा करना एक पत्रकार का कर्तव्य है, चाहे वह युद्ध के मैदान में हो या किसी कार्यालय में।

- ध्यान दें कि ऐसे कॉर्पोरेट या संस्थागत परिवेश में क्वीयर या ट्रांस लोगों के प्रति नफ़रत को उजागर करना और भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है जहाँ उत्पीड़न करने वालों के पास अधिक सामाजिक बल और वित्तीय पूंजी हो। इस कारण से, पत्रकारों को LGBTQIA+ संपर्कों और स्रोतों के साथ काम करते समय सहानुभूति और आत्मविश्वास के साथ काम करने की आवश्यकता है। संक्षेप में, यह कार्य अनुभवहीन पत्रकारों के लिए नहीं है।

- LGBTQIA+ स्रोत के साथ इंटर्व्यू शुरू करने या प्रश्न पूछने से पहले, यहाँ उन कार्यों की एक सूची दी गई है जिन्हें आपको पूरा करना चाहिए: अपना परिचय दें, जिस प्रकाशन का आप प्रतिनिधित्व करते हैं उसके बारे में बताएं, अपने साक्षात्कारकर्ता का नाम और उम्र नोट करें (सुनिश्चित करें कि आप उनके नाम के सही अक्षर लिख रहे हैं), आप जिनका साक्षात्कार कर रहें हैं उनकी जेंडर पहचान, और पेशेवर भूमिका पूछें। सुनिश्चित करें कि वे सहज हैं और आपसे बात करने और बाद में किसी भी नए प्रश्न का उत्तर देने के लिए तत्पर हैं।

- यह स्थापित करना और लिखित रूप से पुष्टि करना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वो किस भूमिका में आप से बात कर रहे हैं: एक निजी व्यक्ति के रूप में या उनके कार्यस्थल/कम्पनी/उद्योग आदि के प्रतिनिधि के रूप में। उनकी भूमिका काफी हद तक इस चीज़ को प्रभावित कर सकती है कि आपकी ख़बर को कैसे देखा जाता है। इसके अलावा, सुनिश्चित करें कि आपके स्रोत उनकी कम्पनी की मीडिया नीतियों से अवगत हैं ताकि उन्हें पता हो कि वे आपको इंटर्व्यू देकर अपने कार्यस्थल नियमों का जानबूझकर उल्लंघन कर रहे हैं या उनकी हद में हैं। अपने स्रोत से पूछें कि क्या उनके कम्पनी के जन सम्पर्क या पी आर विभाग ने बातचीत को मंज़ूरी दी है। हालाँकि यदि रिपोर्ट सार्वजनिक हित में है या यदि आपका स्रोत पी आर विभाग से नहीं पूछना चाहता तो यह आवश्यक नहीं है, पर ऐसा करना पत्रकार और स्रोत दोनों की सुरक्षा के लिए अच्छा है।

- क्वीयर पेशेवरों के बारे में लिखते समय 'पॉज़िटिव, फ़ील गुड' व्याख्यान या ' 'ग़रीब-से-अमीर' बनने जैसे विवरणों में पड़ने से बचें। हाशिए पर रहने वाले लोगों का जीवन शायद ही कभी इतना सरल होता है, और रिपोर्ट में इसी स्तर की जटिलताओं को दर्शाना चाहिए।

- यह मत मानिए कि एक LGBTQIA+ पेशेवर को केवल इसलिए कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता क्योंकि उनका रोज़गार सुरक्षित है या क्योंकि उनके पास कैरियर/व्यवसाय से संबंधित कई उपलब्धियाँ हैं।

- ध्यान रखें कि LGBTQIA+ व्यक्ति की पहचान वर्ग, जाति, त्वचा के रंग, धर्म, विकलांगता, मानसिक स्वास्थ्य, वित्तीय पृष्ठभूमि आदि से भी जुड़ती है। क्या आपकी रिपोर्ट आपके स्रोत के व्यक्तित्व के एक पहलू पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करती है और उनके बारे में बाकी सभी चीज़ों को छुपा देती है? अपने स्रोत के बारे में पर्याप्त जानकारी इकट्ठा करें ताकि उन्हें एक लेबल या पहचान तक सीमित करने के बजाय उनके जटिल व्यक्तित्व को दिखाया जा सके।

- यदि आप व्यवसाय क्षेत्र पर एक समाचार रिपोर्ट या फीचर स्टोरी कर रहे हैं जिसमें LGBTQIA+ पेशेवर शामिल है, तो सवाल करें कि क्या उनकी क्वीयर पहचान वास्तव में रिपोर्ट के लिए ज़रूरी है? इसके अलावा, इस बात पर विचार करें कि क्या यह सार्वजनिक हित में है कि उनकी क्वीयर पहचान का खुलासा किया जाए?

    - उदाहरण के लिए, क्या किसी कम्पनी का विलय/अधिग्रहण या नियुक्ति/निष्कासित करने की रिपोर्ट में आपको किसी व्यक्ति की क्वीयर पहचान पर ध्यान देने की आवश्यकता है? क्या यह अजीब लगेगा यदि आप एक सिस जेंडर

विषमलैंगिक स्रोत की पहचान को भी ऐसे ही लिखते? यदि बाद वाले प्रश्न का जवाब हाँ है तो क्वीयर पेशेवर के साथ भी ऐसा न करें।

- LGBTQIA+ पेशेवरों से जुड़ी नकारात्मक समाचारों को कवर करते समय, फिर से विचार करें कि क्या उस व्यक्ति की क्वीयर पहचान किसी भी तरह से विषय से प्रासंगिक है या उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों से जुड़ी हुई है? (क्वीयर व्यक्तियों के ऊपर या उनके द्वारा किए गए यौन उत्पीड़न के मामलों में रिपोर्टिंग के बारे में अधिक जानकारी के लिए 'अपराध' अध्याय देखें)

- संक्षेप में, अगर किसी क्वीयर व्यक्ति की पहचान का रिपोर्ट में कोई महत्व नहीं है या रिपोर्ट मुख्य विषय से भटक जाती है तो उसे शामिल न करें।

- गोपनीय स्रोतों की रक्षा करना पत्रकारिता का मूल सिद्धांत है। ध्यान रखें अगर आप ऐसे LGBTQIA+ व्यक्ति की निजता की रक्षा करने में विफल रहते हैं जिन्होंने अपनी पहचान को सावर्जनिक नहीं किया है, तो उनका वर्तमान और भविष्य का रोजगार स्थायी रूप से खतरे में पड़ सकता है। जहाँ कानूनी या नैतिक रूप से आवश्यक हो, वहाँ गुमनामी बनाए रखने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं।

- व्यवसायिक सोशल मीडिया अकाउंट, व्यवसायिक ईमेल पते, या कार्यालय फ़ोन नंबरों पर अपने गोपनीय स्रोतों से बात न करें।

- सुनिश्चित करें कि अपने अज्ञात स्रोत की क्वीयर पहचान का जिक्र करने से अनजाने में वो उजागर न हो जाएँ। छोटी कम्पनी या संस्था के साथ काम करते समय यह एक बड़ा जोखिम है जहाँ लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं और अज्ञात स्रोत का अनुमान लगा सकते हैं।

- पहले से ही रणनीतियाँ बना लें ताकि आप और आपका स्रोत सुरक्षित रूप से मिल सकें।

- सुनिश्चित करें कि आपके गोपनीय स्रोत ने सब जानकारी और जोखिम समझ कर आपको बात करने की सहमति दी है, जैसे कि कम्पनी में संभावित संदेह का सामना करना, पूछताछ होना, पहचान ज़ाहिर हो जाना, बहिष्कृत किया जाना, कानूनी नोटिस भेजा जाना आदि। यह सब तब भी हो सकता है जब आपने उनकी पहचान किसी को नहीं बतायी हो।

- अपने स्रोत को 'ऑफ़ द रिकॉर्ड' टिप्पणियों और कथनों की सीमाएँ समझाएँ। आगे बढ़ने से पहले दोनों पक्षों को इन शर्तों पर सहमत होना चाहिए।

- यह ज़रूरी है कि आप कॉर्पोरेट, संस्थागत, या सरकार से जुड़े प्राइड आयोजनों को सावधानी और विश्लेषणात्मक सोच के साथ कवर करें। ऐसा न करने से एक रिपोर्ट जिसे सटीक, निष्पक्ष और अच्छे इरादे से लिखा जाना चाहिए, वह मात्र एक प्रेस विज्ञप्ति बन सकती है और इसमें वो लोग शामिल नहीं होंगे जो कि न सिर्फ़ अपनी क्वीयर पहचान बल्कि त्वचा के रंग, वर्ग, जाति, धर्म, विकलांगता आदि की वजह से भी हाशिए पर हैं। सिर्फ़ इसलिए कि वह अपने क्वीयर कर्मचारियों को मंच दे रहे हैं, कॉर्पोरेट जगत प्रशंसा के पात्र नहीं बन जाते। पत्रकारों को यह भी देखना चाहिए कि क्या उनकी नीतियां और उनको अमल में लाने की प्रक्रिया वास्तव में इन समावेशी मूल्यों पर खरी उतरती है या नहीं।

- जहाँ तक संभव हो, कॉर्पोरेट प्राइड या LGBTQIA+ आयोजन पर रिपोर्ट प्रकाशित करने से बचें, जब तक कि आपने कई हितधारकों से बात नहीं की हो, जिनमें कार्यक्रम के आयोजक, दर्शक, प्रतिभागी और बाकी लोग शामिल हों।

- रिपोर्ट में उन कर्मचारीयों को प्राथमिकता दें जिन्होंने कम्पनी की LGBTQIA+ विविधता, समानता और समावेशन नीतियों का अनुभव किया है। विशेषज्ञ टिप्पणियों को मुद्दे के सबसे करीबी लोगों की आवाज़ पर हावी न होने दें।

- LGBTQIA+ पेशेवरों से उनके निजी जीवन और उनके पार्ट्नर या परिवार के सदस्यों के बारे में पूछने से पहले सहमति प्राप्त करें। यह पुष्टि करें कि वे जो विवरण दे रहे हैं वह 'ऑफ़ द रिकॉर्ड' है या नहीं।

- यदि आपके स्रोत जैसे विषयों पर बात करते हैं जिनकी रिपोर्टिंग पर कानूनी प्रतिबंध लागू हो सकते हैं, जैसे व्यक्तिगत आघात, दुर्व्यवहार या घरेलू हिंसा, तो उनसे लिखित सहमति ले लें।

- LGBTQIA+ पेशेवर जो छात्र या नाबालिग हैं उन से बात करते समय सावधानी बरतें। उन्हें समाचारों में दिखाए जाने के जोखिमों के बारे में सूचित करें। 18 वर्ष से कम आयु के स्रोतों के लिए, माता-पिता या अभिभावक से लिखित अनुमति प्राप्त करें - लेकिन अपने स्रोत की पहचान को समाज में ज़ाहिर होने के जोखिम से भी सावधान रहें। किसी नाबालिग़ स्रोत की पहचान या तस्वीर/वीडियो प्रकाशित न करें।

- क्या आप और आपका स्रोत वायरल होने या काफ़ी ज़्यादा पाठकों/दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के जोखिमों से अवगत हैं? क्या आप दोनों ऑनलाइन रिपोर्ट को डिलीट किए बिना ऐसे घटनाक्रम का सामना करने के लिए तैयार हैं? सुनिश्चित करें कि उनके पेशेवर या निजी जीवन पर ध्यान खींचने से पहले आपके पास अपने स्रोत की पूरी समझ के साथ दी गयी सहमति हो।

- सुनिश्चित करें कि आपके LGBTQIA+ स्रोत की पहचान और व्यक्तिगत जीवन के मामले उस पेशेवर या व्यवसायिक पहलू पर हावी न हों जिसे आप कवर कर रहे हैं। (अपवाद: यदि आप एक व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल लिख रहे हैं और आपके स्रोत सहमति देते हैं और स्वेच्छा से व्यक्तिगत जानकारी साझा करते हैं, तो यह स्वीकार्य है)

- सुनिश्चित करें कि LGBTQIA+ पेशेवर के बारे में आपकी रिपोर्ट अनजाने में उनके परिवार के सदस्यों, दोस्तों, साथी कर्मचारियों, परिचितों, वर्तमान और भूतपूर्व साथी आदि की पहचान को सावर्जनिक न कर दे।

आस्था

इस अध्याय में हम बात करेंगे LGBTQIA+ व्यक्तियों से संबंधित आस्था और धार्मिक कट्टरता, LGBTQIA+ व्यक्तियों का उनके धर्म के साथ निजी संबंध, धार्मिक कथाओं के साथ जुड़ाव, उनके द्वारा प्रमुख रूप से पालन किए जाने वाले सांस्कृतिक आयोजन और प्रथाएं, धार्मिक LGBTQIA+ व्यक्तियों के कथन को शामिल करने की प्रक्रिया और सीमाएँ और धार्मिक बहुसंख्यकवाद के बारे में।

LGBTQIA+ मुद्दों के प्रति धर्म और धर्म से जुड़े लोगों के नज़रिए पर आलोचनात्मक या तार्किक ढंग से रिपोर्टिंग काफ़ी चुनौतीपूर्ण हो सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें उनकी सोच और उसके क्वीयर व्यक्तियों पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव को नज़रंदाज़ किए बिना विषयों और पाठकों की संवेदनशीलता को ध्यान में रखना होगा। धार्मिक संवेदनशीलता, धर्मनिरपेक्ष आदर्शों और धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का संतुलन LGBTQIA+ अधिकारों की मुहिम के साथ बनाए रखना एक मुश्किल काम हो सकता है।

जब आप LGBTQIA+ व्यक्तियों की आस्था और उनके अपने विश्वास से जुड़ने की प्रक्रिया पर रिपोर्टिंग करते हैं तो कभी कभी ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ सकता है जहाँ किसी व्यक्ति का धार्मिक विश्वास उनके जेंडर और यौनिक पहचान के खिलाफ हो। इस स्थिति में सावधानी बरतना और यह समझना आवश्यक है कि उस व्यक्ति के लिए धर्म का मतलब क्या है और उनकी व्यक्तिगत मान्यताएँ और प्राथमिकताएँ क्या हैं।

- किसी भी धार्मिक समुदाय के बारे में रिपोर्टिंग करते समय, यह ज़रूरी है कि उस आस्था से जुड़े लोगों का इंटर्व्यू किया जाए। यह भी बताएँ कि कैसे काफ़ी LGBTQIA+ व्यक्ति एक ही धर्म से जुड़े हैं, पर उनके विश्वास एक जैसे या अलग हो सकते हैं। पूरे समुदाय के लिए एक ही निष्कर्ष निकालना ग़लत है।
    - उदाहरण के लिए, क्वीयर व्यक्तियों से संबंधित किसी विशेष मुद्दे पर अदालत की सुनवाई के दौरान - जैसे की विवाह समानता का मुद्दा- कुछ धार्मिक समूह LGBTQIA+ समुदायों के खिलाफ या उनके पक्ष में बोल सकते हैं। ऐसी प्रतिक्रियाओं को कवर करते समय, विशेष रूप से विरोधी स्वरों को, उस विशेष धर्म के क्वीयर व्यक्तियों की विविध आवाज़ों को भी शामिल करना महत्वपूर्ण है। उस मुद्दे पर उनकी राय और धार्मिक समूह की खिलाफ़त

पर उनकी प्रतिक्रिया को रिपोर्ट करने से यह पता लगता है कि यह विषय कैसे धर्म के साथ उनके व्यक्तिगत रिश्ते को प्रभावित करता है (विशेषकर धार्मिक अल्पसंख्यकों के मामले में)।

- हालाँकि धार्मिक और अन्य आस्था समूहों पर रिपोर्टिंग करना महत्वपूर्ण है, जब आस्था की आड़ में बहुसंख्यकवाद का प्रचार होता है तो एक सीमा निर्धारित करना भी ज़रूरी है। यह सीमा बेहद संकीर्ण और संवेदनशील है पर आप की रिपोर्टिंग के लहजे से इसे साधने में मदद मिल सकती है।

    - उदाहरण के लिए, किसी विशेष LGBTQIA+ व्यक्ति/समूह की उनके धार्मिक समुदाय के भीतर अन्य व्यक्तियों/समूहों पर आलोचनात्मक टिप्पणियों की रिपोर्ट करते समय, आपको दोनों तरफ़ की राय को जगह देनी चाहिए। परंतु हर पक्ष की बाकी पहचानों और विशेषाधिकारों की स्थिति के प्रति भी सचेत रहना महत्वपूर्ण है, न कि दोनों पक्षों के विचारों को एक जैसा मूल्य देना।

- अधिकांश संगठित धर्मों, विशेष रूप से इब्राहीमी धर्म और कुछ पूर्वी एशियाई आस्था प्रणालियों, में ऐसी सामग्री वाले धर्मग्रंथ हैं जिनकी व्याख्या अक्सर LGBTQIA+ व्यक्तियों और उनके अधिकारों के विरोध में की जाती है। अक्सर, इन धर्मों के प्रतिनिधि दावा करते हैं कि LGBTQIA+ समुदायों का अस्तित्व उनके पवित्र विश्वास के विरुद्ध है। चाहे आप ऐसे किसी समूह के विरोध प्रदर्शन को कवर कर रहे हों या उनका इंटर्व्यू ले रहे हों, हमेशा उसी आस्था वाले LGBTQIA+ व्यक्तियों से भी बात करें और देखें कि कैसे उसी आस्था और उसके सिद्धांतों ने उन्हें सहारा दिया या उन्होंने कैसे उस धर्म को अपने हिसाब से समझा और अपनी क्वीयर पहचान को स्वीकार किया।

    - उदाहरण के लिए, कुछ साल पहले चेन्नई में एक प्राइड मार्च के दौरान, ईसाई संगठनों के एक समूह ने विरोध में एक रैली आयोजित की थी। कई पत्रकारों ने LGBTQIA+ व्यक्तियों से बात किए बिना, विरोध रैली को एक-तरफ़ा कवर किया। यदि संभव हो तो ऐसी रिपोर्टों में क्वीयर व्यक्तियों की राय को शामिल करें, विशेष रूप से समान आस्था वाले लोगों (इस उदाहरण में ईसाई क्वीयर व्यक्ति) की राय को।

- हाल के वर्षों में, आस्था-आधारित LGBTQIA+ समूहों के गठन में वृद्धि हुई है। कुछ मौजूदा क्वीयर समूहों ने भी विशेष आस्थाओं की ओर चोरी छुपे या स्पष्ट रूप से झुकना शुरू किया है। LGBTQIA+ व्यक्तियों द्वारा बनाए ऐसे संगठनों पर रिपोर्टिंग करते समय, उनका दृष्टिकोण जानें कि उन्हें इस तरह के समूह की आवश्यकता क्यों महसूस हुई और वे अन्य मौजूदा धार्मिक समूहों से कैसे अलग हैं।

- भारत के विभिन्न हिस्सों में क्वीयर व्यक्तियों से जुड़े कई सांस्कृतिक कार्यक्रम हैं जो स्थानीय लोक संस्कृतियों या आस्थाओं में निहित हैं, या संगठित धर्मों से जुड़े हुए हैं। ऐसे आयोजनों को LGBTQIA+ नज़रिए से कवर करना चाहिए, विशेष रूप से सांस्कृतिक संदर्भ पर ध्यान देते समय, और इस बारे में बात करते हुए कि यह आयोजन क्वीयर व्यक्तियों के जीवन में क्या महत्व रखता है। लेकिन अत्यधिक ख़ुशनुमा स्वरूप देने से सावधान रहें, और ऐसी कठिनाइयों पर भी ध्यान दें जिनका सामना क्वीयर व्यक्तियों को ऐसे उत्सवों का हिस्सा बनने के लिए करना पड़ता है। (अधिक जानकारी के लिए 'प्राइड और अन्य LGBTQIA+ आयोजन' अध्याय देखें)

    - उदाहरण के लिए, कूवागम, एक वार्षिक उत्सव है जो तमिलनाडु के कल्लाकुरिची जिले के कूथंडावर मंदिर में होता है, और इसे हर साल व्यापक मीडिया कवरेज मिलता है। क्वीयर व्यक्तियों से संबंधित ऐसे ही कई उत्सव और शोक समारोह आदि हैं जिन्हें कवर किया जा सकता है। हालाँकि, केवल उस आयोजन से जुड़ी सांस्कृतिक कथाओं पर

ध्यान देने के बजाय, क्वीयर प्रतिभागियों और उपस्थित लोगों पर ध्यान दें और देखें कि यह आयोजन उनके लिए क्या मायने रखता है।

- LGBTQIA+ व्यक्तियों के प्रति धार्मिक विश्वासों से प्रेरित किसी भी अपराध या हिंसा की घटना पर रिपोर्टिंग करते समय पूरे समुदाय और धर्म को ज़िम्मेवार न ठहराएँ। ऐसी रिपोर्ट में वे कठिनाइयाँ और आघात शामिल होने चाहिए जो LGBTQIA+ व्यक्तियों को ऐसी हिंसा के कारण झेलने पड़ते हैं। यदि आपकी ख़बर किसी विशेष धर्म के व्यक्तियों या समूहों द्वारा क्वीयर व्यक्तियों के खिलाफ बार-बार होने वाली हिंसा के बारे में है, तो विषय को संवेदनशीलता से संभालिए - विविध आवाज़ों को शामिल करिए, उन घटनाओं और दृष्टिकोणों के मूल कारणों को समझने का प्रयास कीजिए, और पूरे समुदाय या धर्म को किसी एक रूप में चित्रित करने से बचें।
    - उदाहरण के लिए, धार्मिक पंथों का नेतृत्व करने वाले स्वयंभू 'गॉड मैन'/'गॉड वूमेन' पर अक्सर यौन उत्पीड़न सहित विभिन्न अपराधों का आरोप लगाया जाता है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कथित अपराधी या पीड़ित का यौन रुझान इस तरह के हमले का कारण नहीं है। (अधिक जानकारी के लिए 'अपराध' अध्याय देखें) यह भी याद रखें कि अपराधी उस पूरे धार्मिक समुदाय या आस्था का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जिसे मानने का वे दावा करते हैं।

श्रेय

मीडिया रेफ़्रेन्स गाइड

- **सी मौली** (he /him) - सह-संस्थापक, क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स
- **रागमालिका कार्तिकेयन** (he/she) - वरिष्ठ लीड - श्रोता राजस्व और प्रयोग, द न्यूज़ मिनट
- **गिरीश** (he/him) - लेखक और कवि। संपादक, क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स
- **सेंथिल** (he/him) - कार्यक्रम निदेशक, क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स
- **वाई** (they/them) - स्वतंत्र कलाकार
- **अज़ीफ़ा फातिमा** (she/her) - वरिष्ठ रिपोर्टर, द न्यूज़ मिनट
- **शिवानी कावा** (she/her) - रिपोर्टर, द न्यूज़ मिनट
- **लक्ष्मी प्रिया एम** (she/her) - वरिष्ठ उप-संपादक, द न्यूज़ मिनट
- **जाहन्वी** (she/her) - सहायक समाचार संपादक, द न्यूज़ मिनट
- **रंजिता गुणसेकरन** (she/her) - असिस्टेंट रेज़िडेंट एडिटर, द न्यू इंडियन एक्सप्रेस
- **नारायणी सुब्रमण्यम** (she/her) - लेखिका और समुद्री शोधकर्ता
- **सायंतन दत्ता** (they/them) - विज्ञान पत्रकार
- **सहाना वेणुगोपाल** (she/ze)
- **अंकुर पालीवाल** (he/they) - स्वतंत्र पत्रकार और संस्थापक, क्वीयरबीट
- **रागी गुप्ता** (they/them) - क्रिएटिव कंटेंट मैनेजमेंट के प्रमुख, पिक्सस्टोरी
- **हिमांशु आर्य** (he/they)- पत्रकार

- **के सत्य कीर्ति** (he/him) - फोटो जर्नलिस्ट
- **विजयता लालवानी** (she/they) - स्वतंत्र पत्रकार
- **चेतना आनंद** (she/her)
- **मनु मुद्ग़िल** (he/they) - स्वतंत्र पत्रकार
- **वैभव शर्मा** (he/him)- स्वतंत्र अनुवादक और सम्पादक

शब्दावली

इस शब्दावली का एक संस्करण क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स, द न्यूज़ मिनट और कुछ और व्यक्तियों के योगदान से जनवरी 2022 में अंग्रेजी और तमिल मीडिया के लिए प्रकाशित हुआ और मद्रास उच्च न्यायालय को पेश किया गया। अपने फरवरी 2022 के आदेश में मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एन आनंद वेंकटेश ने तमिलनाडु सरकार को इसे अपनी आधिकारिक शब्दावली में ढालने को कहा। इसका हिंदी रूपांतरण क्वीयरबीट ने किया है।

- **मनु मुद्ग़िल** (he/they) - स्वतंत्र पत्रकार
- **अंकुर पालीवाल** (he/they) - स्वतंत्र पत्रकार और संस्थापक, क्वीयरबीट
- **वैभव शर्मा** (he/him)- स्वतंत्र अनुवादक और सम्पादक

कबीर मान, निधि सिंह, नासिरुद्दीन, सौरव वर्मा, चंद्रिका उदयशंकर, कार्तिकेय, किंशुक गुप्ता, धर्मेश चौबे, ज़यान, शशांक, याशिका, यादवेंद्र, रेशमा, इक़बाल, जमाल, पुष्पा, धनंजय चौहान, प्रतीक श्रीवास्तव और अन्य क्वीयर कार्यकर्ताओं और भाषा विशेषज्ञों ने भी भरपूर सहयोग दिया।

इनक्लूसिव न्यूज़रूम्स LGBTQIA+ मीडिया रेफरेंस गाइड, द न्यूज़ मिनट, क्वीयर चेन्नई क्रॉनिकल्स और क्वीयरबीट का एक संयुक्त प्रयास है जिसे गूगल न्यूज़ इनिशिएटिव का समर्थन प्राप्त है । यह गाइड उन पत्रकारों को LGBTQIA+ व्यक्तियों, समुदायों और मुद्दों पर जानकारी प्रदान करती है जो इस बारे में संवेदनशील रूप से रिपोर्ट करना चाहते हैं। आप अपनी कहानियों में किसी ट्रांसजेंडर व्यक्ति का ज़िक्र कैसे कर सकते हैं? 'ज़ाहिर होने' का मतलब क्या है? एक समलैंगिक महिला जो राजनीति में प्रवेश कर रही है उसके बारे में कैसे लिखना चाहिए? गाइड ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर देती है जो पत्रकार पूछ सकते हैं।

राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, अपराध, खेल और विज्ञान एवं टेक्नॉलजी सहित विभिन्न विषयों पर केंद्रित 20 अध्यायों से सुसज्जित यह गाइड क्वीयर पत्रकारों, लेखकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा लिखी गयी है। यह न केवल 'क्या' का जवाब देती है बल्कि 'क्यों' को भी विस्तृत रूप से पेश करती है ।

By

குயர் சென்னை க்ரோனிக்கிள்ஸ்
Queer Chennai Chronicles

The NEWS Minute

queerbeat®

Supported by

Google News Initiative

www.news-inq.com